YouTube channel KR studypoint 99

Completely Based on the BLUEPRINT & BOARD MODEL PAPER-2024

संजीव®

डेस्क वर्क

(वर्क बुक)

प्रोजेक्ट कार्य सहित

FREE
इस डेस्क वर्क के साथ
₹ 20 मूल्य की
प्रोजेक्ट कार्य पुस्तिका फ्री

बोर्ड मॉडल पेपर-[illegible] हल सहित

अनिवार्य हिन्दी

कक्षा 12

संजीव प्रकाशन, जयपुर

YouTube channel RK study point 99

2024 की परीक्षा के लिए बोर्ड द्वारा 20 दिसम्बर, 2023 को जारी मॉडल प्रश्न-पत्र एवं ब्लू प्रिंट पर आधारित

संजीव®

बोर्ड की नवीनतम प्रोजेक्ट सूची के अनुसार प्रोजेक्ट कार्य सहित

डेस्क वर्क

अनिवार्य हिन्दी कक्षा 12

प्रमुख विशेषताएँ

- 2024 की परीक्षा के लिए बोर्ड द्वारा Website पर जारी मॉडल प्रश्न-पत्र इस डेस्क वर्क में मॉडल प्रश्न-पत्र-1 में हल सहित दिया गया है।
- शेष अभ्यासार्थ मॉडल पेपर बोर्ड द्वारा जारी मॉडल प्रश्न-पत्र एवं ब्लू प्रिंट पर आधारित हैं।
- सभी अभ्यासार्थ मॉडल पेपर्स की सम्पूर्ण उत्तर-पुस्तिका इस डेस्क वर्क के साथ निःशुल्क उपलब्ध।
- इस डेस्क वर्क में बोर्ड द्वारा 20 दिसम्बर, 2023 को जारी नवीनतम प्रोजेक्ट सूची के अनुसार प्रोजेक्ट कार्य शामिल किये गये हैं।
- प्रोजेक्ट कार्य पुस्तिका भी इस डेस्क वर्क के साथ निःशुल्क उपलब्ध है।

नाम ....

कक्षा .... सेक्शन ....

2024

संजीव प्रकाशन, जयपुर

मूल्य : ₹ 200.00

YouTube channel RK study point 99

अबकी बार 90 पार मिशन

free education free notes free important question free test series - rk study point 99

join WhatsApp group -9352726467

boys वह girls group अलग से है

rk study point 99

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न-पत्र की योजना

कक्षा : 12

विषय : अनिवार्य हिन्दी

अवधि : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

1. उद्देश्य हेतु अंकभार–

क्र. सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	19	23.75
2.	अवबोध	23	28.75
3.	ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति	22	27.50
4.	कौशल/मौलिकता	16	20
	योग	80	100

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार–

क्र. सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत (अंकों का)	प्रतिशत (प्रश्नों का)	संभावित समय
1.	वस्तुनिष्ठ	12	1	12	15	26.67	20
2.	रिक्त स्थान	6	1	6	7.50	13.33	8
3.	अतिलघूत्तरात्मक	12	1	12	15	26.67	20
4.	लघूत्तरात्मक	5	2	10	12.50	11.11	25
5.	दीर्घउत्तरीय	5	3	15	18.75	11.11	70
		1	4	4	5	2.22	
6.	निबन्धात्मक	2	6	12	15	4.4	52
		1	4	4	5	2.2	
		1	5	5	6.25	2.2	
	योग	45		80	100	100	195 मिनट

विकल्प योजना : खण्ड 'स' एवं 'द' में हैं

3. विषय-वस्तु का अंकभार–

क्र. सं.	विषय-वस्तु	अंकभार	प्रतिशत
1.	अपठित	12	30
2.	रचनात्मक लेखन (पत्र व निबन्ध)	9	11.25
3.	व्यावहारिक व्याकरण	8	10.00
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	7	8.75
5.	आरोह	32	40.00
6.	वितान	12	15.00
	योग	80	100

YouTube channel RK study point 99

कक्षा-12

ब्ल्यू प्रिन्ट

विषय : अनिवार्य हिन्दी

पूर्णांक : 80

क्र. सं.	उद्देश्य / इकाई/उप इकाई	ज्ञान						अवबोध						ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति						कौशल/मौलिकता						योग
		वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघूत्तरात्मक	लघूत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबंधात्मक	वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघूत्तरात्मक	लघूत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबंधात्मक	वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघूत्तरात्मक	लघूत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबंधात्मक	वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघूत्तरात्मक	लघूत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबंधात्मक	
1.	अपठित			1(6)						1(5)						1(1)										12(12)
2.	रचनात्मक लेखन (पत्र व निबन्ध)																		4(1)*						5(1)*	9(2)
3.	व्यावहारिक व्याकरण	1(2)	1(1)						1(4)						1(1)											8(8)
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	1(1)						1(1)									2(1)	3(1)								7(4)
5.	आरोह	1(3)					4(-)	1(3)			2(1)	3(1)					2(1)		4(1)*					3(1)*	8(2)*	32(13)
6.	वितान	1(2)									2(1)	3(1)					2(1)	3(1)								12(6)
	योग	8(8)	1(1)	6(6)			4(-)	4(4)	4(4)	5(5)	4(2)	6(2)			1(1)	1(1)	6(3)	6(2)	8(2)					3(1)	13(3)	80(45)
	सर्वयोग	19(15)						23(17)						22(9)						16(4)						

विकल्पों की योजना–खण्ड 'स' एवं 'द' में प्रत्येक में एक आंतरिक विकल्प है। **नोट**–कोष्ठक के बाहर की संख्या 'अंकों' की तथा अंदर की संख्या 'प्रश्नों' की द्योतक है।

YouTube channel RK study point 90

विद्यार्थियों एवं गुरुजनों को नवीन पेपर पैटर्न की जानकारी देने हेतु बोर्ड द्वारा मॉडल प्रश्न-पत्र जारी किये गये हैं। विद्यार्थियों की सुविधा हेतु इस मॉडल प्रश्न-पत्र को मॉडल पेपर-1 में हल सहित दिया जा रहा है तथा शेष अभ्यासार्थ मॉडल पेपर पूर्णतः बोर्ड द्वारा जारी मॉडल प्रश्न-पत्र एवं ब्ल्यू प्रिंट पर आधारित हैं।

बोर्ड द्वारा जारी मॉडल प्रश्न-पत्र (हल सहित)

मॉडल पेपर-1

उच्च माध्यमिक परीक्षा-कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] **[पूर्णांक : 80**

Youtube channel RK study point 99

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उनके उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी पुस्तिका में लिखिए।

(i) जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं- 1

(अ) कपास (ब) पेड़
(स) नींद (द) रोना

(ii) कविता एक उड़ान है किसके बहाने? 1

(अ) हवा (ब) चिड़िया
(स) हवाई जहाज (द) पतंग

(iii) 'छोटा मेरा खेत चौकोना' लेखक ने किसे कहा है? 1

(अ) खेत को (ब) किताब को
(स) कागज के पन्ने को (द) किसी को भी नहीं

(iv) 'पहलवान की ढोलक' अध्याय के लेखक कौन हैं? 1

(अ) फणीश्वर नाथ रेणु (ब) धर्मवीर भारती
(स) प्रेमचन्द (द) महादेवी वर्मा

(v) मनुष्यों की क्षमता किस बात पर निर्भर रहती है? 1

(अ) शारीरिक वंश परम्परा (ब) सामाजिक उत्तराधिकार
(स) मनुष्य के अपने प्रयास (द) उपर्युक्त सभी

(vi) शिरीष के फूल को किसके समान बताया गया है? 1

(अ) केसर (ब) किसान
(स) अवधूत (द) अमलतास

(vii) हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप से बोलने और लिखने सम्बन्धी नियमों की जानकारी देने वाला शास्त्र कहलाता है— 1

(अ) व्याकरण शास्त्र (ब) रसायन शास्त्र
(स) पाक शास्त्र (द) राजनीति शास्त्र

(viii) Manifesto (मैनीफेस्टो) शब्द का सही अर्थ है— 1

(अ) घोषणा पत्र (ब) समाचार पत्र
(स) निमन्त्रण पत्र (द) त्याग पत्र

(ix) आधुनिक संचार माध्यमों में सबसे पुराना है? 1

(अ) टेलिविजन (ब) रेडियो
(स) प्रिंट (द) इन्टरनेट

(x) किसी खबर का घटना स्थल से सीधा प्रसारण क्या कहलाता है— 1

(अ) लाइव (ब) फोन-इन
(स) बाइट (द) नेट

(xi) मन्त्री नामक अध्यापक कक्षा में प्रायः किसका उपयोग नहीं करते थे? 1

(अ) चॉक (ब) डस्टर
(स) घड़ी (द) छड़ी

(xii) मुअन-जो-दड़ो किस काल के शहरों में सबसे बड़ा है? 1

(अ) पाषाण काल (ब) ताम्र काल
(स) लौह काल (द) पुरा पाषाण काल

उत्तर—

(i) (अ)	(ii) (ब)	(iii) (स)	(iv) (अ)	(v) (द)	(vi) (स)	(vii) (अ)
(viii) (अ)	(ix) (स)	(x) (अ)	(xi) (द)	(xii) (ब)		

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) एक सीमित क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा के स्थानीय रूप को .... कहते हैं। 1

(ii) निविदा के लिये सही अंग्रेजी शब्द .... है। 1

(iii) 'सैनिकों ने कमर कस ली'। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1

(iv) जब किसी शब्द का अर्थ न तो अभिधा से प्रकट होता है न ही लक्षणा से, वहाँ .... शब्द शक्ति होती है। 1

(v) 'चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में' पंक्ति में .... अलंकार है। 1

(vi) जब कोई बात बहुत बढ़ाचढ़ाकर अथवा लोक सीमा का उल्लंघन करके कही जाये, वहाँ .... अलंकार होता है। 1

उत्तर—(i) बोली (उप-भाषा) (ii) tender (iii) लक्षणा (iv) व्यंजना (v) अनुप्रास (vi) अतिशयोक्ति

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

करुणा भी भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों में से एक है। हम एक-दूसरे के सुख-दु:ख में सहयोग एवं सद्भाव रखते रहे हैं। स्त्री का सम्मान, संकट के समय साहस न खोना, उदारता तथा अनेक विचारों के आदान-प्रदान के साथ हमारी समन्वयात्मक दृष्टि आदि ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें हम दैनिक व्यवहार में अपनाते हैं। हमारी संस्कृति में देश की सीमाओं को केवल भू-भाग ही नहीं माना बल्कि अपनी माता से भी बढ़कर माना गया है—"माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या:" अर्थात् भूमि माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। हमारे वेद, पुराण, शास्त्र धर्मग्रन्थ भी संस्कृति के पोषक और प्रसारक रहे हैं, जिनमें जीवन की चेतना के विभिन्न स्रोत समाहित हैं। हमारे साहित्य में भारतीय जीवन दर्शन के स्रोत समाहित हैं।

YouTube channel RK Study point 99

(i) भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों में से एक तत्त्व कौनसा है? 1

(ii) 'सुत' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिये। 1

(iii) हमारी संस्कृति में देश की सीमाओं को किसके समान बताया गया है? 1

(iv) संस्कृति के किन तत्त्वों को हम दैनिक जीवन में अपनाते हैं? 1

(v) जीवन की चेतना के विभिन्न स्रोत किनमें समाहित हैं? 1

(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिये। 1

उत्तर–(i) भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों में एक तत्त्व 'करुणा' है।

(ii) मूल शब्द का पर्यायवाची शब्द है—'पुत्र'।

(iii) संस्कृति में देश की सीमाओं को अपनी माता के समान बताया गया है।

(iv) संस्कृति के तत्त्व स्त्री का सम्मान, संकट में साहस न खोना, उदारता तथा विचारों का आदान-प्रदान हम दैनिक जीवन में अपनाते हैं।

(v) जीवन की चेतना के विभिन्न स्रोत वेद, पुराण, शास्त्र एवं धर्मग्रन्थ में समाहित हैं।

(vi) 'भारतीय संस्कृति' या 'भारतीय संस्कृति का महत्त्व'।

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिये–

मिला खोजती थी जिसको हे बचपन ठगा दिया तूने।
अरे जवानी के फंदे में मुझको फंसा दिया तूने।
माना, मैंने, युवाकाल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है।
किन्तु यह झंझट है भारी, युद्ध क्षेत्र संसार बना।
चिन्ता के चक्कर में पड़कर, जीवन भी है भार बना।
आजा बचपन एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली यह अपनी प्राकृत विश्रांति।

(i) लेखक को किसने ठगा है? 1

(ii) लेखक के लिए संसार कैसा बन गया है? 1

(iii) युवाकाल की कौनसी विशेषता लेखक को मोहित करती है? 1

(iv) 'अरे जवानी के फंदे में मुझको फंसा दिया तूने' लेखक को जवानी फन्दे के समान क्यों लगती है? 1

(v) लेखक बचपन को पुनः क्यों बुलाना चाहता है? 1

(vi) बचपन से किस विश्रांति की माँग लेखक कर रहा है? 1

उत्तर–(i) लेखक को बचपन ने ठगा है। (ii) लेखक के लिए संसार युद्ध क्षेत्र जैसा बन गया है।

(iii) लेखक को युवाकाल की आकांक्षाएँ, पुरुषार्थ एवं ज्ञान का उदय मोहित करती हैं।

(iv) क्योंकि युवाकाल (जवानी) का जीवन अत्यन्त विचित्र है।

(v) लेखक बचपन को पुनः निर्मल शांति प्राप्त करने के लिए बुलाना चाहता है।

(vi) बचपन से अपनी व्याकुलता मिटाने वाली प्राकृत विश्रांति की लेखक माँग कर रहा है।

खण्ड–'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए–

प्रश्न 5. टी.वी. समाचार में नेट साउण्ड या प्राकृतिक आवाज किसे कहते हैं? 2

उत्तर–टी.वी. समाचार में सिर्फ वाइट या वॉयस ओवर नहीं होते और भी ध्वनियाँ होती हैं। उन ध्वनियों से भी खबर बनती हैं या उसका मिजाज बनता है। इसलिए किसी खबर का वॉयस ओवर लिखते हुए उसमें शॉट्स के मुताबिक ध्वनियों के लिए गुंजाइश छोड़ दी जाती है। टी.वी. में ऐसी ध्वनियों को नेट साउंड या प्राकृतिक आवाज कहते हैं।

प्रश्न 6. कैमरे में बंद अपाहिज कविता का मूल भाव लिखिये। 2

उत्तर–इस कविता में कवि ने करुणा और सहानुभूति जगाने के उद्देश्य से प्रसारित मीडिया के कार्यक्रमों में

youtube channel kk study point 99

निहित क्रूरता तथा शोषण को व्यक्त किया है। मीडिया माध्यम की ऐसी व्यावसायिकता एवं संवेदनहीनता पर आक्षेप किया गया है।

प्रश्न 7. भक्तिन के किन दुर्गुणों के बारे में लेखिका ने अध्याय में बताया है? 2

उत्तर–लेखिका ने भक्तिन के दुर्गुणों के बारे में बताया है कि भक्तिन सत्यवादी हरिशचन्द्र के समान सत्यवादी नहीं थी। वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये मटकी में छिपाकर रख देती थी। वह सभी बातों और कामों को अपनी सुविधानुसार ढाल लेती हैं और स्वयं रंचमात्र भी न बदलकर शास्त्रीय बातों की व्याख्या अपने अनुसार ही करती थी।

प्रश्न 8. यशोधर बाबू के लिये भूषण ऊनी ड्रेसिंग गाउन क्यों लाया था? 2

उत्तर–यशोधर बाबू के लिए उनका बेटा भूषण सिल्वर वेडिंग पर ऊनी ड्रेसिंग गाऊन उपहारस्वरूप इसलिए लाया कि वे रोजाना सवेरे दूध लेने जाते हैं तो वे फटा हुआ पुलोवर पहन कर जाते हैं, जो उन्हें बहुत ही बुरा लगता है। अतः वे ऊनी ड्रेसिंग गाउन पहनकर दूध लेने जाया करे।

प्रश्न 9. कवि भी अपने जैसा हाड़ माँस का मनुष्य हो सकता है। आनंदा को इसका भान कैसे हुआ? 2

उत्तर–मराठी-मास्टर सौंदलगेकर स्वयं कविता करते। लेखक उनके घर जाता रहता था। वे कवियों के चरित्र और उनके संस्मरण लेखक को बताया करते थे। इस कारण ये कवि लोग लेखक को 'आदमी' ही लगने लगे थे इसलिए लेखक को यह विश्वास हुआ कि कवि भी अपने जैसा ही एक हाड़-माँस का, क्रोध-लोभ का मनुष्य ही होता है। लेखक को भी लगा कि मैं भी कविता कर सकता हूँ।

खण्ड–'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा प्रश्न 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. 'क्रान्ति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है।' 'बादल-राग' कविता के आधार पर बताइये।

अथवा 3

'' 'उषा' कविता में कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है।'' कथन के समर्थन में सोदाहरण तर्क दीजिये।

उत्तर–'बादल राग' कविता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की क्रांतिकारी भावों से पूरित कविता है। इसमें कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक माना है। कवि ने शोषित वर्ग के हित में बादलों का आह्वान किया है। क्रांति के प्रतीक बादलों की गर्जना सुनकर पूँजीवादी वर्ग भयभीत हो जाता है जबकि कृषक-वर्ग आशा भरे नेत्रों से देखता है। अतः समाज में शोषितों को उनका अधिकार दिलाने हेतु क्रांति की आवश्यकता है। शोषकों के प्रति व्यंजनापूर्ण भावों की अभिव्यक्ति कर आर्थिक विषमता मिटाने पर जोर दिया है। अतः यही कहा जा सकता है कि क्रान्ति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है।

अथवा

'उषा' शीर्षक कविता में कवि ने सूर्योदय पूर्व आकाशीय दृश्यों का आधुनिक उपमानों से चित्रण किया है। भोर से पहले आकाश का रंग नीला शंख जैसा, राख से लीपा हुआ गीला चौका, कुछ देर बाद सूरज की लालिमा उसमें मिल जाने से काली-स्लेट पर लाल खड़िया तथा कुछ देर बाद सूरज के प्रकट प्रकाश की सुन्दरी की झिल-मिल गौर-देह आदि जैसे नवीन उपमानों का प्रयोग कर कविता में कवि ने प्रकृति की गतिशीलता को अपने शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है।

प्रश्न 11. 'यह भी सच है कि यथा प्रजा तथा राजा' जीजी का यह कथन वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में कितना सटीक है? इस पर अपने विचार लिखिये। 3

अथवा

श्रम विभाजन के दृष्टिकोण से अपनाई गई जाति प्रथा पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर–'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक की जीजी का यह कथन 'यथा प्रजा तथा राजा' वर्तमान

YouTube channel RK Study point 99

राजनीतिक परिस्थितियों में सटीक है कि आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् भी हम आज देश के लिए क्या करते हैं। माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी है पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटकारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग बन रहें। इसी समय राजनीति में भी भ्रष्टाचार कूट-कूट कर भरा हुआ है अतः कहा जा सकता है कि यथा प्रजा तथा राजा।

अथवा

भारतीय सभ्य समाज में श्रम विभाजन जाति प्रथा के आधार पर होता है। यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करता अपितु विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच करार देती है। क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए आवश्यक है। जाति प्रथा इसके विपरीत दूषित सिद्धान्त है। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि माता-पिता द्वारा सामाजिक स्तर के अनुसार पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। जिसमें मनुष्य की रुचि एवं स्वाभाविकता का कोई महत्त्व नहीं है।

प्रश्न 12. "नगर नियोजन मुअन-जो-दड़ो की अनूठी मिसाल है।" वर्तमान समय के नगरीकरण से सम्बन्ध स्थापित कीजिए। 3

अथवा

"दादा की समझ में गुड़ ज्यादा निकालने की अपेक्षा भाव अधिक मिलना चाहिये।" 'जूझ' अध्याय का यह कथन वर्तमान समाज की प्रतिस्पर्द्धा तथा धन लोलुपता की प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है। कथन के सन्दर्भ में अपने विचार लिखिये।

उत्तर–नगर नियोजन मुअन-जो-दड़ो की अनूठी मिसाल है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि हम बड़े चबूतरे से नीचे की तरफ देखते हुए सहज ही भाँप सकते हैं यहाँ कि इमारतें चाहे खण्डहरों में बदल चुकी हैं किन्तु 'शहर' की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिए ये खण्डहर काफी हैं। यहाँ की कमोबेश सारी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी। आज के वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण जयपुर शहर की पुरानी बसावट एवं चण्डीगढ़ है। आज की सेक्टर मार्का कॉलोनियों में हमें आड़ा-सीधा 'नियोजन' बहुत मिलता है। लेकिन वह रहन-सहन को नीरस बनाता है। शहरों में नियोजन के नाम पर भी हमें अराजकता ज्यादा हाथ लगती है।

अथवा

सारे गाँव भर में लेखक के दादा का कोल्हू सबसे पहले इसलिए शुरू होता था कि उसके पिता की यह मान्यता थी कि यदि हम सबसे पहले कोल्हू चलायेंगे तो उनको ईख की अच्छी-खासी कीमत मिल जायेगी। क्योंकि समय से पहले बाजार में उनका गुड़ आयेगा तो सारा गुड़ बिक भी जायेगा और ऊँचे दामों में बिकेगा। इसी प्रकार वर्तमान समाज की प्रतिस्पर्द्धा तथा धनलोलुपता की प्रवृत्ति से प्रेरित होकर बेमौसम में फल व सब्जी उगाकर, उन्हें भाव बढ़ाकर बेचते हुए लालची प्रवृत्ति को बढ़ाते हैं।

प्रश्न 13. 'जिन लोगों के बाल-बच्चे नहीं होते उनकी मौत जो हुआ होगा से हो जाती है।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? 3

अथवा

'सिंधु सभ्यता साधन सम्पन्न थी, उसमें भव्यता का आडम्बर नहीं था' कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर–'सिल्वर वेडिंग' पाठ में यशोधर बाबू के पथप्रदर्शक एवं अधीनस्थों के हमदर्द किशनदा कुँवारे थे। उनके बाल-बच्चे नहीं थे। उनके रिटायरमेंट के बाद समय कैसे गुजरे, उन्होंने वहाँ घर भी नहीं बनवाया। इसलिए गाँव चले गये वहाँ कुछ समय पश्चात् उनकी मृत्यु हो गई है। उसी प्रकार जिस किसी के बाल-बच्चे नहीं होते हैं, उनकी वृद्धावस्था एवं मृत्यु बड़ी दुःखदायी होती है। अतः जिनके सुयोग्य बाल-बच्चे होते हैं तो वृद्धावस्था आनन्दपूर्वक व्यतीत होती है एवं मृत्यु भी निश्चिन्तता से होती है।

Youtube channel RK study point 99

अथवा

पुरातत्त्वविदों के द्वारा मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाई करवाने से जो साक्ष्य मिले हैं, उनका उल्लेख करते हुए लेखक बताता है कि सिन्धु सभ्यता साधन-सम्पन्न थी। उसमें नगर-नियोजन सुन्दर था, पानी की निकासी की सुव्यवस्था थी। सिन्धु घाटी के लोग ताँबे और कांस्य के बर्तन बनाते थे।

इस प्रकार सिन्धु घाटी की सभ्यता साधनों और व्यवस्थाओं से सम्पन्न तथा समृद्ध थी, परन्तु उसमें भव्यता का आडम्बर नहीं था। इस कारण वहाँ पर भव्य प्रासाद और मन्दिर के अवशेष नहीं मिलते हैं। राजाओं और महन्तों की समाधियाँ, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि भी नहीं मिलते हैं। राजा का मुकुट एकदम छोटे आकार का तथा नाव भी एकदम छोटी मिली है। उनके औजार भी छोटे ही मिले हैं। इस प्रकार सिन्धु-सभ्यता साधन सम्पन्न थी। वहाँ पर दूसरी सभ्यताओं की तरह प्रभुत्व या दिखावे का आडम्बर नहीं था।

प्रश्न 14. फीचर लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये? **3**

अथवा

सार्थक आलेख के क्या गुण हैं?

उत्तर–किसी घटना की सत्यता या तथ्यता फ़ीचर का मुख्य तत्त्व होता है। एक अच्छे फ़ीचर को किसी सत्यता या तथ्यता पर आधारित होना चाहिए। फ़ीचर का विषय समसामयिक, रोचक, ज्ञानवर्धक, उत्तेजक और परिवर्तन सूचक होना चाहिये। फीचर को शुरू से लेकर अंत तक मनोरंजक शैली में लिखा जाना चाहिये। फीचर को किसी विषय से सम्बन्धित लेखक के निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति होनी चाहिये। फ़ीचर लेखक किसी घटना की सत्यता या तथ्यता को अपनी कल्पना का पुट देकर फ़ीचर में तब्दील करता है। फ़ीचर को सीधा सपाट न होकर चित्रात्मक होना चाहिये। इसकी भाषा सरल, सहज और स्पष्ट होने के साथ-साथ कलात्मक और बिम्बात्मक होनी चाहिये।

अथवा

सार्थक आलेख के निम्न गुण हैं—(1) आलेख का आकार संक्षिप्त होना चाहिए। (2) आलेख में विचारों या तथ्यों की स्पष्टता होनी चाहिए। (3) हर विचार या तथ्य को क्रम से रखना चाहिए। (4) विषय में क्या, क्यों, कहाँ और कैसे, के प्रश्नों का समाधान होना चाहिए। (5) आलेख की भाषा सरल, सुगम और प्रभावी होनी चाहिए। (6) किसी बात का अनावश्यक दुहराव नहीं होना चाहिए। (7) लेखक को चाहिए कि वह प्रस्तुति की नवीनता बनाए रखते हुए भी उसमें निजी विचार या भाव न आने दे। वह केवल तथ्यों को बोलने दे। (8) आलेख की शैली विवेचनात्मक और विश्लेषण दोनों प्रकार की हो सकती है। (9) प्रायः आलेख ज्वलन्त मुद्दों, समस्याओं, अवसरों तथा चरित्रों पर लिखे जाते हैं। (10) आलेख में जिज्ञासाशीलता होनी चाहिए।

प्रश्न 15. तुलसीदास अथवा हजारी प्रसाद द्विवेदी का परिचय दीजिये। **4**

उत्तर–गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ। बचपन में ही माता-पिता के वियोग के कारण असह्य दुःख सहन करना पड़ा। गुरु नरहरिदास की कृपा एवं शिक्षा से राम-भक्ति का मार्ग प्रदीप्त हुआ। पत्नी रत्नावली की फटकार से संसार त्याग कर विरक्त भाव से रामभक्ति में लीन हो गए। विरक्तता जीवन जीते हुए काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थों का भ्रमण किया। सन् 1623 में काशी में इनका निधन हुआ। 'रामचरित मानस', 'कवितावली', 'रामललानहछू', 'गीतावली', 'दोहावली', 'विनय-पत्रिका', 'रामाज्ञा-प्रश्न', 'कृष्ण-गीतावली', 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल', 'हनुमान बाहुक' और 'वैराग्य संदीपनी' इनकी काव्य-कृतियाँ हैं। 'रामचरित मानस' कालजयी कृति तथा भारतीय संस्कृति का आधार-स्तम्भ ग्रंथ है।

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के एक गाँव छपरा में 1907 में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त कर शान्ति निकेतन में हिन्दी भवन के निदेशक रहे। अनेक स्थानों पर हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। ये कई भाषाओं के ज्ञाता थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ अशोक के फूल, कुटज, विचार-प्रवाह, आलोकपर्व (निबंध-संग्रह); बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा (उपन्यास); हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य की भूमिका (आलोचना-ग्रंथ) इत्यादि हैं। इनकी सांस्कृतिक दृष्टि प्रभावशाली एवं मूल चेतना विराट मानवतावाद है। इन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' प्राप्त हुआ। साहित्य रचना करते हुए इनका निधन 1979 में दिल्ली में हुआ।

youtube channel RK study point 99

खण्ड-'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिये। 6

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना।
नादान वही है, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना।
मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

अथवा

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए
आँगन में ठुमक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई, चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है।

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि अपने हृदय की अवस्थाएँ एवं संसार के व्यवहार पर अपनी भावनाएँ प्रकट कर रहे हैं कि कवि के हृदय के सत्य को किसी ने भी जानने की कोशिश नहीं की।

व्याख्या–कवि हरिवंश राय 'बच्चन' अपने सम्बन्ध में कहते हैं कि मैंने सारे उपाय, सारे प्रयत्न करके देख लिये लेकिन किसी ने भी मेरे हृदय के सत्य को जानने की कोशिश नहीं की। कोई भी मेरे इस जीवन-सत्य को कोई नहीं जान पाया। इस तरह जिसे भी देखो वही नादानी कर रहा है। इस संसार में जिसे जहाँ पर भी धन, वैभव और भोग-सामग्री मिल जाती है, वह वहीं पर दाना चुगने लगता है, अर्थात् स्वार्थ पूरा करने लगता है। परन्तु कवि की दृष्टि में ऐसे लोग मूर्ख होते हैं, क्योंकि वे जान-बूझकर सांसारिक लाभ-मोह के चक्कर में उलझे रहते हैं। मैं संसार की इस नासमझी को समझ गया हूँ। इसीलिए मैं सांसारिकता का पाठ सीख रहा हूँ और सीखे हुए ज्ञान को अर्थात् पुरानी बातों को भूलकर अपने मन के अनुसार चलना सीख रहा हूँ।

कवि अपने और संसार की क्रियाओं के विषय में कहते हैं कि मैं एक कवि जो कि स्वभाव से ही संवेदनशील होता है और कहाँ ये संसार? हम दोनों के मध्य किस प्रकार का रिश्ता? संसार अपनी निष्ठुरता के लिए जाना जाता है और मैं अपने प्रेममय हृदय के लिए। इसलिए न जाने मैं अपनी कल्पनाओं में अपनी भावनाओं के अनुरूप, कितने ही संसार रोज बनाता-मिटाता हूँ। मेरा संसार से कोई नाता या सम्बन्ध नहीं है। मेरा तो इस संसार के साथ टकराव-अलगाव चलता रहता है। मैं रोज एक नये संसार की अर्थात् नये आदर्श की रचना करता हूँ और उससे पूरी तरह सन्तुष्ट न होने पर उसे मिटाने का प्रयास करता हूँ। यह संसार जिस धन-समृद्धि को एकत्र करने में लगा रहता है, मैं उसे पूरी तरह ठुकरा देता हूँ। इस तरह मैं संसार को ठुकराकर सत्य और प्रेम के पथ पर बढ़ता रहता हूँ।

विशेष–(1) कवि ने अपने हृदय के दुःखों को तथा संसार के मूढ़ व्यक्तियों की विचित्र दशा को बताया है एवं कवि ने जीवन को सांसारिकता से भिन्न विशिष्ट बताया है।

(2) कोमलकान्त शब्दावली, तत्सम भाषा का प्रयोग तथा अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, यमक अलंकार की प्रस्तुति द्रष्टव्य है।

(3) तत्सम प्रधान खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है।

YouTube channel RK study point 99

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि (शायर) 'फिराक गोरखपुरी' की रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत 'रुबाइयाँ' से लिया गया है। 'रुबाई' उर्दू और फारसी का एक छंद या लेखन शैली है। कवि ने इसमें दीपावली की शाम का वर्णन किया है। इसमें शायर ने बच्चे की जिद तथा माँ द्वारा उसकी इच्छा को पूर्ण करते बताया गया है।

व्याख्या–कवि (शायर) कहता है कि दीपावली की शाम है। घरों की पुताई या रंग-रोगन करने से वे एकदम साफ-सुथरे और सजे-धजे हैं, अर्थात् उन्हें खूब सजाया गया है। माता-पिता अपने बच्चों को प्रसन्न करने के लिए चीनी के बने खिलौने लाते हैं। चमकते हुए दीए अपनी रोशनी बिखेरते हैं। उस समय माँ के आनन्दित सुन्दर मुख पर सौन्दर्य की एक मधुर-कोमल चमक या प्रसन्नता झलकती रहती है। वह बच्चे के खेलने के लिए बने हुए घर में दीपक जलाती है, जिससे बच्चा प्रसन्न हो जाता है और अपनी खिलखिलाती हँसी से पूरा वातावरण गुंजायमान कर देता है। कवि कहता है कि बालक अपने आँगन में झूठ-मूठ रो रहा है, मचल रहा है। वह जिद किये हुए है। वह बालक ही तो है, उसका मन चाँद लेने पर आ गया है और वह माँ से चाँद ला देने की जिद कर रहा है। माँ उसके हाथ में दर्पण देकर बहलाती है और कहती है कि देख, चाँद इस दर्पण में आ गया है। अर्थात् चाँद का सुन्दर प्रतिबिम्ब दर्पण में उतर आया है। अब यह चाँद तेरा हो गया है। अर्थात् मैंने तेरी चाँद पाने की इच्छा पूरी कर दी।

विशेष–(1) कवि ने दीवाली की शाम को माँ-बेटे की अप्रतिम खुशी का वर्णन किया है।

(2) कवि ने परम्परागत बच्चे की जिद तथा माँ द्वारा समाधान का स्वाभाविक वर्णन किया है।

(3) हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषा है, रुबाई छंद है।

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों में दंगल का दृश्य नाचने लगता था।

अथवा

मेरे भ्रमण की भी एकांत साथिन भक्तिन ही रही है। बदरी-केदार के ऊँचे-नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे वह हठ करके मेरे आगे चलती रही है, वैसे ही गाँव की धूलभरी पगडण्डी पर मेरे पीछे रहना नहीं भूलती। किसी भी समय, कहीं भी जाने के लिये प्रस्तुत होते ही मैं भक्तिन को छाया के समान साथ पाती हूँ।

उत्तर-प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण लेखक फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित कहानी 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। बीमारी का भय और ढोलक की आवाज का कम्पन इसमें व्यक्त किया गया है।

व्याख्या–लेखक बताते हैं कि हैजे और मलेरिया बीमारियों ने गाँव के चारों तरफ मृत्यु का भय या आतंक फैला रखा था। रात्रि होते ही सब डर कर अपने घरों में छिप जाते थे कि सुबह तक मृत्यु न जाने किस-किस के घर आ जाये। रात के इस भय को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही अपनी तेज आवाज में चुनौती देती रहती थी। पहलवान सुबह से शाम तक जिस भी विचार से ढोलक बजाता हो, लेकिन उस ढोलक की उत्तेजना भरी आवाज आधे मरे हुए रोगी या मरणासन्न की स्थिति में पहुँचे हुए रोगियों में दवा, उपचार व भोजन की चेतना समान संजीवनी शक्ति ही उनमें भरती थी। ढोलक की थाप से सभी बूढ़े-बच्चे-जवानों की आँखों में दंगल या अखाड़े का उत्साह भरा माहौल दिखाई देने लगता। चेतना-शून्य शरीर की नसों में बिजली की-सी तेजी दौड़ने लगती थी। कहने का आशय है कि पहलवान की ढोलक उस मृतविहीन गाँव के लोगों में साहस, उत्साह व चेतना का संचार करती थी।

विशेष–(1) पहलवान अपना उत्साह, चेतना व साहस वृत्ति का प्रसार ढोलक की तेज थाप के माध्यम से करता था।

(2) भाषा सरल-सहज व बोधगम्य है। संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित संस्मरण 'भक्तिन' से उद्धृत किया गया है। इसमें लेखिका द्वारा उस समय का वर्णन किया गया है जब लेखिका भ्रमण के लिए गमन करती है तो वह उसके हमसाये की भाँति साथ रहती है।

Youtube channel RK Study point 99

व्याख्या–भक्तिन लेखिका के बारे में कहती है जब कभी भी मैं सांस्कृतिक या ऐतिहासिक भ्रमणार्थ जाती थी तो मेरे एकान्त की साथिन भक्तिन मेरे साथ ही रही है जब मैंने बद्रीनाथ एवं केदारनाथ के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रा की तो वह जिद करके हमेशा लेखिका के आगे-आगे चलती रहती थी जिससे यात्रा में कोई बाधा उत्पन्न न हो सके। उसी प्रकार ऐतिहासिक गाँवों की यात्रा करती थी तो हमेशा हमसाये की तरह उसके पीछे-पीछे चलती थी। जिससे कि भक्तिन के पैरों से उड़ने वाली धूल-मिट्टी लेखिका को स्पर्श करके मलिन न कर सके। वह कभी भी किसी भी समय हमेशा लेखिका के साथ हमसाये की भाँति जाने के लिए उद्यत रहती थी। जिससे कि लेखिका को आवागमन में कोई कठिनाई पैदा न हो सके। इसलिए लेखिका ने भक्तिन को एकान्त भ्रमण की साथिन कहा है जो हमेशा हमसाये की तरह साथ रहना चाहती है।

विशेष–(1) इसमें लेखिका ने भक्तिन का एकान्त भ्रमण की साथिन के रूप में सजीवता से चित्रण किया है।

(2) इसमें तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 18. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जयपुर में विभिन्न पदों पर आवेदन करने हेतु समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिये एक विज्ञप्ति लिखिये। **4**

अथवा

विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला में सामग्री क्रय करने हेतु निविदा लिखिये।

उत्तर–

निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जयपुर

विज्ञप्ति

पत्र क्रमांक–927/20XX/XX दिनांक–25 नवम्बर, 20XX

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि हमारे संस्थान में विभिन्न पदों पर सीधी भर्ती हेतु आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जा रहे हैं। योग्यजन आवेदन पत्र की आपूर्ति पूर्ण कर प्रमाणित प्रमाण पत्रों के साथ दिनांक 15 दिसम्बर 20XX को सायं 5.00 बजे तक कार्यालय में जमा करवाने का श्रम करें। तत्पश्चात् आवेदन पत्र स्वीकार नहीं होंगे। पदों का चयन योग्यता, अनुभव एवं साक्षात्कार के आधार पर होगा। वेतन संस्थान द्वारा निर्धारित मानदण्डानुसार।

क्र.सं.	**पदनाम**	**पद संख्या**	**सामान्य योग्यता**	**अनुभव**
1.	आयुर्वेद चिकित्सक	4	आयुर्वेदाचार्य/भिषगाचार्य	5 वर्ष
2.	आयुर्वेद औषध योजक	9	औषध योजक प्रशिक्षण	3 वर्ष
3.	कक्ष सेवक	15	12वीं उत्तीर्ण	3 वर्ष

निदेशक

अथवा

निविदा-सूचना

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

क्रमांक–लेखा/नि.सू./20XX–XX दिनांक 15 नवम्बर, 20XX

निविदा संख्या–11/20XX

अधोहस्ताक्षरकर्त्ता द्वारा निम्न विवरणानुसार प्रयोगशाला सामग्री की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं/प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं, जो निर्धारित तिथि को दोपहर दो बजे तक प्राप्त हो जायेंगी और उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदाकारों के समक्ष खोली जायेंगी। निविदा-प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर के कार्यालय में जमा कराकर प्राप्त किया जा सकता है। निविदा-विवरण इस प्रकार है—

Youtube channel RK study point 99

विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा खोलने की तिथि	निविदा प्रपत्र-शुल्क
जीव विज्ञान	20,000	2,000	20-11-2XX	100
रसायन विज्ञान	30,000	2,500	"	"
भौतिक विज्ञान	25,000	2,000	"	"

नोट—आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा-पत्र के साथ उपलब्ध रहेगा।

(हस्ताक्षर)

प्रधानाचार्य

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में किसी एक विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखिये। (शब्द-सीमा 300 शब्द) 5

1. आतंकवाद—एक वैश्विक समस्या
2. नारी-शिक्षा : आज की आवश्यकता
3. भारत की ऋतुएँ
4. पर्वतीय स्थल की मेरी यात्रा

उत्तर—

आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. आतंकवाद के कारण 3. आतंकवादी घटनाएँ एवं दुष्परिणाम 4. आतंकवादी चुनौती का समाधान 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आतंक का अर्थ है, लोगों में भय, त्रास या अनिष्ट की आशंका फैलाना। आम जनता के जान-माल को नुकसान पहुँचाने तथा हिंसक कार्यवाहियों से जनता में असुरक्षा की भावना फैलाने की कुप्रवृत्ति को आतंकवाद कहते हैं। दूसरे शब्दों में स्वार्थसिद्धि एवं राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित तीव्र हिंसा का प्रयोग आतंकवाद है। आतंकवाद हिंसा एवं अशान्ति पर आधारित होता है। आज आतंकवाद विश्व के समक्ष एक भयानक चुनौतीपूर्ण समस्या बन गया है।

2. आतंकवाद के कारण—आतंकवाद सर्वप्रथम सन् 1920 में इजरायल में हानागाह संगठन द्वारा धार्मिक अलगाव के रूप में उभरा। प्रारम्भ में राष्ट्रों की रंगभेद, कट्टर जातीयता एवं नस्लवादी दमन नीति से कट्टरवादी विषैले चरित्र का विकास हुआ, जो बाद में कहीं पर व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण, कहीं पर क्षेत्रीय वर्चस्व के कारण पनपा। गरीबी, बेरोजगारी, धार्मिक कट्टरता, धार्मिक एवं जातीय भेदभाव भी आतंकवाद के प्रमुख कारण हैं। सम्प्रदाय, धर्म तथा नस्ल के नाम पर पृथक् राष्ट्र की माँग करने से विभिन्न देशों में अलग-अलग नामों से आतंकवाद का प्रसार हुआ।

3. आतंकवादी घटनाएँ एवं दुष्परिणाम—आतंकवाद को कुछ राष्ट्रों का अप्रत्यक्ष सहयोग मिल रहा है। इस कारण आतंकवादियों के पास अत्याधुनिक घातक हथियार मौजूद हैं। वे भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं मानव बमों का प्रयोग कर रहे हैं। वे अपने गुप्त संचार-तन्त्र से कहीं भी पहुँच जाते हैं। पूरे विश्व में अब तक अनेक आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया गया है। अमेरिका में 9/11 का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकी हमला, इराक में यजीदी समुदाय पर हमला, रूस का बेसलान स्कूल हत्याकाण्ड, 2015 का पेरिस हमला, ब्रिटेन की संसद के बाहर हमला, भारत में 26/11 को मुंबई पर हमला, 2006 में मुंबई में ट्रेन ब्लास्ट, भारतीय संसद पर हमला आदि मुख्य आतंकी घटनाएँ हैं। इन हमलों में हजारों लोगों की मृत्यु हुई। अनेक परिवार खत्म हो गये। जन हानि के साथ-साथ अरबों रुपयों की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचा। काफी समय के लिए प्रभावित क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियाँ ठप्प पड़ गईं।

4. आतंकवादी चुनौती का समाधान—आतंकवाद के बढ़ते खतरे का समाधान कठोर कानून व्यवस्था एवं नियन्त्रण से ही हो सकता है। इसके लिए अवैध संगठनों पर प्रतिबन्ध, हवाला द्वारा धन संचय पर रोक, प्रशासनिक सुधार के साथ ही काउण्टर टेररिज्म एक्ट अध्यादेश तथा संघीय जाँच एजेन्सी आदि को अति प्रभावी बनाना अपेक्षित है। अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया द्वारा जो कठोर कानून बनाया गया है तथा सेना एवं पुलिस को इस सम्बन्ध में जो अधिकार दे रखे हैं, उनका अनुसरण करने से भी इस चुनौती का मुकाबला किया जा सकता है।

5. उपसंहार—निर्विवाद कहा जा सकता है कि आतंकवाद किसी देश विशेष के विरुद्ध की गई विध्वंसात्मक कार्यवाही है। आतंकवाद के कारण विश्व मानव-सभ्यता पर संकट आ रहा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। इसके समाधानार्थ एक विश्व-व्यवस्था की जरूरत है, सभी राष्ट्रों में समन्वय तथा एकजुटता की आवश्यकता है। आतंकवाद को मिटा कर ही विश्व-शान्ति स्थापित हो सकती है।

Youtube channel RK study point 09

मॉडल पेपर-2 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा–कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] **[पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए–

(i) 'पतंग' के बहाने किसका सुन्दर चित्रण किया गया है? 1
(अ) बालसुलभ इच्छाओं का (ब) प्रकृति का सुन्दर चित्रण
(स) युवा क्रियाकलापों का (द) मन की खुशी का

(ii) 'आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा?' ऐसा प्रश्न पूछकर किसकी मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है? 1
(अ) अपाहिज की मानसिकता पर (ब) समाज की मानसिकता पर
(स) मीडिया की मानसिकता पर (द) दर्शक की मानसिकता पर

(iii) क्रान्ति हमेशा किसका प्रतिनिधित्व करती है? 1
(अ) शोषक वर्ग का (ब) पूँजीपति वर्ग का
(स) वंचित वर्ग का (द) राजसी वर्ग का

(iv) 'बाजार है कि शैतान का जाल है' बाजार को शैतान का जाल कहने का कारण है— 1
(अ) लोगों को फँसाने के लिए माल सजा-सजाकर रखना
(ब) दुकानों पर लुटेरे बैठे हैं
(स) नकली माल बेचते हैं
(द) बाजार में लूटखसोट है

(v) लेखिका ने कब समझा कि इस सेवक का साथ टेढ़ी खीर है? 1
(अ) साड़ी को पवित्र कर पहनते हुए देखकर
(ब) सूर्य और पीपल का जल से अभिनंदन देखकर
(स) जप करने की मुद्रा देखकर
(द) कोयले से अपने साम्राज्य की सीमा रेखा खींचने पर

(vi) तर्कशील किशोर मन ने भीषण सूखे में पानी की निर्मम बर्बादी किसे कहा गया है? 1
(अ) इन्द्र सेना पर डाले गये पानी को (ब) घर पर व्यर्थ बहने वाले पानी को
(स) उत्सव में पिलाये जाने वाले पानी को (द) लोक प्रचलित अन्धविश्वास को

(vii) भाषा को शुद्ध बोलना लिखना सिखाती है— 1
(अ) व्याकरण (ब) संधि
(स) समास (द) भाषा विज्ञान

(viii) "इस बुढ़िया को न सताओ, यह तो निरी गाय है।" इस वाक्य में किस शब्द शक्ति का चमत्कार है? 1

YouTube channel RK study point 99

(अ) अभिधा (ब) लक्षणा
(स) व्यंजना (द) व्यंजना प्रधान अभिधा

(ix) प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश को क्या कहते हैं? 1
(अ) कूटीकृत (ब) एनकोडिंग
(स) फीडबैक (द) डीकोडिंग

(x) इन्टरनेट पत्रकारिता वर्तमान में अत्यन्त लोकप्रिय है क्योंकि— 1
(अ) इसमें दृश्य एवं प्रिंट दोनों माध्यमों का लाभ मिलता है
(ब) इसमें खबरें बहुत तीव्र गति से पहुँचाई जाती हैं
(स) इसमें खबरों की पुष्टि तत्काल होती है
(द) उपर्युक्त तीनों ही

(xi) यशोधर बाबू जूनियरों के दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कैसे करते हैं? 1
(अ) चलते-चलते मनोरंजक बात कहकर (ब) बीच में एक घण्टे का लन्च देकर
(स) समय से पूर्व अवकाश देकर (द) हमेशा अनुशासन की शिक्षा देकर

(xii) लेखक का विद्यालय में विश्वास क्यों बढ़ने लगा? 1
(अ) शिक्षकों के अपनेपन के व्यवहार के कारण (ब) वसंत से दोस्ती के कारण
(स) पढ़ाई में मन लगने के कारण (द) उपर्युक्त सभी

उत्तर—

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) सभी भारतीय भाषाओं की सूत्र भाषा.......... भाषा है। 1
उत्तर— ....

(ii) ताजमहल की सुन्दरता का क्या कहना। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1
उत्तर— ....

(iii) जहाँ एक शब्द बार-बार आये या आवृत्ति हो, प्रत्येक बार भिन्न-भिन्न अर्थ निकले, वहाँ .... अलंकार होता है। 1
उत्तर— ....

(iv) जहाँ पर कारण नहीं होने पर भी कार्य का होना पाया जाता है वहाँ .... अलंकार होता है। 1
उत्तर— ....

(v) 'प्रत्याभूति' शब्द का अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द है : ....। 1
उत्तर— ....

(vi) 'Editing' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है : ....। 1
उत्तर— ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

देश की सर्वांगीण उन्नति एवं विकास के लिए देशवासियों में स्वदेश-प्रेम का होना परमावश्यक है। जिस देश के नागरिकों में देशहित एवं राष्ट्र-कल्याण की भावना रहती है, वह देश उन्नतिशील होता है। देश-

YouTube channel RK study point 99

प्रेम के पूत-भाव से मण्डित व्यक्ति देशवासियों की हित-साधना में, देशोद्धार में तथा राष्ट्रीय प्रगति में अपना जीवन तक न्यौछावर कर देता है। हम अपने देश के इतिहास पर दृष्टिपात करें, तो ऐसे देश-भक्तों की लम्बी परम्परा मिलती है, जिन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण करके स्वदेश-प्रेम का अद्भुत परिचय दिया है। महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, सरदार भगतसिंह, महारानी लक्ष्मीबाई, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी आदि सहस्रों देश-भक्तों के नाम इस दृष्टि से लिए जाते हैं। हमें अपने देश के इतिहास से देश-प्रेम की एक गौरवपूर्ण परम्परा मिलती है और इससे हम देश-हितार्थ सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रश्न– (i) लेखक के अनुसार कौन-सा देश उन्नतिशील होता है? 1

(ii) 'उन्नति' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1

(iii) हमें अपने देश के इतिहास से क्या प्रेरणा मिलती है? 1

(iv) देशवासियों में स्वदेश प्रेम होना क्यों परमावश्यक है? 1

(v) देशभक्तों ने क्या करके स्वदेश प्रेम का अद्भुत परिचय दिया है? 1

(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर—..

....

....

....

....

....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

यह अंतिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा ना हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वहाँ रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गए नयनद्वय
धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन
''यह है उपाय'' कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन
''कहती थीं माता, मुझको सदा राजीव नयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुनश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।''

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न– (i) राम की माता उन्हें क्या कहती थी? 1

(ii) राम की शक्तिपूजा में कमल पुष्प कौन चुरा लेता है? 1

(iii) राम ने किसको पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना की? 1

(iv) 'दो नील कमल हैं शेष अभी' राम किन नीलकमलों की बात कर रहे हैं? 1

(v) राम का स्थिर मन चंचल क्यों हुआ? 1

(vi) राम आसन छोड़ देते तो क्या होता? 1

उत्तर—..

....

....

....

....

....

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. इन्टरनेट पत्रकारिता से क्या आशय है? 2

उत्तर—..

....

....

प्रश्न 6. 'कविता के बहाने' कविता में बताएँ कि सब घर एक कर देने के माने क्या हैं? 2

उत्तर—..

....

....

....

प्रश्न 7. " 'पहलवान की ढोलक' नामक कहानी में 'लुट्टनसिंह' एक ऐसा पात्र है, जो प्रारम्भ से लेकर मृत्युपर्यन्त जिजीविषा का अद्‌भुत दस्तावेज है।" कैसे? समझाइए। 2

उत्तर—..

....

....

....

प्रश्न 8. किशनदा की कौनसी छवि यशोधर बाबू के मन बसी हुई थी? 2

उत्तर—..

....

....

....

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 9. कवि बनने के लिए लेखक ने किसे गुरु बनाया? 2

उत्तर—..

....

....

....

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. 'पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है'—तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस युग का भी सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए। 3

अथवा

फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों की भाषा एवं प्रसंग सूरदास के वात्सल्य वर्णन की सादगी की याद दिलाता है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—..

....

....

....

YouTube channel Rk study point 99

प्रश्न 11. 'स्त्री माया न जोड़े' यहाँ 'माया' शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति-प्रदत्त नहीं, बल्कि परिस्थितिवश है। वे कौनसी परिस्थितियाँ होंगी जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती हैं? 3

अथवा

'काले मेघा पानी दे' निबन्ध के माध्यम से लेखक ने वर्तमान की किस समस्या की ओर संकेत किया है और कैसे?

उत्तर—..

....

....

....

प्रश्न 12. "नवीन पीढ़ी और नवीन जीवन मूल्य, पुरानी पीढ़ी और प्राचीन जीवन मूल्य, इन दोनों के बीच सदैव टकराहट चलती रहती है।" 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। 3

अथवा

सिन्धु घाटी सभ्यता की प्राचीनता का पता कैसे चला था?

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 13. 'जूझ' आत्मकथात्मक के पठित अंश के आधार पर लेखक के चरित्र की विशेषताएँ बताइये। 3

अथवा

मुअन जो-दड़ो के कुण्ड की क्या विशेषता है?

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 14. फीचर लेखन में किन बातों का ध्यान रखा जाता है? समझाइए। 3

अथवा

आलेख लिखने की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 15. हरिवंशराय बच्चन अथवा महादेवी वर्मा का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!

अथवा

झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना।

उत्तर—...

....

....

....

....

....

....

YouTube channel KK study point 99

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई। विधवा बहिन के गठबन्धन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसन्द कर दिया।

अथवा

'समता' का औचित्य यहीं पर समाप्त नहीं होता। इसका और भी आधार उपलब्ध है। एक राजनीतिज्ञ पुरुष का बहुत बड़ी जनसंख्या से पाला पड़ता है। अपनी जनता से व्यवहार करते समय, राजनीतिज्ञ के पास न तो इतना समय होता है, न प्रत्येक के विषय में इतनी जानकारी ही होती है, जिससे वह सबकी अलग-अलग आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के आधार पर वांछित व्यवहार अलग-अलग कर सके।

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

YouTube channel RK study point 99

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 18. जिला कलेक्टर, उदयपुर की ओर से राजस्व सचिव, राजस्थान सरकार को स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने हेतु सरकारी पत्र लिखिए। 4

अथवा

अपने विद्यालय के लिए आवश्यक परीक्षा सामग्री क्रय हेतु निविदा तैयार कीजिए।

उत्तर— ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए–

(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. वैश्विक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण
2. बढ़ती महँगाई में प्रदर्शन की होड़
3. युवा पीढ़ी में बढ़ता हुआ असन्तोष
4. स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है

उत्तर— ....

....

....

....

दिनांक.................. प्राप्तांक.................. ह. अध्यापक..................

पूर्णांक-80

मॉडल पेपर-3 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा–कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] **[पूर्णांक : 80**

YouTube channel RK study point 99

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए–

(i) 'कविता के पंख लगा उड़ने के माने' क्या हैं? 1
(अ) कविता सारी सृष्टि में उड़ान भर लेती है
(ब) कविता के पंख लग जाते हैं
(स) कविता उड़ने में चिड़िया से प्रतिस्पर्धा करती है
(द) चिड़िया उड़ सकती है, कविता नहीं

(ii) भरता उर में विह्वलता है। 'विह्वलता' से क्या होता है? 1
(अ) मंजिल प्राप्त करता (ब) पद शिथिल हो जाते हैं
(स) हित में संलग्न होते हैं (द) मन थक जाता है

(iii) 'बच्चे के घरोंदे में जलाती है दीए' पंक्ति में दीए जलाने से क्या हुआ? 1
(अ) चीनी मिट्टी के खिलौने चमकने लगे (ब) माँ का चमकता रूप दिखाई दिया
(स) बच्चा खिलखिलाकर हँसने लगा (द) घर का सौन्दर्य दिखाई दिया

(iv) 'भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था।' पंक्ति में भक्तिन के दुर्भाग्य को हठी क्यों कहा है? 1
(अ) विधवा होते ही उसे घर से बाहर निकाल दिया
(ब) उसकी किशोरी युवती होते ही विधवा हो गई
(स) विधवा होते ही परिजनों ने सम्पत्ति छीन ली
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(v) व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न होना क्या कहलाता है? 1
(अ) पराधीनता (ब) दासता (स) बेगारी (द) गरीबी

(vi) पिछले एक-डेढ़ दशक पूर्व किस विषय पर व्यापक चर्चा हुई? 1
(अ) उपभोक्तावाद पर (ब) बाजारवाद पर
(स) दोनों पर (द) समाजवाद पर

(vii) जहाँ वास्तविक विरोध न हो किन्तु अर्थ करने पर विरोध सा जान पड़ता है, वहाँ अलंकार होता है— 1

(अ) वक्रोक्ति (ब) विरोधाभास
(स) विभावना (द) श्लेष

(viii) Notification शब्द का पारिभाषिक अर्थ है— 1
(अ) सूचना (ब) स्पष्टीकरण
(स) अधिसूचना (द) अनुवीक्षक

(ix) भाषा के विकास में शुरुआती अखबारों और पत्रिकाओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका किसने निभाई? 1
(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ब) प्रताप नारायण मिश्र
(स) माखन लाल चतुर्वेदी (द) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(x) प्रिन्ट मीडिया का किसके लिए महत्त्व नहीं है? 1
(अ) विद्यार्थियों के लिए (ब) शिक्षकों के लिए
(स) अनपढ़ों के लिए (द) शिक्षितों के लिए

(xi) लेखक को अकेलापन खटकना बन्द कब हुआ? 1
(अ) गणित के मास्टर के आनन्द कहकर पुकारने पर
(ब) अकेले में मास्टर के ही स्वर में गाने पर
(स) वसन्त से दोस्ती होने पर
(द) मराठी मास्टर के सम्पर्क में आने पर

(xii) सिन्धु सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने के स्थान पर किससे अनुशासित थी? 1
(अ) राजनीति से (ब) धार्मिक भावना से
(स) आपसी समझ से (द) सेना के द्वारा

उत्तर–

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) 'श्रद्धांजलि' शब्द का अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द है : ....। 1

उत्तर— ....

(ii) "अजौ तर्‌यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग।" काव्य पंक्ति में .... अलंकार प्रयुक्त हुआ है। 1

उत्तर— ....

(iii) निकम्मे रहकर मनुष्यों की चिन्तन-शक्ति थक गई। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1

उत्तर— ....

(iv) शब्द की जिस शक्ति से किसी शब्द के सबसे साधारण, लोक प्रचलित अर्थ का बोध हो, ... होती है। 1

उत्तर— ....

(v) देवनागरी लिपि का विकास .... लिपि से हुआ है। 1

उत्तर— ....

(vi) मुख से निकलने वाली, वाग्यंत्र से उच्चारित प्रत्येक स्वतन्त्र आवाज को .... कहते हैं। 1

उत्तर— ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

मानव जीवन का सर्वतोमुखी विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। मनुष्य के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की शक्तियाँ अन्तर्निहित रहती हैं, शिक्षा इन्हीं शक्तियों का उद्‌घाटन करती है। मानवीय व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करने का कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्पन्न होता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक मानव ने जो प्रगति की है, उसका सर्वाधिक श्रेय मनुष्य की ज्ञान-चेतना को ही दिया जा सकता है। मनुष्य में ज्ञान-चेतना का उदय शिक्षा द्वारा ही होता है। बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन पशु-तुल्य होता है। शिक्षा ही अज्ञान रूपी अंधकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान का दिव्य आलोक प्रदान करती है। विद्या मनुष्य को अज्ञान के बंधन से मुक्त करती है।

प्रश्न– (i) शिक्षा का उद्देश्य किसे बताया गया है और क्यों? 1
(ii) 'स्वतन्त्र' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1
(iii) मनुष्य में ज्ञान-चेतना का उदय किसके द्वारा होता है? 1
(iv) मनुष्य के व्यक्तित्व में क्या निहित रहती है? 1
(v) मानव की प्रगति का सर्वाधिक श्रेय किसे दिया जा सकता है? 1
(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर— ....
....
....
....
....
....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

मेरी भूमि तो है पुण्यभूमि वह भारती,
सौ नक्षत्र-लोक करें आके आप आरती।
नित्य नये अंकुर असंख्य वहाँ फूटते,
फूल झड़ते हैं, फल पकते हैं, टूटते।
सुरसरिता ने वहीं पाई हैं सहेलियाँ,
लाखों अठखेलियाँ, करोड़ों रंगरेलियाँ।
नन्दन विलासी सुरवृन्द, बहु वेशों में,
करते विहार हैं हिमाचल प्रदेशों में।
सुलभ यहाँ जो स्वाद, उसका महत्त्व क्या?
दुःख जो न हो तो फिर सुख में है सत्त्व क्या?
दुर्लभ जो होता है, उसी को हम लेते हैं,
जो भी मूल्य देना पड़ता है, वही देते हैं।
हम परिवर्तनमान, नित्य नये हैं तभी,
ऊब ही उठेंगे कभी एक स्थिति में सभी।
रहता प्रपूर्ण है हमारा रंगमंच भी,
रुकता नहीं है लोक नाट्य कभी रंच भी।

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न— (i) कवि ने पुण्य भूमि किसे और क्यों कहा है? 1
(ii) हिमाचल प्रदेश की क्या विशेषता बताई गयी है? 1
(iii) "मृत्यु जो न हो, तो फिर मृत्यु से है भय क्या?"—इस कथन का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए। 1
(iv) पृथ्वीवासियों को 'मित्र नये' क्यों कहा गया है? 1
(v) 'जो भी मूल्य देना पड़ता है, वही देते हैं।' पंक्ति का भाव बताइये। 1
(vi) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर—

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. जनसंचार माध्यमों के कौन-कौनसे कार्य हैं? समझाइए। 2

उत्तर—

प्रश्न 6. किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक होता है। 'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 7. महादेवी भक्तिन को अपनी सेविका क्यों नहीं मानती थी? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर बताइये। 2

उत्तर—

प्रश्न 8. स्कूल में लेखक का ध्यान पढ़ाई में कब लगने लगा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइये। 2

उत्तर—

प्रश्न 9. 'मुअनजो-दड़ो' नगर का हित तथा आबादी के सम्बन्ध में पुरातत्त्ववेत्ता की क्या धारणा थी? 2

उत्तर—

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए, तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 160 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है? 3

अथवा

बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

उत्तर—

प्रश्न 11. शिरीष से हमें किन गुणों की प्रेरणा मिलती है? स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

रिश्तों में हमारी भावना-शक्ति का बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के सन्दर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 12. कविता के प्रति लगाव से पहले और इसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया? 3

अथवा

कुलधरा कहाँ स्थित है और लेखक को मुअनजो-दड़ो के घरों के खण्डहरों में टहलते हुए, इसकी याद क्यों आ गई?

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 13. 'वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे।' यशोधर बाबू की इस सोच के क्या कारण थे? लिखिए। 3

अथवा

मास्टर न. वा. सौंदलगेकर के मराठी भाषा पढ़ाने का वह कौन-सा तरीका था जिससे लेखक के जीवन पर उनका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा?

उत्तर—

प्रश्न 14. फ़ीचर-लेखन के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 3

अथवा

आलेख लेखन किसे कहते हैं? आलेख के मुख्य अंग बताइए।

उत्तर—

प्रश्न 15. कवि आलोक धन्वा अथवा जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

अथवा

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हो जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।
मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना।

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है!

अथवा

महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किये रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे!

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 18. पेयजल की आपूर्ति के सम्बन्ध में विशिष्ट शासन सचिव की ओर से अजमेर मण्डलायुक्त को एक अर्द्ध-सरकारी पत्र लिखिए, जिसमें पूर्ण विवरण भेजने के लिए निर्देश हो। 4

अथवा

कार्यालय निदेशक, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, जयपुर की ओर से कम्प्यूटर एवं अन्य उपकरण सप्लाई करने हेतु एक निविदा सूचना लिखिए।

उत्तर—

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए– 5

(शब्द-सीमा : 300 शब्द)

1. आत्मनिर्भर भारत
2. बढ़ता भ्रष्टाचार : गिरती नैतिकता

....

....

....

....

दिनांक.................. प्राप्तांक.................. ह. अध्यापक..................

पूर्णांक-80

मॉडल पेपर-4 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा—कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] **[पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश—

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए—

(i) 'छोटा मेरा खेत' कविता में किसान कर्म को किस कर्म के रूप में माना है? 1

(अ) कवि कर्म (ब) मानव कर्म
(स) धर्म कर्म (द) जीवन कर्म

(ii) जीविका विहीन लोग एक-दूसरे से क्या कहते हैं? 1

(अ) कहाँ जायें क्या करें (ब) एक-दूसरे की सहायता करेंगे
(स) हम जीविका कमायेंगे (द) हम कर्महीन हो जायेंगे

(iii) "मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।" पंक्ति का आशय है— 1

(अ) मैं अपने आप से प्रेम करता हूँ। (ब) मैं लोगों से प्रेम के सम्बन्ध रखता हूँ।
(स) मैं लोगों में प्रेम का संचार करता हूँ। (द) मैं लोगों को झंकृत करता हूँ।

(iv) शिरीष के फूल कैसे बने रहने को मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित करता है? 1

(अ) कर्तव्य विमुख (ब) मुमुक्षु
(स) कर्तव्यशील (द) कर्तव्यविहीन

(v) लक्ष्मी की विधवा बेटी से हुए दुर्व्यवहार का पंचायत ने मूल कारण किसे माना? 1

(अ) कलियुग को (ब) तीतरबाज को
(स) विधवा लड़की को (द) समाज को

(vi) 'अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।' पंक्ति का आशय है— 1

(अ) निस्तब्धता दबाने की चेष्टा कर रही थी (ब) आकाश में तारे चमक रहे थे
(स) पृथ्वी पर प्रकाश नहीं है (द) आकाश से कोई तारा टूट रहा है

YouTube channel RK study point 99

(vii) सरकारी कार्यालयों में कौन-सी भाषा राज-काज की भाषा कहलाती है? 1

(अ) राष्ट्रभाषा (ब) सम्पर्क भाषा
(स) मानक भाषा (द) राजभाषा

(viii) किस वाक्य में 'पर्वत' शब्द अभिधेयार्थ प्रकट कर रहा है? 1

(अ) पर्वत पर चढ़ना सरल कार्य नहीं है। (ब) पर्वत जाग रहे हैं।
(स) खोदा पहाड़ निकली चुहिया। (द) देहरिया पर्वत भई, आँगन भयो विदेस।

(ix) सबसे नया लेकिन तेजी से लोकप्रिय हो रहा जनसंचार का कौनसा माध्यम है? 1

(अ) रेडियो (ब) एफ. एम.
(स) दूरदर्शन (द) इन्टरनेट

(x) जन संचार के कौनसे माध्यम में तत्काल सुधार नहीं किया जाता है? 1

(अ) मुद्रित पत्र (ब) ई-पत्र
(स) टी.वी. (द) इन्टरनेट

(xi) मुअनजो-दड़ो की बसावट को आज के वास्तुकार किस प्लान को कहते हैं? 1

(अ) आड़ा-सीधा नियोजन (ब) ग्रिड प्लान
(स) सीधा प्लान (द) तिरछा प्लान

(xii) 'आप भी हद करते हैं। सिल्वर वेडिंग के दिन साढ़े आठ बजे घर पहुँचे हैं।' यह झिड़की किसने सुनाई? 1

(अ) बड़े बेटे ने (ब) लड़की ने
(स) पत्नी ने (द) मेहमानों ने

उत्तर–

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) जिससे वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ से भिन्न विशिष्ट चमत्कारी अर्थ का बोध होता है, उसे .... शब्द शक्ति कहते हैं। 1

उत्तर— ....

(ii) जो भाषा परिष्कृत, व्याकरणसम्मत, सर्वजन स्वीकार्य, आदर्श रूप से प्रचलित एवं शासन स्तर पर व्यवहृत होती है, उसे .... कहते हैं। 1

उत्तर— ....

(iii) जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करे, बढ़े अंधेरो होय।। काव्य पंक्ति में .... अलंकार है। 1

उत्तर— ....

(iv) जहाँ सौन्दर्यता का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाये कि लोक मर्यादा का उल्लंघन कर जाये वहाँ .... अलंकार होता है। 1

उत्तर— ....

(v) 'मान लेना/सम्मिलित होना' का अंग्रेजी शब्द होगा : 1

उत्तर— ....

(vi) Partiality शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द है : 1

उत्तर— ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

जब हम भारतीय साहित्य की एकता की चर्चा करते हैं तब हमारा आशय भारतवर्ष की भिन्न-भिन्न भाषाओं की साहित्य समाश्रयता से होता है। यदि हम आज की हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती अथवा दक्षिणी भाषाओं के साहित्य को देखें, तो उनमें थोड़ा-बहुत अन्तर भी दिखेगा। परन्तु सार रूप में प्रवृत्तियाँ प्रायः एक-सी ही पाई जाती हैं। विभिन्न प्रदेशों और जनपदों की सांस्कृतिक विशेषताओं की छाप इन साहित्यों में प्राप्त होती है, जो स्वाभाविक है। साहित्य के विविध रूपों में से किसी भाषा में किसी रूप की विशिष्टता भी मिलती है। उदाहरण के लिए आज के मराठी साहित्य में नाटकों की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक अच्छी है, वैयक्तिक निबन्ध भी उनके यहाँ अधिक परिणाम में लिखे जा रहे हैं। यह उनकी प्रासंगिक विशेषता है। इसी प्रकार वैभिन्न्य के भीतर एक मूलभूत एकता है, जिसे हम भारतीय साहित्य की एकता कह सकते हैं।

प्रश्न–
(i) भारतीय साहित्य की एकता का विस्तृत आशय क्या है? 1
(ii) 'शास्त्र' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1
(iii) मराठी साहित्य की क्या प्रासंगिकता है? 1
(iv) भारतीय साहित्य की क्या विशेषता है? 1
(v) गद्यांश में किसकी चर्चा की गई है? 1
(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर— ....
....
....
....
....
....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक-न-एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन-भर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है॥

सिंधु-विहंग तरंगपंख को फड़काकर प्रतिक्षण में।
है निमग्न नित भूमि-अंड के सेवन में, रक्षण में।
कोमल मलय पवन घर-घर में सुरभि बाँट आता है।
शस्य सींचने घन जीवन धारण कर नित जाता है॥

रवि जग में शोभा सरसाता, सोम सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में, कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता।

प्रश्न–
(i) 'तुच्छ पत्र की स्वकर्म में तत्परता' से कवि का क्या आशय है? 1
(ii) सूर्य सदैव कौन-से कर्म में सक्रिय रहता है? 1
(iii) 'सब हैं लगे कर्म में'–इससे कवि ने क्या सन्देश दिया है? 1
(iv) 'सबके निश्चित व्रत हैं'–इसके लिए कवि ने किनके दृष्टान्त दिये हैं? 1
(v) 'सबके निश्चित व्रत हैं।' इसका मतलब क्या है? 1
(vi) प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिये। 1

YouTube channel RK study point 99

उत्तर—

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. पत्रकार का क्या दायित्व है? ये कितने तरह के होते हैं? 2

उत्तर—

प्रश्न 6. 'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता की मूल संवेदना लिखिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 7. 'ऐसे बाजार मानवता के लिए विडम्बना हैं।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है? 2

उत्तर—

प्रश्न 8. 'सिंधु सभ्यता राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित थी।' कथन को स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 9. यशोधर बाबू को घर जल्दी लौटना पसन्द नहीं था। क्यों? कारण स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. निराला जी की 'बादल राग' कविता का संदेश क्या है? वर्तमान सामाजिक परिवेश में इस रचना के प्रभाव का आकलन कीजिए। 3

अथवा

बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किन्तु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। कैसे?

उत्तर—

प्रश्न 11. शिरीष की तुलना गाँधीजी से करते हुए स्पष्ट कीजिए कि शिरीष को अवधूत क्यों माना गया है? 3

अथवा

'भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं'—लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर—

प्रश्न 12. ग्रामीण परिवेश से आये लोग शहरी जीवन से किस तरह आकृष्ट होते हैं? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के पात्र यशोधर बाबू की पत्नी के चरित्र के आधार पर बताइये। 3

अथवा

" 'जूझ' आत्मकथात्मक अंश में युवक आनन्द को जुझारू अर्थात् संघर्षशील चित्रित किया गया है।" सिद्ध कीजिए।

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 13. पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि "सिन्धु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी?" 3

अथवा

'जूझ' आत्मकथात्मक अंश की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 14. भारत में किसानों की दुरवस्था विषय पर एक फीचर लिखिए। 3

अथवा

घटते संयुक्त परिवार : बढ़ते खतरे विषय पर एक आलेख लिखिए।

उत्तर—

प्रश्न 15. कवि कुँवर नारायण अथवा धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए- 6

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर
छतों के खतरनाक किनारों तक-
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

अथवा

रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

....

....

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आए पर ज्यों की त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी-कभी कैसे-कैसे सन्दर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं। आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

अथवा

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 18. स्वयं को शासन सचिव, शिक्षा विभाग, रविकुमार मानते हुए राज्य के समस्त संस्था प्रधानों को 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' की सुनिश्चितता हेतु एक अर्द्धशासकीय पत्र का प्रारूप लिखिए। 4

अथवा

नगरपालिका, 'क ख ग' की ओर से एक विज्ञप्ति का प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें नगरपालिका क्षेत्र में घूमने वाले आवारा पशुओं की रोकथाम के लिए नागरिकों से सहयोग की अपील की गई हो।

उत्तर—..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए–

(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम
2. मोबाइल फोन : छात्र के लिए वरदान या अभिशाप
3. राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ
4. मानवता के लिए चुनौती–कन्या-भ्रूण हत्या

उत्तर—..

....

....

....

....

....

YouTube channel RK study point 99

मॉडल पेपर-5 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा–कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] **[पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए–

(i) 'उन्मादों में अवसाद' का तात्पर्य है— 1

(अ) उग्रता में विषाद (ब) आलस्य में शान्ति

(स) प्रेम के पागलपन में विषाद (द) दुःखों में विषाद

(ii) अपाहिज व्यक्ति मीडियाकर्मी के प्रश्नों के उत्तर क्यों नहीं दे पाता है? 1

(अ) वह अपने अपाहिजपन को दूर करवाना नहीं चाहता है

(ब) उनके प्रश्नों के उत्तर अटपटे हैं

(स) वह सोचता है ये मेरा मजाक बना रहे हैं

(द) अपनी अपाहिजता को किस भाव में व्यक्त करे

(iii) "मुझे बाँध निज माया से" पंक्ति में बगुले अपनी माया से कब बाँधते हैं? 1

(अ) हौले-हौले उड़ने पर (ब) मन्द-मन्द उड़ने पर

(स) शनैः-शनै उड़ने पर (द) उपर्युक्त सभी

(iv) अंबेडकर जी ने किस क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाते हुए अथक संघर्ष किया? 1

(अ) मजदूरों को मानवीय अधिकार दिलाने में (ब) राजनीति में निष्क्रिय भूमिका

(स) शोषक वर्ग बढ़ाने में सक्रिय (द) अछूतोद्धार में निष्क्रिय भूमिका

(v) वनस्पतिशास्त्री के मतानुसार शिरीष का पेड़ किस श्रेणी का पेड़ है? 1

(अ) वायुमंडल से अपना रस खींचता है (ब) धरती से अपना रस खींचता है

(स) मानव द्वारा सिंचित जल से रस खींचता है (द) देवों से अपना रस खींचता है

(vi) मनुष्यता की साधना और जीवन सौंदर्य के लिए किसकी आवश्यकता होती है? 1

(अ) लोक कलाओं की (ब) ग्रामीण विकास की

(स) शहरी विकास की (द) धार्मिक कार्यों की

(vii) ये हैं सरस ओस की बूँदें या है मंजुल मोती? पंक्ति में अलंकार निहित है— 1

(अ) विभावना (ब) सन्देह

(स) भ्रान्तिमान (द) विरोधाभास

(viii) Privilege शब्द का पारिभाषिक शब्द है— 1

(अ) विशेषाधिकार (ब) परिवीक्षा

(स) लोकहित (द) शरणार्थी

(ix) समाचार की कौनसी परिभाषा उपयुक्त है? 1

(अ) प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना समाचार है

YouTube channel RK Study point 99

(ब) किसी घटना की रिपोर्ट ही समाचार है
(स) समय पर दी जाने वाली हर सूचना समाचार है
(द) उपर्युक्त सभी।

(x) सबसे पहले कोई बड़ी खबर किस माध्यम से तत्काल दर्शकों तक पहुँचायी जाती है— 1
(अ) एंकर बाइट के रूप में (ब) ड्राई एंकर के रूप में
(स) फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज के रूप में (द) एंकर पैकेज के रूप में

(xi) [illegible] किनके चोंचले हैं? 1
(अ) [illegible] (ब) गोरे लोगों के
(स) [illegible] (द) भारतीयों के

(xii) [illegible] विचार चलते रहते हैं? 1
(अ) [illegible] (ब) खेती हमें गाँव में धकेल रही है
(स) [illegible] (द) मैं पढ़ने नहीं जाऊँगा

उत्तर—

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
(i) [illegible] का हिन्दी अर्थ है : 1
उत्तर— ....
(ii) [illegible] केवल शब्दों या वर्णों के सुन्दर प्रयोग से बढ़ जाने पर .... कहते हैं। 1
उत्तर— ....
(iii) '[illegible] भ्रमण स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है।' वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1
उत्तर— ....
(iv) [illegible] शब्द के लक्षण प्रकट होते हैं किन्तु वास्तविकता नहीं होती वह शब्द शक्ति .... कहलाती है। 1
उत्तर— ....
(v) सामान्यतः आपसी बातचीत में भाषा एवं संवाद आदि में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे .... भाषा कहते हैं। 1
उत्तर— ....
(vi) व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी .... की जाती है उसे भाषा कहते हैं। 1
उत्तर— ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

भारत में विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्पर्क में आने से संस्कृति की समस्या कुछ जटिल हो गयी। पुराने जमाने में द्रविड़ और आर्य-संस्कृति का समन्वय बहुत उत्तम रीति से हो गया था। तत्पश्चात् मुस्लिम और अंग्रेजी संस्कृतियों का मेल हुआ। हम इन संस्कृतियों से अछूते नहीं रह सकते। इन संस्कृतियों में से हम कितना छोड़ें, यह हमारे सामने बड़ी समस्या है। अपनी भारतीय संस्कृति को तिलांजलि देकर इनको अपनाना आत्महत्या होगी। भारतीय संस्कृति की समन्वय-शीलता यहाँ भी अपेक्षित है किन्तु समन्वय में अपना आपा

न खो बैठना चाहिए। दूसरी संस्कृतियों के जो अंग हमारी संस्कृति में अविरोध रूप से अपनाये जा सकें, उनके द्वारा अपनी संस्कृति को सम्पन्न बनाना अनुचित नहीं। अपनी संस्कृति चाहे अच्छी हो या बुरी, चाहे दूसरों की संस्कृति से मिल खाती हो या न खाती हो, उससे लज्जित होने की कोई बात नहीं।

प्रश्न— (i) भारतीय संस्कृति की [illegible] समन्वयशीलता कहाँ दिखाई देती है? 1
(ii) 'मुश्किल' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1
(iii) भारतीय संस्कृति के समन्वय में किस बात का ध्यान रखना चाहिए? 1
(iv) भारतीय संस्कृति की समस्या कब जटिल हो गयी? 1
(v) पुराने जमाने में किसका समन्वय उत्तम रीति से था? 1
(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर— ....
....
....
....
....
....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे,
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।
अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।

कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम,
साधना से मुड़कर सिहरते रहे तुम,
अब तुम्हें आकाश में उड़ने न दूँगा,
आज धरती पर बसाने आ रहा हूँ।

सुख नहीं यह, नींद में सपने सँजोना,
दुःख नहीं यह, शीश पर गुरु भार ढोना,
शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक,
फूल मैं उसको बनाने आ रहा हूँ।

प्रश्न— (i) 'अरुण उदयाचल सजाने' से क्या आशय है? 1
(ii) कवि ने किसे सुख और दुःख नहीं माना है? 1
(iii) 'फूल' और 'शूल' से कवि का क्या आशय है? 1
(iv) 'कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम'—इसमें कवि ने किन लोगों पर आक्षेप किया है? 1
(v) गहरी नींद में सोने का क्या अर्थ है? 1
(vi) कवि लोगों को क्यों जगाना चाहता है? 1

उत्तर— ....
....
....

YouTube channel RK study point 99

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग ४० शब्दों में लिखिए।

प्रश्न ५. समाचार लेखन और छह ककार का सम्बन्ध बताइए। 2

उत्तर—

प्रश्न ६. 'गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा-धीर'–इसका आशय 'बादल राग' कविता के आधार पर बताइए। 2

उत्तर—

प्रश्न ७. मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है? बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

प्रश्न ८. यशोधर बाबू धार्मिक व कर्मकाण्डी नहीं थे फिर भी किसकी प्रेरणा से बने? 2

उत्तर—

प्रश्न ९. लेखक एवं माँ के साथ पिता की शिकायत करने पर दत्ताजी राव देसाई ने क्या प्रतिक्रिया की? 2

उत्तर—

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है? 3

अथवा

'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत का साम्य चौकोर पन्ने से किस प्रकार बाँधा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 11. लेखक ने 'बाजार दर्शन' पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। 3

अथवा

शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक-उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आम्बेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर—

प्रश्न 12. आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें। 3

अथवा

सिंधु घाटी की सभ्यता मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी। 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 13. "आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नयी उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं।" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 3

YouTube channel RK study point 99

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' पाठ में वर्णित महाकुण्ड को पवित्र रखने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए थे?

उत्तर—

प्रश्न 14. मोबाइल केन्द्रित जीवन विषय पर फीचर लेखन कीजिए। 3

अथवा

'अन्तरिक्ष पर भारत का दबदबा' विषय पर आलेख लिखिए।

उत्तर—

प्रश्न 15. कवि रघुवीर सहाय अथवा फणीश्वरनाथ 'रेणु' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए वानर निकर।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुणा महँ बीर रस॥
हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना॥
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥
हृदय लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता॥
कवि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहि ताहि लइ आवा॥

अथवा

पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास।

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी।

अथवा

देश की कितनी क्षति होती है इस तरह के अंधविश्वासों से। कौन कहता है इन्हें इन्द्र की सेना? अगर इन्द्र महाराज से ये पानी दिलवा सकते हैं तो खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते? क्यों मुहल्ले भर का पानी नष्ट करवाते घूमते हैं, नहीं, यह सब पाखण्ड है। अंधविश्वास है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए और गुलाम बन गए।

उत्तर—

प्रश्न 18. राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा उत्तर प्रदेश के खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष को बैठक आयोजित करने के लिए एक अर्द्धसरकारी पत्र लिखिए। 4

अथवा

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर के सचिव की ओर से एक प्रेस-विज्ञप्ति का प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें बोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विक्रय करने के लिए पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा पंजीकरण करवाना आवश्यक किया गया है।

उत्तर—

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए–

(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार
2. जल संरक्षण : हमारा दायित्व
3. शिक्षा का प्रसार : उन्नति का द्वार
4. मेरा प्रिय कवि

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

मॉडल पेपर-6 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा–कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] [पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए–

(i) 'चमकीले इशारों से बुलाते हुए' बच्चे चमकीले इशारों में क्या करते हैं? 1
(अ) पतंग उड़ाते हैं (ब) पटाखे छुड़ाते हैं
(स) जोर-जोर से सीटियाँ या किलकारियाँ मारते हैं
(द) तेज आवाज में संगीत गाते हैं

(ii) खिलखिलाते बच्चे की हँसी कब गूँज उठती है? 1
(अ) जब माँ बच्चे को गोदी में लेती है
(ब) जब माँ बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहती है
(स) जब माँ बच्चे को लोका देती है
(द) जब माँ बच्चे को चाँद का प्रतिबिम्ब दिखाती है

(iii) 'हृदय थाम लेता संसार' पंक्ति किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है? 1
(अ) पूँजीपतियों का (ब) शोषित वर्ग का
(स) किसानों का (द) श्रमिकों का

(iv) लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का सुन्दर चित्रण किस रचना में है? 1
(अ) काले मेघा पानी दे (ब) भक्तिन
(स) बाजार दर्शन (द) पहलवान की ढोलक

(v) आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए किसको आवश्यक मानता है? 1
(अ) परम्पराओं को (ब) श्रम विभाजन को
(स) मनुष्य की रुचि को (द) सामाजिक स्तर को

(vi) 'शिरीष के फूल' पाठ में लेखक ने किसके खोखलेपन को उजागर किया है? 1
(अ) सांस्कृतिक खोखलेपन को (ब) सामंती वैभव विलास के खोखलेपन को
(स) ऐतिहासिक खोखलेपन को (द) मानव मन के खोखलेपन को

(vii) बोली या उपभाषा में साहित्य क्यों नहीं लिखा जाता है? 1
(अ) उसका व्याकरण नहीं होता है (ब) उसका शब्दकोश नहीं होता है
(स) वह सीमित क्षेत्र की भाषा है (द) उपर्युक्त सभी

(viii) शब्द का अभीष्ट अर्थ श्रोता तक पहुँचाने की क्षमता किसमें होती है? 1
(अ) संधि में (ब) रसों में
(स) शब्द शक्ति में (द) अलंकार में

YouTube channel PK study point 99

(ix) संपादन का सिद्धान्त नहीं है— 1

(अ) तथ्यों की शुद्धता (ब) निष्पक्षता
(स) संतुलनहीनता (द) वस्तुपरकता

(x) टेलीविजन कार्यक्रम में कौनसा प्रसारण सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है? 1

(अ) सीधा प्रसारण (ब) सिनेमा प्रसारण
(स) राजनीति प्रसारण (द) चिकित्सा प्रसारण

(xi) 'पढ़ने-लिखने की बात की तो वह बहरेला सूअर की तरह गुर्राता है', पंक्ति में बहरेला सूअर किसे कहा गया है? 1

(अ) दादा को (ब) 'दत्ताजी राव को
(स) जंगली सूअर को (द) पालतू सूअर को

(xii) मुअनजो-दड़ो कौनसे काल के शहरों में सबसे बड़ा एवं उत्कृष्ट है? 1

(अ) सवर्ण काल (ब) ताम्रकाल
(स) पाषाण काल (द) प्राचीन काल

उत्तर–

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) बाजार एक जादू है, वह जादू आँख की राह काम करता है। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1

उत्तर— ....

(ii) कोई बोली जब व्यापक रूप में प्रयुक्त होती है, उसमें साहित्य रचना होने लगती है, तो वह बोली .... बन जाती है। 1

उत्तर— ....

(iii) वक्ता द्वारा बोले गये शब्दों का श्रोता भिन्न अर्थ निकाल लेता वहाँ .... अलंकार होता है। 1

उत्तर— ....

(iv) जहाँ वास्तविक विरोध न हो किन्तु अर्थ करने पर विरोध सा जान पड़ता हो वहाँ .... अलंकार होता है। 1

उत्तर— ....

(v) 'श्रव्य-दृश्य' हिन्दी शब्द के लिए अंग्रेजी शब्द है : 1

उत्तर— ....

(vi) Misconduct शब्द का हिन्दी रूपान्तर है : 1

उत्तर— ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

जातीय जीवन, उसकी संस्कृति तथा भूमिगत सीमाबद्ध परिवेश ये सब सम्मिलित रूप से राष्ट्रीयता के उपकरण होते हैं। ये समष्टि रूप से ही आवश्यक उपकरण हैं, व्यष्टि रूप से नहीं। राष्ट्रीयता ही राष्ट्रीय भावना की पोषक होती है। हिन्दी-साहित्य-कोश में राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में लिखा है—"राष्ट्रीय साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त साहित्य लिया जा सकता है जो किसी देश की जातीय विशेषताओं का परिचायक है।" वैसे भूमि (देश),

उस भूमि पर बसने वाले जन और उनकी संस्कृति, ये तीनों ही सम्मिलित भावना रूप में राष्ट्रीयता के परिचायक हैं। राष्ट्रीयता 'राष्ट्र' शब्द से निर्मित है। इस राष्ट्रीयता शब्द का सामान्य अर्थ है, राष्ट्र के प्रति निष्ठा रखने की भावना। राष्ट्रीयता नेशनेलिटी का हिन्दी रूप है। एनसाइक्लोपीडिया में 'नेशनेलिटी' के बारे में लिखा है कि "राष्ट्रीयता मन की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सर्वोपरि कर्त्तव्यनिष्ठा राष्ट्र के प्रति अनुभव की जाती है।"

प्रश्न– (i) राष्ट्रीयता से क्या आशय लिया जाता है? 1
(ii) 'देशभाव' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिये। 1
(iii) एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार राष्ट्रीयता क्या है? 1
(iv) राष्ट्रीयता के उपकरण क्या हैं? 1
(v) हिन्दी साहित्य-कोष में राष्ट्रीयता के प्रति क्या कहा है? 1
(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर— ....

....

....

....

....

....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए। 6

हाय रे मानव, नियति के दास!
हाय रे मनुपुत्र, अपना ही उपहास!
प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत,
सिन्धु से आकाश तक सबको किये भयभीत;
सृष्टि को निज बुद्धि से करना हुआ परिमेय,
चीरता परमाणु की सत्ता असीम, अजेय,
बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय,
जा रहा तू किस दिशा की ओर हो निरुपाय?
लक्ष्य क्या? उद्देश्य क्या? क्या अर्थ?
यह नहीं यदि ज्ञात तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ।

प्रश्न– (i) "जा रहा तू किस दिशा की ओर"–इस पंक्ति में कवि का क्या आशय है? 1
(ii) "यह नहीं यदि ज्ञात"–आधुनिक मानव को कौन-सी बात ज्ञात नहीं है? 1
(iii) प्रस्तुत काव्यांश का केन्द्रीय भाव क्या है? लिखिए। 1
(iv) "प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत"–इस पंक्ति में 'प्रच्छन्नता' से क्या आशय है? 1
(v) 'सिन्धु से आकाश तक सबको किये भयभीत' इस पंक्ति का मतलब क्या है? 1
(vi) कवि ने विज्ञान का श्रम कब व्यर्थ बताया है? 1

उत्तर— ....

....

....

YouTube channel RK study point 99

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 5. जनसंचार माध्यमों के लाभ बताइए। 2

उत्तर—

प्रश्न 6. "मैं वह खण्डहर का भाग लिये फिरता हूँ"—'आत्मपरिचय' कविता की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 7. जीजी के त्याग और दान के विषय में क्या विचार थे? 'काले मेघा पानी दे' अध्याय के आधार पर समझाइये। 2

उत्तर—

प्रश्न 8. अनंत काणेकर की कविता को लेखक द्वारा मास्टर की अपेक्षा अच्छा पढ़ने पर मास्टर ने क्या किया? 2

उत्तर—

प्रश्न 9. खुदाई में मिली नर्तकी की मूर्ति के संबंध में पुरातत्वविद मार्टिमटर वीलर ने क्या कहा था? 2

उत्तर—

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है? 3

अथवा

'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता में कवि ने किस तरह के बाजारीकरण को प्रस्तुत किया है और कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 11. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अक्सर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या आप इससे सहमत हैं? 3

अथवा

सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए किन विशेषताओं का होना आवश्यक है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 12. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है? लिखिए। 3

अथवा

'जूझ' आत्मकथात्मक अंश के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है? लिखिए।

उत्तर—

प्रश्न 13. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिन्धु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें। 3

YouTube channel RK study point 99

अथवा

यशोधर बाबू की पत्नी उनकी अपेक्षा अधिक प्रगतिशील है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—..........

प्रश्न 14. खाद्य पदार्थों में मिलावट : एक चुनौती विषय पर एक आलेख लिखिए। 3

अथवा

फीचर क्या है? बताते हुए फीचर और समाचार में कोई तीन अन्तर लिखिए।

उत्तर—..........

प्रश्न 15. कवि शमशेर बहादुर सिंह अथवा हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—..........

....

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने?

अथवा

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबोको दोऊ॥

उत्तर—..........

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हजरत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतु जाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था?

अथवा

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है। वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिल्कुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनन्द ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

उत्तर—

प्रश्न 18. सचिव, शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर की ओर से आयुक्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को एक अर्द्धशासकीय पत्र लिखिए, जिसमें सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की नियमित स्वास्थ्य जाँच का आग्रह हो। 4

अथवा

कार्यालय आयुक्त, जन स्वास्थ्य एवं अभियान्त्रिकी विभाग की ओर से ग्रीष्मकालीन जल वितरण की व्यवस्था हेतु आम सूचना सम्बन्धी एक विज्ञप्ति का प्रारूप लिखिए।

उत्तर—

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए–

(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. इन्टरनेट क्रान्ति : वरदान और अभिशाप
2. पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों का दायित्व
3. बढ़ते वाहन : घटता जीवन धन
4. बालिकाओं के लिए यौन शिक्षा का महत्त्व

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

मॉडल पेपर-7 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा–कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] [पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए–

(i) 'तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरंत' पंक्ति में 'नाथ' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ? 1
(अ) राम के लिए (ब) भरत के लिए
(स) लक्ष्मण के लिए (द) हनुमान के लिए

(ii) "राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है)" पंक्ति में अभी गीला पड़ा है का क्या कारण है? 1
(अ) घर का आँगन सूखा नहीं है (ब) आसमान की आर्द्रता के कारण
(स) अभी सूर्योदय नहीं हुआ है (द) आसमान से वर्षा हो रही है

(iii) रघुवीर सहाय की कविताएँ किस भाव पर केन्द्रित हैं? 1
(अ) राजनीति की पक्षधर (ब) सामाजिक दारुण विडम्बनाओं पर
(स) भौगोलिक सौन्दर्य पर (द) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर

(iv) रेणु ने अपनी रचनाओं से किस ओर लोगों का ध्यान खींचा? 1
(अ) शहर विकास की ओर (ब) अंचल की समस्याओं की ओर
(स) देश के विकास की ओर (द) राजनीति के विकास की ओर

(v) विज्ञान के मतानुसार वर्षा का आगमन होता है— 1
(अ) प्रकृति के संतुलन से (ब) प्रकृति संतुलन बिगड़ने से
(स) पर्यावरण प्रदूषण से (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(vi) "शिरीष के पुराने फूलों की अधिकार लिप्सु खड़खड़ाहट और नये पत्ते-फूलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालते हैं" पंक्ति में लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है? 1
(अ) साहित्यकार पर (ब) समाज पर
(स) राजनीति पर (द) उपर्युक्त सभी

(vii) जहाँ उपमेय में उपमान की आशंका हो और उपमेय को उपमान मान लिया जाये वहाँ अलंकार होता है— 1
(अ) भ्रान्तिमान (ब) उपमा
(स) सन्देह (द) उत्प्रेक्षा

(viii) 'अभियोग लगाना' शब्द का अंग्रेजी शब्द है— 1
(अ) Accuse (ब) Accord
(स) Acquire (द) Action

(ix) वॉच डॉग पत्रकारिता का मुख्य क्या उत्तरदायित्व है? 1

youtube channel RK study point 99

(अ) सरकार के कामकाज पर निगाह रखना (ब) उद्योग धंधों के कामकाज पर निगाह रखना
(स) खेलकूद के कार्यक्रमों पर निगाह रखना (द) अपराधियों के क्रियाकलापों पर निगाह रखना

(x) वेब पत्रकारिता कहलाती है 1
(अ) ऑनलाइन पत्रकारिता (ब) साइबर पत्रकारिता
(स) इन्टरनेट पत्रकारिता (द) उपर्युक्त सभी

(xi) सिन्धु सभ्यता का प्राचीन सुनियोजित शहर 'मुअनजो दड़ो' वर्तमान में कहाँ स्थित है? 1
(अ) भारत के पंजाब प्रान्त में (ब) पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में
(स) बांग्लादेश के सिन्ध प्रान्त में (द) चीन के सिन्ध प्रान्त में

(xii) यशोधर बाबू की पत्नी को बच्चों की तरफदारी करने में किसने उन्हें मॉड बना डाला? 1
(अ) आधुनिकता ने (ब) पाश्चात्य संस्कृति ने
(स) मातृ सुलभ मजबूरी ने (द) रूढ़िवादिता ने

उत्तर–

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) Council शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द है। 1

उत्तर– ....

(ii) जहाँ वाक्य में एक शब्द केवल एक ही बार आए और उस शब्द के दो या अधिक अर्थ निकलें वहाँ .... अलंकार होता है 1

उत्तर– ....

(iii) राम तो गधा है, उसे मत मारो–वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1

उत्तर– ....

(iv) .... कुछ संकेतमात्र होता है शेष समस्त अर्थ पाठक या श्रोता प्रसंगानुसार अन्यार्थ की कल्पना करता है। 1

उत्तर– ....

(v) सीमित क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली व्यापारव्यवहार की भाषा को .... कहते हैं। 1

उत्तर– ....

(vi) अंधे लोगों के लिए संकेत चिह्नों के रूप में लिखने-पढ़ने के माध्यम को .... कहते हैं। 1

उत्तर– ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

हमारे यहाँ शिक्षा तो वास्तव में ज्ञान के संप्रेषण की विधि है। विधि का अर्थ है–सिखलाना। लेकिन हम सिखलायेंगे क्या? इसके लिए हमारे यहाँ शब्द है–विद्या। विद्या को शिक्षा के माध्यम से संप्रेषित करते हैं। विद्या वह ज्ञातव्य विषय है, जो हम आप तक पहुँचाना चाहते हैं। हमारे यहाँ मनीषियों ने इस विद्या को अर्थकरी और परमार्थकरी दो भागों में बाँटा है। अर्थकरी वह विद्या है जो समाज में आपको उपयोगी बनाती है, जो आपको जीवन की आजीविका की सुविधाएँ देती है और परमार्थकरी विद्या वह विद्या है जिससे आप समष्टि से जुड़ते हैं। उसमें मानवीय मूल्य है, जिससे आपका हृदय बनता है, आपकी बुद्धि बनती है, आप उदार

बनते हैं, लोकशील बनते हैं, सद्भाव एवं समरसता से पूर्ण मानव बनते हैं, जिससे आपकी बुद्धि और हृदय का परिष्कार होता है।

प्रश्न– (i) समाज के लिए कौन-सी विद्या अधिक उपयोगी रहती है? 1
(ii) 'व्यक्ति' शब्द का विलोम शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1
(iii) विद्या क्या है? यह कितने प्रकार की होती है? 1
(iv) परमार्थकरी विद्या क्या है? 1
(v) शिक्षा किसे कहा गया है? 1
(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर– ....
....
....
....
....
....
....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥
हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है॥
यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी 'आर्य' हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े,
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े॥

प्रश्न– (i) भारतवर्ष को वृद्ध क्यों कहा गया है? 1
(ii) 'भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार' से क्या आशय है? 1
(iii) भारतीयों का उद्भव किससे हुआ और क्या कहलाये? 1
(iv) प्रस्तुत काव्यांश का केन्द्रीय भाव लिखिए। 1
(v) 'भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ' इस पंक्ति में किसका गुणगान किया है? 1
(vi) प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए। 1

उत्तर– ....
....
....
....

YouTube channel RK study point 99

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. श्रोताओं या पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से प्रिन्ट माध्यम, रेडियो और टी.वी. में सबसे सशक्त माध्यम कौनसा है? 2

उत्तर—

प्रश्न 6. रुबाइयों के आधार पर घर-आँगन में दीपावली व राखी के दृश्य-बिम्ब को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 7. 'शिरीष के फूल' के माध्यम से लेखक ने संघर्षशीलता एवं जिजीविषा की जो व्यंजना की है, उसे स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 8. मुअनजो-दड़ो की सभ्यता में हथियारों का न मिलना क्या सिद्ध करता है? 2

उत्तर—

प्रश्न 9. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी किस द्वन्द्व पर आधारित है? 2

उत्तर—

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. कौनसा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को तेज और धीमा कर देता है? बच्चन के गीत के आधार पर व्यक्त कीजिए। 3

अथवा

पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं—बच्चों का उड़ान से कैसा सम्बन्ध बनता है?

उत्तर—

प्रश्न 11. ढोलक की थाप मृत गाँव में किस प्रकार संजीवनी भरती थी? पठित कहानी 'पहलवान की ढोलक' के आधार पर लिखिए। 3

अथवा

द्विवेदीजी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 12. दत्ताजी राव से पिताजी पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे घटनाक्रम क्या होता? अनुमान लगाएँ। 3

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' पाठ के शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 13. यशोधर बाबू अपने ही घर में पूरी तरह बेचारे और असहाय हो चुके हैं। 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए। 3

YouTube channel RK study point 99

अथवा

लेखक एक जुझारू योद्धा की तरह संघर्ष करके जीवन को ऊँचा बनाता है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं? प्रमाण सहित सिद्ध कीजिए।

उत्तर— ....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 14. आलेख लेखन के समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? 3

अथवा

फीचर लेखन की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर— ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 15. कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' अथवा डॉ. भीमराव अम्बेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर— ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— 6

अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।

अथवा

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाय
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ़ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह।

उत्तर— ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए– 6

यह विडंबना की ही बात है, कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

अथवा

भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चन्द्र नहीं बन सकती; पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये, भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अन्तर्हित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस सम्बन्ध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए सम्भव नहीं।

उत्तर—

प्रश्न 18. एक अर्द्धशासकीय पत्र, शासन सचिव, शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को लिखकर विद्यालयों में शैक्षणिक वातावरण निर्माण हेतु ध्यान आकृष्ट किया जाए। 4

अथवा

संस्था प्रधान की ओर से पुलिस अधीक्षक, यातायात को एक उचित प्रारूप में पत्र लिखिए जिसमें अपने विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षु अनुज्ञप्ति-पत्र शिविर (लर्निंग लाइसेन्स कैम्प) लगाने का अनुरोध किया गया हो।

उत्तर—

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखिए–
(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. सूचना क्रान्ति के युग में भारत
2. मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी उद्योग
3. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
4. अन्तरिक्ष में चन्द्र मिशन एवं सूर्य मिशन

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

मॉडल पेपर-8 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा—कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] [पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश—

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए—

(i) 'कविता के बहाने' कविता का उद्देश्य है— 1

(अ) यान्त्रिकता के दबाव में कविता का अस्तित्व रहेगा
(ब) कविता में केवल दिखावा मात्र है
(स) वर्तमान में कविता के वजूद के प्रति आशंका
(द) कविता कोरी कल्पना मात्र है

(ii) सूर्योदय के साथ-साथ गाँव की सुबह के एक जीवन्त परिवेश की कल्पना की गई है। कैसे? 1

(अ) वहाँ सिल है (ब) राख से लीपा हुआ चौका है
(स) स्लेट पर चाक मलते अदृश्य बच्चे के हाथ
(द) उपर्युक्त सभी

(iii) "जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्याण" पंक्ति में कुम्भकरण ने जगदंबा किसे कहा है? 1

(अ) माँ दुर्गा को (ब) माँ महालक्ष्मी को
(स) माँ सीता को (द) मंदोदरी को

(iv) लेखिका के भ्रमण की भी एकान्त साथिन किसे कहा गया है? 1

(अ) हिरनी सोना (ब) कुत्ता बसंत
(स) बिल्ली गोधूलि (द) भक्तिन

(v) अगर हम जरूरत को तय कर बाजार में जाने के बजाय उसकी चमक दमक में फंस गये तो हमें सदा के लिए बेकार कौन बना सकता है? 1

(अ) असंतोष (ब) तृष्णा
(स) ईर्ष्या (द) उपर्युक्त सभी

(vi) आज के युग की क्या विडंबना है? 1

(अ) जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है (ब) जातिवाद के पोषकों की कमी है
(स) देश में जातिवाद नहीं है (द) जातिवाद के पोषक समर्थन नहीं करते हैं

(vii) देवनागरी लिपि में कौनसी भाषा की लिपि नहीं है? 1

(अ) हिन्दी (ब) मराठी
(स) पंजाबी (द) नेपाली

(viii) प्रधानमंत्री के सामने सबके मुँह सिले पड़े हैं। वाक्य में कौनसी शब्द शक्ति है? 1

youtube channel RK study point 99

(अ) रूढ़ा लक्षणा (ब) प्रयोजनवती लक्षणा

(स) आर्थी व्यंजना (द) शाब्दी व्यंजना

(ix) आज कौनसे वर्ग ने मीडिया के क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर प्रवेश किया है? 1

(अ) कृषक वर्ग (ब) मजदूर वर्ग

(स) पूँजीपति वर्ग (द) सैन्य वर्ग ने

(x) आज पत्रकारिता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ साइट है– 1

(अ) रेडिफ (ब) इन्फोसाइन

(स) बी.बी.सी. (द) डी.डी. भारती

(xi) यशोधर बाबू का सारा संयुक्त परिवार बिखर गया। किस कारण से? 1

(अ) आर्थिक दृष्टि के कारण (ब) एकतरफा लगाव के कारण

(स) पत्नी एवं बच्चों की उपेक्षा के कारण (द) सामाजिक परम्पराओं के कारण

(xii) लेखक को किस कारण ऐसा लगा कि मेरे कुछ नए पंख निकल आए हैं? 1

(अ) कक्षा का मॉनीटर बनाने के कारण (ब) बसन्त पाटील की मित्रता के कारण

(स) पाठशाला समारोह में उसकी कविता गवाने के कारण

(द) पढ़ाई में होशियार होने के कारण

उत्तर–

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) ऐनक हो तो कौनसा आपको कुछ दिखाई देता है? वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1

उत्तर– ....

(ii) हिन्दी को संविधान सभा ने .... को भारत की राजभाषा स्वीकार किया। 1

उत्तर– ....

(iii) जब सादृश्य के कारण एक वस्तु में अनेक वस्तुओं के होने की संभावना दिखाई पड़े और .... हो, वहाँ संदेह अलंकार होता है। 1

उत्तर– ....

(iv) कपि करि हृदय बिचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जानि, असोक-अंगार, दीन्हि हरषि उठ कर गहेउ॥ काव्य पंक्तियों में .... अलंकार है। 1

उत्तर– ....

(v) 'पुर्दाविराम' को हिन्दी में कहते हैं : 1

उत्तर– ....

(vi) Confederation शब्द का हिन्दी रूपान्तर होगा : 1

उत्तर– ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

समय वह सम्पत्ति है जो प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर की ओर से मिली है। जो लोग इस धन को संचित रीति से बरतते हैं वे शारीरिक सुख तथा आत्मिक आनन्द प्राप्त करते हैं। इसी समय-सम्पत्ति के सदुपयोग से एक जंगली मनुष्य

देवता-स्वरूप बन जाता है। इसी के द्वारा मूर्ख विद्वान, निर्धन धनवान और अनुभवी बन सकता है। संतोष, हर्ष या सुख तब तक मनुष्य को प्राप्त नहीं होता जब तक कि वह उचित तरीके से अथवा रीति से समय का सदुपयोग नहीं करता है। समय निस्सन्देह एक रत्न-राशि है। जो कोई उसे अपरिमित और अगणित रूप से अन्धा-धुन्ध व्यय करता है वह दिन-दिन अकिंचन, रिक्त हस्त और दरिद्र होता है। वह आजीवन खिन्न और समय को कोसता रहता है। सच तो यह है कि समय का सदुपयोग करना आत्मोन्नति तथा उसे नष्ट करना एक प्रकार की आत्महत्या है।

प्रश्न– (i) समय का सदुपयोग करने से क्या लाभ रहता है? बताइए। 1

(ii) 'काल' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिये। 1

(iii) मनुष्य आजीवन खिन्न क्यों रहता है? 1

(iv) समय का दुरुपयोग करने से मनुष्य को क्या हानि होती है? 1

(v) "समय रूपी सम्पत्ति किससे किसको मिली है?" 1

(vi) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर– ....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखण्ड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

प्रश्न– (i) "विचार लो कि मर्त्य हो"–इससे कवि का क्या तात्पर्य है? 1

(ii) पशु-प्रवृत्ति क्या बताई गई है? 1

(iii) "उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती"–सृष्टि में किसकी कीर्ति का प्रसार होता है? 1

(iv) "वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे"–इस पंक्ति में कौनसा भाव निहित है? 1

(v) कवि के अनुसार मनुष्यता क्या है? 1

(vi) प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए। 1

उत्तर– ....

YouTube channel RK study point 99

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. प्रिंट मीडिया व रेडियो संचार माध्यमों से सम्बन्धित दो-दो कमियाँ लिखिए। 2

उत्तर—

प्रश्न 6. 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना-कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है? 2

उत्तर—

प्रश्न 7. "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!" 'शिरीष के फूल' निबन्ध के आधार पर बताइए कि उपर्युक्त वाक्य किसके लिए और क्यों कहा गया है? 2

उत्तर—

प्रश्न 8. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में मानव की किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है? 2

उत्तर—

प्रश्न 9. लेखक को कैसे विश्वास हुआ कि कवि भी अपने जैसा ही मनुष्य होता है? 2

उत्तर—

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. कविता 'पतंग' में बिम्बों के द्वारा काव्य-सौन्दर्य प्रकट किया गया है। स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

'आत्म-परिचय' कविता में कवि ने क्या प्रेरणा या सन्देश दिया है?

उत्तर—

प्रश्न 11. 'ऐसे विषम प्रतिद्वन्द्वियों की स्थिति कल्पना में भी दुर्लभ है।' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा? स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

'पहलवान की ढोलक' में लेखक ने आँचलिक भाषा को महत्त्व दिया है। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 12. यशोधर बाबू के बच्चों का कौन-सा पक्ष आपत्तिजनक है? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए। 3

अथवा

'मुअनजो-दड़ो' के प्रसिद्ध पुराने बौद्ध-स्तूप की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 13. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू और उनकी पत्नी के बीच वैचारिक अन्तर में पीढ़ी के बीच का वैचारिक अन्तर दिखाई देता है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

वसन्त पाटिल से दोस्ती होने के बाद लेखक के व्यवहार में कौनसे परिवर्तन हुए?

YouTube channel RK Study point 99

उत्तर—

प्रश्न 14. रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता विषय पर एक आलेख लिखिए। 3

अथवा

'जंक फूड की बढ़ती घुसपैठ' विषय पर एक फीचर लेखन कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 15. कवि तुलसीदास अथवा हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में

उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा
देता है?

अथवा

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुःख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल।

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

....

....

....

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा।

अथवा

इस दण्ड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं; पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगौझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया।

उत्तर—..

....

प्रश्न 18. अपनी ग्राम पंचायत के सचिव की ओर से अपने जिला कलेक्टर को गाँव में फैली मौसमी बीमारियों, यथा—मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया से बचाव हेतु आवश्यक निर्देशों की मांग किये जाने हेतु कार्यालयी पत्र लिखिए। 4

अथवा

प्रशासनिक सुधार विभाग, शासन सचिवालय की ओर से समस्त सरकारी कार्यालयों में स्वच्छता अभियान चलाने हेतु एक अधिसूचना का प्रारूप लिखिए।

उत्तर—..

....

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए—

(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली : प्रभाव
2. राजस्थान में बढ़ता जल संकट
3. महिला सशक्तिकरण
4. जी-20 शिखर सम्मेलन की उपयोगिता

उत्तर—..

....

YouTube channel RK study point 99

मॉडल पेपर-9 (अभ्यासार्थ)

उच्च माध्यमिक परीक्षा–कक्षा-12

अनिवार्य हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट] [पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड 'अ'

प्रश्न 1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए–

(i) ''तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह'' पंक्ति में 'वाह-वाह' कौन करते हैं? 1
(अ) तमाशा देखने वाले (ब) विद्वान लोग
(स) मूर्ख जो अर्थ नहीं समझते (द) भाषा को जटिल बनाने वाले

(ii) 'विप्लव-रव में छोटे ही हैं शोभा पाते' पंक्ति में किसकी आकांक्षाएँ 'बादल राग' में पुकार रही हैं? 1
(अ) किसान की (ब) मजदूर की
(स) दलित की (द) उपर्युक्त सभी की

(iii) ''तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया'' किसे कहा गया है? 1
(अ) आसमान में उड़ती हुई रंग-बिरंगी पतंगों को
(ब) बाजार में बिकने वाली रंग-बिरंगी पतंगों को
(स) बगीचों में उड़ने वाली तितलियों को
(द) बच्चों के सपनों की रंग-बिरंगी दुनिया को

(iv) बाजार के जादू की जकड़ से बचने का सीधा-सा उपाय है— 1
(अ) बाजार जाओ तो खाली हाथ न हो (ब) बाजार जाओ तो खाली मन न हो
(स) बाजार जाओ तो खाली जेब न हो (द) बाजार कभी अकेले मत जाओ

(v) नये राजकुमार के सत्ता संभालते ही चपेटाघात में दंगल का स्थान किसने लिया? 1
(अ) क्रिकेट ने (ब) फुटबॉल ने
(स) घोड़ों की रेस ने (द) जिमनास्टिक ने

(vi) लक्ष्मी के पिता ने शास्त्र से आगे रहने की ख्याति कैसे कमाई? 1
(अ) पुत्री को अच्छा पढ़ा-लिखाकर (ब) पुत्री का अच्छा पालन पोषण कर
(स) पुत्री का समय पूर्व विवाह कर (द) पुत्री से अगाध प्रेम कर

(vii) भ्रान्तिमान अलंकार का लक्षण कौनसा है? 1
(अ) उपमेय को उपमान के समान बनाना (ब) उपमेय को जबरदस्ती उपमान मानना
(स) उपमान से बढ़कर उपमेय को मानना (द) उपमेय को ही उपमान मानना

(viii) 'अधिपत्र' शब्द का अंग्रेजी शब्द है— 1
(अ) Visa (ब) Valid
(स) Warrant (द) Will

(ix) रेडियो समाचार की संरचना किस शैली में होती है? 1

Youtube channel RK study point 99

(अ) वर्णनात्मक शैली (ब) विवरणात्मक शैली
(स) उल्टा पिरामिड शैली (द) अन्वेषणात्मक शैली

(x) हिन्दी की वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है? 1
(अ) हिन्दी के फोन्ट की है (ब) डायनैमिक फोन्ट है
(स) हिन्दी रुचिकर भाषा नहीं है (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(xi) यशोधर बाबू किसके आदर्शों पर चलते थे? 1
(अ) माता-पिता (ब) गाँधीजी
(स) कृष्णानन्द पाण्डे (द) मेनन

(xii) सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध था— 1
(अ) समाज पोषित (ब) राज पोषित
(स) धर्म पोषित (द) प्रकृति पोषित

उत्तर–

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) 'नियोक्ता' के लिए अंग्रेजी में शब्द प्रयुक्त होता है : 1

उत्तर—..............................

(ii) 'को तुम? राधे में हरि प्यारी, वानर का इहा का काम।' काव्य पंक्ति में .... अलंकार है। 1

उत्तर—..............................

(iii) जब शब्दार्थ की व्यंजना अर्थ पर निर्भर रहती है। उसका पर्याय रख देने पर भी अभीष्ट की पूर्ति हो जाती है, वहाँ .... होती है। 1

उत्तर—..............................

(iv) युवा पीढ़ी मोबाइल देखते समय हवा से बातें करती है। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। 1

उत्तर—..............................

(v) व्याकरण के .... अंग हैं। 1

उत्तर—..............................

(vi) किसी राष्ट्र के संविधान में मान्य, शासन के कार्यों में प्रयुक्त तथा समस्त राष्ट्र में व्यवहार योग्य भाषा को .... कहते हैं। 1

उत्तर—..............................

प्रश्न 3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता राष्ट्रीय चरित्र का पुनर्मूल्यांकन है। भारत नारों और बिल्लों पर नहीं रह सकता, उसे जीने के लिए ठोस आधार चाहिए। यह ठोस आधार युवा पीढ़ी को अनुप्राणित किये बिना, राष्ट्र की आत्मा को जगाये बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। विदेशी मुद्रा, विदेशी मशीन या विदेशी पूँजी के आयात से त्याग, परिश्रम और अनुशासन के भाव की पूर्ति नहीं की जा सकती, आत्म-विश्वास और राष्ट्रीय चरित्र नहीं गढ़ा जा सकता। स्वतन्त्रता के पश्चात हम जिस तेजी से आसानी की ओर भागे, उसी कारण आज हमारी कठिनाइयों में वृद्धि

हुई है। समस्याओं की चुनौती स्वीकार न करके हम उनका विकल्प खोजने में लगे रहे हैं। आज आवश्यकता एक मनस्वी, राष्ट्रप्रेमी, स्वावलम्बी और अनुशासित राष्ट्रीय-चरित्र के विकास की है।

प्रश्न– (i) राष्ट्रीय जागरण के लिए क्या करना जरूरी है? 1
(ii) 'बढ़ावा' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1
(iii) राष्ट्रीय चरित्र के विकास के लिए किसकी आवश्यकता है? 1
(iv) आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है? 1
(v) देश में जीने के लिए ठोस आधार किसके बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता? 1
(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर—..............................
....
....
....
....
....

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

ओ हिमानी चोटियों के सजग प्रहरी
तंग सूनी घाटियों के सबल रक्षक,
तू न एकाकी समझना आपको,
देश तेरे साथ अन्तिम श्वास तक!
तू सिपाही सत्य का स्वातन्त्र्य का है,
न्याय का और शांति का है तू सिपाही,
प्राण देकर प्राण के ओ प्रबल प्रहरी!
जा रहा तू देश हित बलि पंथ राही!
जा कि तेरे साथ है इस देश का बल,
साथ तेरे देश की हर भावना है,
साथ धन जन, साथ तन मन
साथ, तेरी विजय की शुभ कामना है!

प्रश्न– (i) ''हिमानी के सजग प्रहरी'' किसके लिए कहा गया है? 1
(ii) सिपाही को किसका रक्षक बताया गया है? 1
(iii) प्रस्तुत काव्यांश का केन्द्रीय भाव क्या है? बताइए। 1
(iv) ''जा कि तेरे साथ है'' सिपाही के साथ कौन है? 1
(v) इस काव्यांश में किसका चित्रण किया गया है? 1
(vi) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर—..............................
....
....
....

Youtube channel pk study point 99

....

....

खण्ड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. खोजपरक पत्रकारिता क्या होती है? 2

उत्तर—..........

....

....

प्रश्न 6. "खेती न किसान को——हहा करी" कवित्त में किस स्थिति का चित्रण हुआ है? स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—..........

....

....

....

प्रश्न 7. "भक्तिन की कहानी अधूरी है, पर उसे खोकर मैं इसे पूरा नहीं करना चाहती।" लेखिका ने ऐसा कब और क्यों कहा? समझाकर लिखिए। 2

उत्तर—..........

....

....

....

प्रश्न 8. कविता लेखन में लेखक की सहायता मराठी शिक्षक कैसे करते थे? 2

उत्तर—..........

....

....

....

प्रश्न 9. 'डीके-जी' हलका की विशेषता बताइये। 2

उत्तर—..........

....

....

....

खण्ड 'स'

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 10. 'बगुलों के पंख' कविता में वर्णित भाव-कल्पना पर प्रकाश डालिए। 3

अथवा

भ्रातृ-शोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर-लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर—..........

....

....

....

प्रश्न 11. जातिप्रथा किस प्रकार मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर निष्क्रिय बना देती है? स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर—..........

....

....

....

प्रश्न 12. एक गुरु किस प्रकार एक विद्यार्थी के जीवन को नई दिशा दे सकता है? 'जूझ' पाठ के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

मुअनजो-दड़ो में 'रंगरेज का कारखाना' किस रूप में था? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर—..........

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 13. आप कैसे कह सकते हैं कि यशोधर बाबू किशनदा के मानस-पुत्र हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' अध्याय में किसका वर्णन किया गया है और इसका क्या उद्देश्य है?

उत्तर—..........

....

YouTube channel RK study point 99

प्रश्न 14. 'तेल की धार से बढ़ती महँगाई की मार' विषय पर एक आलेख लिखिए।

अथवा

'देश का विकास गाँवों पर निर्भर' विषय पर फीचर लेखन कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 15. कवि उमाशंकर जोशी अथवा महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर—

खण्ड 'द'

प्रश्न 16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए— 6

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे।
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं
आप और वह दोनों

अथवा

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और ....
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है

उत्तर—

प्रश्न 17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो न जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उ बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कप बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी।

अथवा

शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते, तब तक जमे रहते हैं।

उत्तर—

प्रश्न 18. मोहल्ला विकास समिति के अध्यक्ष के नाते जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर अपनी नवनिर्मित बस्ती के नियमितीकरण करने की व्यवस्था 'प्रशासन शहर के संग' जैसे आयोजन किए जाने की तिथि निश्चित करने के लिए अनुरोध किया जाये। 4

अथवा

जिला निर्वाचन अधिकारी, अजमेर द्वारा मतदाता सूची में नाम जोड़ने या हटाने, नामावली सुधार को लेकर अधिसूचना का एक प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर—

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए–

(शब्द सीमा : 300 शब्द) 5

1. बेरोजगारी की समस्या : कारण और निराकरण के उपाय
2. विद्यार्थी-जीवन एवं अनुशासन
3. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
4. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता

उत्तर—

YouTube channel RK study point 99

संजीव डेस्क वर्क अनिवार्य हिन्दी—कक्षा 12 के साथ निःशुल्क

अनिवार्य हिन्दी—कक्षा 12
संजीव डेस्क वर्क का सम्पूर्ण हल

मॉडल पेपर 2

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(अ)	(स)	(स)	(अ)	(द)	(अ)	(अ)	(ब)	(द)	(द)	(अ)	(द)

2. (i) संस्कृत (ii) आर्थी व्यंजना (iii) यमक (iv) विभावना (v) Guarantee (vi) सम्पादन।

3. (i) लेखक के अनुसार वह देश उन्नतिशील होता है, जिसके नागरिकों में देशप्रेम और देशहित की भावना रहती है।
 (ii) 'उन्नति' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में 'प्रगति' प्रयुक्त हुआ है।
 (iii) हमें अपने देश के इतिहास से देश-हितार्थ सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा मिलती है।
 (iv) देश की सर्वांगीण उन्नति एवं विकास के लिए देशवासियों में स्वदेश-प्रेम होना परमावश्यक है।
 (v) देशभक्तों ने सर्वस्व समर्पण करके स्वदेश प्रेम का अद्भुत परिचय दिया है।
 (vi) **शीर्षक**—'देशप्रेम का महत्त्व' या 'स्वदेश-प्रेम'।

4. (i) बाल्यकाल में माता कौशल्या हमेशा श्रीराम के नेत्र कमल के समान होने के कारण उन्हें राजीव नयन कहकर पुकारती थीं।
 (ii) राम युद्ध में विजयश्री प्राप्त करने के लिए 'महाशक्ति' की आराधना कर रहे थे। 'महाशक्ति' राम की परीक्षा लेने हेतु पूजार्थ रखे हुए कमल पुष्प को चुरा लेती हैं।
 (iii) राम ने रावण को पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना की। रावण ने उनकी प्रिय पत्नी का अपहरण कर लिया था। इसलिए दोनों के मध्य युद्ध चल रहा था।
 (iv) महाशक्ति की उपासना पूर्ण करने हेतु कमल पुष्प की आवश्यकता थी जिसे महाशक्ति ने परीक्षा हेतु चुरा लिया था इसलिए राम अपनी आँखों रूपी दो नीलकमलों की बात कर रहे हैं।
 (v) राम को शक्ति की आराधना की पूर्णता करने के लिए कमल का फूल नहीं मिला जिसे परीक्षा लेने के लिए महाशक्ति ने चुरा लिया था।
 (vi) राम यदि आसन छोड़ देते तो उन्हें महाशक्ति प्राप्ति की सिद्धि नहीं मिलती।

YouTube channel Rk study point 99

खण्ड-ब

5. इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान प्रदान ही वास्तव में इन्टरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम किसी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, एवं डायरियों के जरिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।

6. कवि ने यह भाव व्यक्त किया है कि बच्चे खेल में अपने पराये घर का भेद नहीं करते हैं, वे सभी घरों में जाकर साथियों के साथ खेलकर आनन्दित होते हैं। इसी प्रकार कविता भी समानता का व्यवहार कर सभी को आनन्दित करती है। इसलिए खेलकूद मिलजुलकर खेलकर सफल बनाना चाहिए।

7. नौ वर्ष की अवस्था में माता पिता की मृत्यु, तब विधवा सास द्वारा पालन-पोषण करने से लुट्टनसिंह का प्रारंभिक जीवन संघर्षपूर्ण रहा। गाँव में महामारी फैलने पर, दंगल में पहलवानों का मुकाबला करने में, बाद में सास व पत्नी की मृत्यु होने और दो पुत्रों के शवों को स्वयं दफनाने में तथा जीवनान्त तक ढोलक बजाते रहने से लुट्टनसिंह ने जिजीविषा का परिचय दिया।

8. यशोधर बाबू ने किशनदा को घर और दफ्तर में विभिन्न रूपों में देखा लेकिन किशनदा की जो छवि उनके मन में बसी हुई है, वह सुबह की सैर को निकले किशनदा की ही है, जिसमें वे कुर्ते-पजामे के ऊपर ऊनी गाउन पहने हुए हैं, सिर पर गोल बिस्कुटी टोपी लगी हुई है, पाँवों में देशी खड़ाऊ धारण किए हुए हैं और हाथ में (कुत्तों को भगाने के लिए) एक छड़ी लिए हुए हैं।

9. 'जूझ' कहानी के लेखक एवं नायक आनन्द यादव ने अपने मराठी के अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर को अपना साहित्यिक गुरु बनाया। क्योंकि वे पढ़ाते समय स्वयं रम जाते थे। उन्हें काव्यशास्त्र में लय गति, आरोह-अवरोह एवं छन्द-अलंकार का अच्छा ज्ञान था इसलिए उनसे प्रभावित होकर उन्हें अपना गुरु बनाया।

खण्ड-स

10. तुलसीदास ने स्पष्ट कहा है कि ईश्वर-भक्ति रूपी मेघ या बादल ही पेट की आग को बुझा सकते हैं। तुलसी का यह काव्य-सत्य उस युग में भी था तो आज भी यह सत्य है। प्रभु की भक्ति करने से सत्कर्म की प्रवृत्ति बढ़ती है। प्रभु की प्रार्थना से पुरुषार्थ और कर्मनिष्ठा का समन्वय बढ़ता है। इससे वह व्यक्ति ईमानदारी से पेट की आग को शांत करने अर्थात् आर्थिक स्थिति सुधारने और आजीविका की समुचित व्यवस्था करने में लग जाता है। इस तरह कर्मनिष्ठ भक्ति से तुलसी का यह काव्य-सत्य वर्तमान का सत्य दिखाई देता है। कोरी अन्ध-आस्था एवं कर्महीनता से की गई भक्ति का दिखावा करने से व्यक्ति पेट की आग नहीं बुझा पाता है।

अथवा

फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में हिन्दी का एक घरेलू रूप दिखाई पड़ता है। उनकी रुबाइयों की भाषा और प्रसंग सूरदास के वात्सल्य वर्णन की सादगी की याद दिलाता है। इनमें नन्हे शिशु की अठखेलियाँ, माँ-बेटे की कुछ मनमोहक अदाएँ तथा रक्षाबन्धन का एक दृश्य प्रस्तुत है, जो अपने आप में सहज, सरल और भावात्मकता से पूरित है। वात्सल्य के मनोरम दृश्य को देखिए—

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद भरी

*

नहला के छलके छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके

*

जब घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े।

इस वात्सल्य वर्णन में प्यार, कोमलता, ममता आदि के होते वर्णन कन्हैया और माता यशोदा की वत्सलता, आनन्दानुभूति आदि की याद दिलाते हैं।

11. स्त्री को घर गृहस्थी चलानी होती है, उसे घर की सुविधाओं एवं जरूरतों का ध्यान रखना पड़ता है। 'माया' शब्द से धन सम्पत्ति तथा सांसारिक आकर्षण की ओर संकेत हुआ है। घर गृहस्थी की जरूरतों की पूर्ति को लेकर पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ कुछ अधिक ही सजग रहती हैं। माया जोड़ना या साधन सुविधाओं का विस्तार करना प्रत्येक व्यक्ति चाहता है, यह प्रकृति प्रदत्त गुण है, परन्तु कभी कभी परिस्थितिवश भी ऐसा करना पड़ता है। जैसे स्त्रियाँ स्वर्ण को सुन्दर, चाँदी भारी एवं सामान दिखाने की इच्छा रखती हैं। इस कारण वे कीमती पात्र आदि प्रसाधन सामग्री, घर का सजावटी सामान तथा नये कपड़े आदि के साथ आभूषणों की खरीद करती हैं। इस तरह की प्रवृत्तियों के कारण वे माया को जोड़ने में विवश हो जाती हैं।

अथवा

आर्यसमाजी विचारधारा वाला लेखक इन्द्र देवता को मनाने के लिए तथा पूजा पाठ सम्बन्धी सभी क्रिया-कलापों को अंधविश्वास मानता है। इसके विपरीत अपनी जीजी के विचारानुसार एवं स्नेहवश वह सभी कार्य करते भी हैं। उनकी जीजी कहती है कि कुछ पाने के लिए कुछ देना भी पड़ता है। त्याग के बिना दान नहीं होता है। लेखक ने भ्रष्टाचार की समस्या को उठाते हुए कहा है कि सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का लाभ गरीबों तक नहीं पहुँच रहा है। काले मेघा के दल उमड़ रहे हैं पर आज भी गरीब की गगरी फूटी हुई है।

12. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के प्रमुख पात्र यशोधर बाबू संस्कारी व्यक्ति हैं। वे पुरानी पीढ़ी और प्राचीन जीवन मूल्यों को अपनी परंपरावादी सोच के आधार पर श्रेष्ठ मानते हैं, जबकि उनके बेटा-बेटी तथा उनकी ही देखा-देखी उनकी पत्नी भी नयी पीढ़ी के जीवन मूल्यों का अनुसरण करती है। फलस्वरूप घर में यशोधर बाबू का मतभेद ही नहीं चलता बल्कि हर बात में उनका विरोध होता है। तब वे दफ्तर से देर शाम तक घर पहुँचते हैं तथा किशनदा के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं।

अथवा

मुअनजो-दड़ो के सारे अवशेष जमीन के अन्दर दबे पड़े हैं। केवल एक बौद्ध स्तूप सबसे ऊँचे चबूतरे पर बना हुआ है। यह चबूतरा पच्चीस फुट ऊँचा है। इस ऊँचे चबूतरे पर छब्बीस सदी पहले बनी ईंटों के दम पर स्तूप को आकार दिया गया था। चबूतरे पर भिक्षुओं के कमरे भी बने हुए हैं। सन 1922 में जब राखालदास बनर्जी आए तब वे इसी स्तूप की खोजबीन करने के संबंध में यहाँ आए थे। उन्होंने इस स्तूप के चारों ओर खुदाई करवायी। बाद में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल के निर्देश पर खुदाई का व्यापक अभियान हुआ है।

YouTube channel RK study point 99

13. 'जूझ' उपन्यास के पठितांश के आधार पर लेखक के चरित्र की निम्न विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं—

पढ़ने की ललक—लेखक को उसके दादा के द्वारा पढ़ाई छुड़वाने पर वह दत्ताजी राव की सहायता से पढ़ने की अनुमति प्राप्त करता है।

दूरदर्शी—लेखक दूरदर्शी है। वह यह जानता है कि पढ़ने से भविष्य बन सकता है।

कठोर परिश्रमी तथा लगनशील—लेखक कठोर परिश्रमी और लगनशील है। वह अपने कठोर परिश्रम से दादा की शर्तों को पूरा करता है और अपनी लगनशीलता के कारण कक्षा में होशियार बच्चों में गिना जाने लगता है।

अथवा

मुअनजो-दड़ो में बौद्ध स्तूप के समीप एक महाकुण्ड अवस्थित है। यह कुण्ड चालीस फुट लम्बा और पच्चीस फुट चौड़ा है तथा इस कुण्ड की गहराई सात फुट है। कुण्ड के उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। इसके तीन तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं। उत्तर में दो पंक्तियों में स्नान-घर बने हुए हैं। उन बने स्नानघरों की संख्या आठ है। उन स्नानघरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि किसी का भी दरवाजा दूसरे के सामने नहीं खुलता है। यह कुण्ड सिद्ध वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। इस कुण्ड की खास बात यह है कि यहाँ पक्की ईंटों का जमाव है। कुण्ड का पानी रिस न सके और बाहर का 'अशुद्ध पानी' इस कुण्ड में न आ सके, इसके लिए कुण्ड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है। साथ ही पार्श्व की दीवारों के साथ दूसरी दीवार खड़ी की गई है जिसमें सफेद डामर का प्रयोग किया गया है।

14. किसी घटना की सत्यता या तथ्यता फ़ीचर का मुख्य तत्त्व होता है। एक अच्छे फ़ीचर को किसी सत्यता या तथ्यता पर आधारित होना चाहिए। फ़ीचर का विषय सनसनीखेज, रोचक, ज्ञानवर्धक, उत्तेजक और परिवर्तन सूचक होना चाहिये। फ़ीचर को शुरू से लेकर अंत तक मनोरंजक शैली में लिखा जाना चाहिये। फ़ीचर को किसी विषय से सम्बन्धित लेखक के निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति होनी चाहिये। फ़ीचर लेखक किसी घटना की सत्यता या तथ्यता को अपनी कल्पना का पुट देकर फ़ीचर में तब्दील करता है। फ़ीचर को सीधा सपाट न होकर चित्रात्मक होना चाहिये। इसकी भाषा सरल, सहज और स्पष्ट होने के साथ-साथ कलात्मक और बिम्बात्मक होनी चाहिये।

अथवा

आलेख लिखते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए तभी उसकी प्रक्रिया सम्पूर्ण होती है—

(1) आलेख के लिए संक्षिप्त व सारगर्भित शीर्षक का चयन करें।

(2) अच्छे शीर्षक में 3 से 5 शब्द हो सकते हैं।

(3) विषय के सभी पहलुओं पर अच्छी तरह विचार कर उसे अलग-अलग बिन्दुओं में बाँट लें।

(4) प्रत्येक बिन्दु पर अपनी स्पष्ट व तर्कसंगत राय रखें।

(5) विषय के अलग-अलग पहलुओं की अलग-अलग अनुच्छेद में चर्चा करें।

(6) विवेचन-विश्लेषण में प्रामाणिक आँकड़ों या उद्धरणों का प्रयोग करें।

(7) प्रायः आलेख का आरम्भ विषय से सम्बन्धित कुछ आँकड़ों, तथ्यों या उद्धरणों से करते हैं।

15. आधुनिक हालावादी कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म सन् 1907 में इलाहाबाद में हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये प्राध्यापक एवं विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। ये हालावाद के प्रवर्तक कवि रहे हैं। इन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता के बजाय सीधी-सादी जीवंत भाषा में तथा संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही। व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहज अनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति बच्चनजी की कविताओं में प्रकट हुई। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'आकुल-अंतर', 'मिलन-यामिनी' (काव्य संग्रह); 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर', 'बसेरे से दूर', 'दशद्वार से सोपान' (आत्मकथा); प्रवासी की डायरी (डायरी) इत्यादि का रचित संसार है। इनका निधन सन् 2003 में मुम्बई में हुआ।

अथवा

महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में 1907 ई. में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर के मिशन स्कूल में हुई थी। नौ वर्ष की उम्र में इनका विवाह हो गया पर इनका अध्ययन चलता रहा। ये 1920 में बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहती थीं परन्तु महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आने के बाद समाज सेवा की ओर उन्मुख हो गईं। इनका कार्यक्षेत्र बहुमुखी रहा। इनकी रचनाएँ—नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा (काव्य संग्रह); अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण); शृंखला की कड़ियाँ, आपदा, भारतीय संस्कृति के स्वर (निबन्ध) आदि हैं। पद्म विभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कारों से सम्मानित लेखिका की मृत्यु 1987 ई. में हुई। इनकी कविताओं में निजी वेदना व पीड़ा समाहित है। इनके गद्य में सामाजिक सरोकारों का चिंतन है।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**—प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि ने स्वयं के जीवन-शैली तथा संसार के व्यवहार का परिचय दिया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मैं अपने हृदय में नये-नये भाव रखता हूँ। मैं अपने ही हृदय द्वारा दिये गए उपहारों (सुख-दुःख) को लिये घूमता रहता हूँ। मैं उन्हीं मनोभावों को लेकर उड़ता-घुमड़ता रहता हूँ। मैं किसी अन्य के इशारे पर नहीं चलता, मैं अपने हृदय की भावना को ही श्रेष्ठ भेंट मानकर अपनाता रहता हूँ। मुझे यह सारा संसार अधूरा लगता है, इसमें प्रेम का अभाव-सा है। यह इसी कारण मुझे अच्छा नहीं लगता है। मेरे मन में प्रेममय सुन्दर सपनों का संसार है और उसी को लेकर मैं आगे बढ़ता रहता हूँ, अर्थात् मैं अपनी भावनाओं के अनुसार प्रेममय संसार की रचना करता रहता हूँ।

कवि कहता है कि मेरे हृदय में प्रेम की अग्नि जलती रहती है और मैं उसी की आँच से स्वयं तपा करता हूँ। कवि कहता है कि मैं प्रेम-दीवानगी में मस्त होकर जीवन में सुख-दुःख दोनों दशाओं में मग्न रहता हूँ। यह संसार विपदाओं का सागर है, मैं इसे प्रेमरूपी नाव से पार करना चाहता हूँ। इसलिए मैं भव-सागर की लहरों पर प्रेम की उमंग और मस्ती के साथ बहता रहता हूँ। इस तरह मैं प्रसन्नतापूर्वक जीवन-नाव से संसार-सागर के किनारे लग जाता हूँ। सभी परिस्थितियों में मैं मस्त रहता हूँ।

YouTube channel RK study point 99

विशेष–(1) कवि संसार की रीतियों से अलग स्वयं के सुख-दु:ख एवं प्रेम में मग्न रहने का भाव प्रकट करते हैं। उनका कवित्व संसार ही उनका जीवन है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। भव-सागर में रूपक अलंकार का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली एवं प्रसाद गुण का प्रयोग हुआ है। तुकान्त व गेयता प्रमुख गुण है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि उमाशंकर जोशी द्वारा लिखित उनकी कविता 'छोटा मेरा खेत' से लिया गया है। कवि इसमें कृषक समान भावनाएँ व्यक्त करता है कि उनके पास भी चौकोर कागज रूपी छोटा सा खेत है। जिस पर काव्य रचना रूपी खेती करता है।

व्याख्या–कवि कहता है कि कागज रूपी खेत में जब कविता रूपी फल झूमने लगता है तब उसमें अनुभूति एवं संवेदना की अद्भुत रस धाराएँ फूटने लगती हैं। जो अमृत के समान मधुर रस का आनन्द देने वाली होती हैं। कवि कहता है कि जो रचना उसने पल-भर में रची थी उसका फल व आनन्द अनन्त काल तक सुखदायक रहेगा। अर्थात् उनकी रचना की मिठास व ताजगी कभी खत्म नहीं होगी। साहित्य का रस जितना लुटाया जाये वह उतना ही बढ़ता जाता है। कविता के रस का पात्र अर्थात् रचना का अनन्त आनन्द कभी खत्म नहीं होगा, सदैव भरा रहेगा। ऐसा है मेरा छोटा चौकोर कागज रूपी खेत। भाव यह है कि कवि अपने रचना-कर्म को कृषक कर्म के सदृश मान सदैव फलदायी मानते हैं।

विशेष–(1) कर्म-रचना का सुन्दर वर्णन कवि ने किया है। कविता का आनंद शाश्वत है।

(2) खड़ी बोली हिन्दी, तत्समप्रधान भाषा तथा रूपक और श्लेष अलंकार हैं।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत गद्यांश लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'भक्तिन' संस्मरण से लिया गया है। इसमें भक्तिन की बेटी के विधवा होने तथा जेठों के बेटों द्वारा सम्पत्ति हड़पने की कूटनीति का वर्णन है।

व्याख्या–लेखिका ने बताया कि दुर्भाग्य के कारण जिस प्रकार भक्तिन विधवा हो गई थी, उसके बाद भाग्य की जिद ने उसकी बेटी को भी विधवा कर दिया था। जो दामाद भक्तिन का सहारा बना हुआ था, भगवान ने उसे भी बुला लिया। इसे भक्तिन का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। अभी तक बहनोई से पार नहीं पा सकने वाले जेठ के लड़के पुन: अपनी विधवा बहन का विवाह अपने तीतर लड़ाने वाले साले से करना चाहते थे, ताकि भक्तिन की सारी सम्पत्ति उनके हाथों में रहे। लेकिन अपनी माँ की तरह बेटी भी समझदार थी, उसने अपने भाई के साले से विवाह करने को मना कर दिया। जिससे कुछ समय तक के लिए दोनों माँ-बेटी आराम से रहीं।

विशेष–(1) सम्पत्ति हड़पने के लिए चचेरे भाइयों की चाल प्रकट हुई है।

(2) तत्सम प्रधान भाषा व देशज भाषा का अधिक प्रयोग है।

(3) 'पार न पाना' मुहावरे का प्रयोग है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण डॉ. भीमराव आम्बेडकर द्वारा लिखित 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' लेख से लिया गया है। इसमें लेखक ने एक राजनेता की दृष्टि से 'समता' के प्रति कैसा दृष्टिकोण होना चाहिए, बताया है।

व्याख्या–लेखक कहते हैं कि जाति प्रथा या आदर्श समाज दोनों का ही आधार 'समता' पर टिका है। लेकिन समता का उचित भाव या अवस्था सिर्फ यहीं आकर खत्म नहीं होती है। इसका एक और बड़ा आधार है और वह है एक राजनेता का जनता के प्रति संतुलित दृष्टिकोण। एक राजनीतिज्ञ का सामना जनता की बहुत बड़ी संख्या से होता है। राजनेता के लिए बहुत बड़ी जनसंख्या सिर्फ जनता का पर्याय है उसके पास अपनी जनता से व्यवहार करते समय, उनसे जानकारी लेते समय, उनकी आवश्यकताओं को समझने के लिए न तो पर्याप्त समय होता है और न ही तथ्यपूर्ण जानकारी। राजनीतिज्ञ के लिए यह समय बहुत मुश्किल होता है कि वह अपनी जनता की जरूरतों एवं क्षमताओं के आधार पर जरूरी व आवश्यक व्यवहार अलग-अलग तरह से कर सके। आशय यही है कि 'समता' ही वह तथ्य है जिसे अपनाकर बड़ी मात्रा में सबके साथ समान व्यवहार संभव भी है और अपेक्षित भी है।

विशेष–(1) लेखक ने समता द्वारा समाज की आदर्श कल्पना की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

(2) भाषा सरल-सहज व प्रवाहमयी है।

18. **प्रेषक**–
जिला कलेक्टर
कलेक्टर-कार्यालय,
उदयपुर।

प्रेषिति– श्रीमान् राजस्व सचिव महोदय,
शासन सचिवालय, राजस्थान सरकार,
जयपुर।

पत्रांक-28/08/20XX दिनांक 05 सितम्बर, 20XX

विषय–स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने के सम्बन्ध में।

प्रियश्री................................,

आप इस तथ्य से भली-भाँति परिचित हैं कि प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 'खुला-शौचमुक्त गाँव' कार्यक्रम जिला स्तर पर 'स्वच्छ ग्रामीण मिशन' एवं ग्राम-पंचायतों के माध्यम से चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम हेतु बजट स्वीकृति जारी करने का कष्ट करें, ताकि 'खुला-शौचमुक्त गाँव' कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में गति दी जा सके।

भवदीय
(ह. ....)
वी.एस. पाल
जिला कलेक्टर, उदयपुर

अथवा

निविदा-सूचना

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अलवर

क्रमांक-लेखा/नि.सू./20XX-XX दिनांक 12 नवम्बर, 20XX

निविदा संख्या 17/20XX

अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्न विवरणानुसार सामान की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं/प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं जो निर्धारित तिथियों को

YouTube Channel pk study point 99

दोपहर दो बजे तक प्राप्त की जायेंगी तथा उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदादाताओं के समक्ष खोली जायेंगी। निविदा प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अलवर के कार्यालय में जमा कराकर प्राप्त किया जा सकता है। निविदा विवरण इस प्रकार है-

विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा खोलने की तिथि	निविदा प्रपत्र-शुल्क
परीक्षा सामग्री की आपूर्ति हेतु	एक लाख तीस हजार रु. लगभग	2500/-	15-11-2XX	50/-

नोट- आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा-प्रपत्र के साथ संलग्न किया।

(हस्ताक्षर)
प्रधानाचार्य

19. वैश्विक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. कोरोना काल में शिक्षा-व्यवस्था 3. कोरोना काल में शिक्षा का प्रसार 4. कोरोना काल में विद्यार्थियों पर प्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना– कोरोना वायरस आज सम्पूर्ण विश्व पर काल की भाँति मण्डरा रहा है। इस वायरस ने दुनिया के तमाम देशों की अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था को प्रभावित किया है। इस वायरस से विश्व में अब तक लाखों लोगों की मौत का दावा किया जा चुका है। हालांकि कई देश कोरोना वायरस के प्रभाव को कम करने में प्रयासरत हैं। मास्क का प्रयोग करना तथा वैक्सीन की व्यवस्था का कार्य भी शुरू किया जा चुका है। परन्तु कोरोना वायरस के कारण शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रभाव पड़ा है, वह अत्यन्त चिन्ताजनक है। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े प्रत्येक विद्यार्थी के लिए यह समय बेहद नाजुक है।

2. कोरोना काल में शिक्षा-व्यवस्था– कोरोना वायरस के कारण प्रत्येक व्यक्ति आज स्वयं को लाचार समझ रहा है। कोरोना वायरस के प्रभाव को कम करने के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर लॉकडाउन की व्यवस्था की गई है। जिसके कारण हर क्षेत्र की प्रगति पर रोक लग गई है। इसी के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी कई परिवर्तन किए गए हैं। लॉकडाउन की व्यवस्था के चलते देश के समस्त कॉलेज, विद्यालय तथा कोचिंग संस्थानों को बंद कर दिया गया। इसके बाद कई विद्यालयों द्वारा ऑनलाइन क्लासेज लेने का निर्णय लिया गया। ऑनलाइन ही छात्रों को महत्वपूर्ण नोट्स तथा प्रोजेक्ट्स उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

विभिन्न एजुकेशन ऐप के माध्यम से भी छात्रों को पढ़ने में सुविधा हुई है। कोरोना महामारी के कारण देश में होने वाली कई सरकारी परीक्षाओं पर भी रोक लगा दी गई है। विद्यालयों एवं कॉलेजों की परीक्षाओं को स्थगित करने का निर्णय लिया गया है। ऐसे में विद्यार्थियों का उत्साह भी क्षीण होता नजर आने लगा है। बिना परीक्षा के ही विद्यार्थियों को अगली कक्षाओं में प्रमोट भी किया गया है।

3. कोरोनाकाल में शिक्षा का प्रसार– वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को विकल्प की भाँति प्रयोग करके, छात्रों को पढ़ाई के प्रति जागरूक रखने का प्रयास

किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार [illegible] प्रारम्भ हुए हैं, [illegible] की भी शुरुआत की गई है, [illegible] के माध्यम से [illegible] [illegible] कार्य कर सकते हैं। प्राथमिक [illegible] एवं माध्यमिक [illegible] माध्यमिक शिक्षा में भी ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया जा रहा है।

4. कोरोना काल में विद्यार्थियों पर प्रभाव– 2019 के अंत में [illegible] इस वायरस का प्रकोप वर्तमान में आ गया। भारत में 2020 में [illegible] ने लाखों लोगों के जीवन को नष्ट कर दिया। [illegible] विद्यार्थी [illegible] शिक्षा प्राप्त करता है, कोरोना वायरस के कारण [illegible] स्थिति से गुजर रहे हैं। [illegible] परिणाम न मिलने के कारण [illegible] नहीं किया जा रहा है। [illegible] ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का उपयोग करके छात्रों को शिक्षा से जोड़ा जा रहा है, [illegible] ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का लाभ प्राप्त कर पाना बेहद मुश्किल हो गया है।

5. उपसंहार– कोरोना वायरस जो 2019 [illegible] की अधिक महामारी है, जिसने सम्पूर्ण विश्व को घेर लिया है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के भविष्य को देखते हुए ऑनलाइन शिक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

मॉडल पेपर 3

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(अ)	(ब)	(स)	(द)	(द)	(स)	(द)	(स)	(अ)	(स)	(द)	(स)

2. (i) Homage (ii) [illegible] (iii) [illegible] (iv) [illegible] (v) [illegible] (vi) [illegible]

3. (i) शिक्षा का उद्देश्य मानव-जीवन का सर्वांगीण विकास करना है, क्योंकि इससे मानवीय व्यक्तित्व में अनेक शक्तियों का उद्घाटन होकर उसे पूर्णता प्राप्त होती है।

(ii) स्वर्ण का पर्यायवाची शब्द 'कुन्दन' प्रयुक्त हुआ है।

(iii) मनुष्य में ज्ञान चेतना का उदय शिक्षा द्वारा ही होता है।

(iv) मनुष्य के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की शक्तियाँ अन्तर्निहित रहती हैं।

(v) मानव की प्रगति का सर्वाधिक श्रेय मनुष्य की ज्ञान चेतना को दिया जा सकता है।

(vi) शीर्षक–'शिक्षा का उद्देश्य' या 'शिक्षा का महत्त्व'।

4. (i) कवि ने भारत भूमि को पुण्य भूमि कहा है क्योंकि यहाँ आकर सैकड़ों नक्षत्र लोक उसकी आरती उतारते हैं।

(ii) हिमाचल प्रदेश में पेड़-पौधों एवं लताओं पर नये अंकुर फूटते हुए, फल लगते हैं और यहाँ पर कई छोटी-बड़ी नदियाँ बहती हैं। अनेक वेशभूषा के लोग देवगणों के समान निवास करते हैं।

YouTube channel RK study point 99

(iii) सांसारिक जीवन में दुःखों का सामना करने पर जब सुख मिलते हैं, तो उनका महत्त्व ज्ञात हो जाता है। सुख का सार दुःखों से उबरने पर ही महसूस होता है।

(iv) इस धरती पर हमेशा परिवर्तन होते रहते हैं, जीवन सदा गतिशील बना रहता है, वह रुकता नहीं है। इसी परिवर्तनशीलता से पृथ्वीवासियों को 'नित्य नये' कहा गया है।

(v) इस दुर्लभ लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जो भी त्याग करना पड़े उसका परित्याग करते हैं। यहाँ तक कि अपने प्राण अर्पण भी करते हैं।

(vi) उपर्युक्त पद्यांश के निम्न शीर्षक हो सकते हैं—'भारत की महिमा' या 'हमारा प्राकृतिक सौन्दर्य का औचित्य' या 'प्रकृति और हम'।

खण्ड-ब

5. जनसंचार माध्यमों के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं—

(1) सूचना देना—हमें इनके जरिये ही दुनियाभर से सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।

(2) शिक्षित करना—लोकतन्त्र में जनसंचार माध्यमों की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका जनता को देश-दुनिया के हाल से परिचित कराना और उसके प्रति सजग बनाना है।

(3) मनोरंजन करना—सिनेमा, टी.वी., रेडियो, संगीत के टेप, वीडियो और किताबें आदि मनोरंजन के प्रमुख माध्यम हैं।

6. किशोर और युवा वर्ग अपनी धुन में मतवाला काम करता है। वे निडर होकर खतरों एवं बाधाओं का सामना कर साहस और विश्वास के सहारे जीवन में उन्नति करना चाहते हैं। ऐसे निर्भीक, साहसी कार्य करनेवालों से ही समाज को प्रगति का मार्गदर्शन मिलता है।

7. भक्तिन और महादेवी के सम्बन्ध इतने आत्मीय हो गये थे कि वह भक्तिन को अपनी सेविका नहीं, अभिभावक मानने लगी थीं। भक्तिन भी स्वयं को उनकी सेविका नहीं मानती थी। इसी कारण महादेवी द्वारा नौकरी छोड़कर जाने के आदेश को वह हँसकर टाल देती थी। वह वयोवृद्ध अभिभाविका की तरह महादेवी की देखभाल करती थी और पूरी आत्मीयता रखती थी।

8. जब लेखक एकाग्रता से पढ़ने के कारण गणित में होशियार हो गया तो वसन्त के साथ दूसरे बच्चों के सवाल जाँचने लगा। इस कारण उसकी वसन्त से दोस्ती हो गई। वे एक-दूसरे की सहायता करने लगे और मंत्री मास्टर जी उससे प्रसन्न होकर आत्मीयता से 'आनन्दा' कहकर बुलाने लगे। इसलिए लेखक का पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा।

9. 'मुअनजो-दड़ो' नगर के सम्बन्ध में पुरातत्त्ववेत्ता की यह धारणा थी कि यह शहर दो सौ हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था और इसकी आबादी पचासी हजार थी। जिससे ज्ञात होता है कि पाँच हजार वर्ष पूर्व यह आज के 'महानगर' की परिभाषा को भी लाँघता होगा अर्थात् अपने दौर में घाटी की सभ्यता का केन्द्र या राजधानी रहा होगा।

खण्ड-स

10. दूरदर्शन पर साक्षात्कार के प्रति कवि ने यह दृष्टिकोण व्यक्त किया है कि दूरदर्शन पर कार्यक्रम दिखाना काफी महँगा पड़ता है। इसमें साक्षात्कारकर्ता को कार्यक्रम दिखाने के

लिए निर्धारित समय दिया जाता है, कार्यक्रम की एक सीमा हुआ कार्यक्रम के समय से जुड़ी होती है जो कि मनोरंजन का मुख्य कारण होता है। साक्षात्कार प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति अपंगता दिखाता है, अपाहिज का दुःख प्रदर्शित करता है। व्यवसाय वह सीमा में जल्दी-जल्दी करना चाहता है। इस दृष्टि से उसकी अपंगता के प्रति दया या सहानुभूति नहीं रहती है। इसमें व्यावसायिकता, क्रूरता एवं संवेदनहीनता हावी रहता है। कवि ने ऐसे दृष्टिकोण को व्यंग्य-मिश्रित अन्दाज में इस पर आक्षेप किया है।

अथवा

बादलों के आगमन से प्रकृति में अनेक परिवर्तन आ जाते हैं। बादलों की गर्जना से, बिजली कड़कने और मूसलाधार बरसने से भय का वातावरण बन जाता है। बिजली गिरने से बड़े-बड़े पेड़ धराशायी हो जाते हैं, बाढ़ आ जाती है, विनाश का दृश्य भी दिखाई देता है, लेकिन एक लाभ होता है छोटे-छोटे पौधे एवं खेतों की हरियाली लहराने लगती है। कमल खिल जाते हैं तथा फसलें अंकुरित हो जाती हैं। सारी प्रकृति में परिवर्तन आ जाता है।

11. शिरीष जीवन में अनेक गुणों की शिक्षा देता है। शिरीष हमें हर परिस्थिति में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। सत्ता एवं मोह के प्रति अधिकार भावना से लिप्त न रहें। जो व्यक्ति निरन्तर भौतिकता के प्रति लोलुप भावना संचित रखता है उसकी पराजय निश्चित है। धैर्य, साहस एवं सहजता जीवन के अपेक्षित गुण हैं, इन्हें अपने जीवन में सदैव धारण रखने चाहिए। आगे की तरफ मुँह करके निरन्तर कर्म करते रहें, स्थान परिवर्तन सृष्टि का नियम है, उससे मुँह न मोड़ें, जड़ता को छोड़ गतिशील बनें, यही शिरीष द्वारा हमें शिक्षा और प्रेरणा मिलती है।

अथवा

वस्तुतः यह कथन विचारणीय है। जब हम रिश्तों को निभाने की खातिर भावना के वशीभूत हो जाते हैं, तब हमारे मन में जमे विश्वास भी कई बार हिल जाते हैं और हम सत्य को खोजने के प्रयास में भटक जाते हैं। मनुष्य भावनाओं के बिना नहीं रह सकता और जीवन के अनेक सत्य भावनाओं में छिपे रहते हैं। इस तरह की मनोदशा में सत्य का अन्वेषण करती हुई हमारी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है तथा तर्क-शक्ति कमजोर पड़ जाती है। तब हम भावनात्मक सत्य के वशीभूत हो जाते हैं।

प्रस्तुत पाठ में लेखक का जीजी के साथ भावनात्मक सम्बन्ध है। इस कारण उसके सामने उसका विश्वास दब जाता है और जीजी के तर्कों के सामने उसकी बुद्धि की शक्ति कमजोर पड़ जाती है।

12. कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक को ढोर चराते हुए, खेतों में पानी लगाते हुए या दूसरे काम करते हुए अकेलापन बहुत खटकता था। तब उसे कोई काम करना तभी अच्छा लगता था, जब उसके साथ कोई बोलने वाला हो। लेकिन कविता के प्रति लगाव हो जाने के बाद उसे अकेलेपन से ऊब नहीं होती थी। अब उसकी मानसिकता में बदलाव आ गया था। अब वह अकेले में रहना अच्छा मानने लगा था, ताकि कविता के भावों का अभिनय कर सके और गाते-गाते नाच सके। इस प्रकार अब उसे अकेलेपन में पूर्ण स्वतन्त्रता का अनुभव होने लगा तथा कविता रचने के लिए तुकबन्दी भी करने लगा था।

अथवा

कुलधरा राजस्थान के जैसलमेर जिले के मुहाने पर बसा हुआ एक खूबसूरत

YouTube channel RK study point 99

गाँव है। इस गाँव के सभी मकान पीले पत्थरों से बने हुए हैं। इस खूबसूरती में हरदम एक सन्नाटा व्याप्त है। गाँव में घर तो हैं, पर इन घरों में रहने वाले लोग नहीं हैं। इसका कारण यह है कि कोई डेढ़ सौ साल पहले राजा से तकरार पर स्वाभिमानी गाँव का हर बाशिंदा अपना घर छोड़ चला गया। दरवाजे-असबाब पीछे से लोग उठा कर ले गए। स्थिति यह बनी कि घर खण्डहर हो गए, पर वे घर ढहे नहीं। घरों की दीवारें, प्रवेश द्वार और खिड़कियाँ ऐसी हैं, जैसे कल की बात हो। वहाँ के लोग निकल गये, पर वक्त वहीं रह गया। खण्डहरों ने उसे थाम लिया। वे खण्डहर अब भी उन लोगों के लौट आने के इन्तजार में खड़े हैं।

13. यशोधर बाबू संस्कारी व्यक्ति हैं। इस कारण वे चाहते हैं कि घर में उनका सम्मान हो, घर-गृहस्थी के हर मामले में उनसे सलाह ली जाए। लेकिन घर में आधुनिकता के छाये कुप्रभाव के कारण सब उलटा होता है। उनकी पत्नी बच्चों की तरफदारी करती है। उनका बड़ा बेटा भूषण अपने वेतन को मनमर्जी से खर्च करता है। उनकी बेटी डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए स्वयं अमेरिका चले जाने की धमकी देती है। उनकी पत्नी उनकी इच्छा के विरुद्ध फैशन में रहती है। इस तरह यशोधर बाबू को उन सबका व्यवहार परायापन पैदा करने वाला लगता है।

अथवा

मास्टर-न.वा. सौंदलगेकर पाठशाला में मराठी के अध्यापक थे। वे बहुत तन्मय होकर पढ़ाते थे। वे कविता पढ़ाते समय छंद, लय, ताल का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। अनेक छंदों की लय, गति, ताल उन्हें अच्छी तरह आते थे। साथ ही उसी भाव की किसी अन्य कवि की कविता भी सुनाकर दिखाते। जिससे लेखक पर यह प्रभाव पड़ा कि वह खेत में काम करते समय या ढोर चराते हुए अकेले में खुले गले से सारी कविताएँ मास्टरजी के हाव-भाव, यति-गति और आरोह-अवरोह के अनुसार ही गाता और उन्हें रटता था।

14. फ़ीचर-लेखन के निम्न उद्देश्य हैं—(1) **ज्ञानवर्धन**–फ़ीचर ज्ञानवर्धक होना चाहिये। किसी विषय, समस्या या सन्दर्भ पर विचारपूर्ण ढंग से किसी तत्त्वों को फ़ीचर में प्रस्तुत किया जाता है। (2) **मार्गदर्शन**–फ़ीचर में सूचनाओं के साथ-साथ उचित-अनुचित का मार्गदर्शन निहित होता है। जैसे सामाजिक कुरीतियों या सामाजिक समस्या पर तैयार फ़ीचर। (3) **जिज्ञासा का शमन**–फ़ीचर किसी भी घटना के पूर्ववर्ती कारणों या परवर्ती परिणामों के निष्कर्ष पर पहुँचने में समर्थ होता है। यह लोगों की जिज्ञासा को पुष्ट करता है। (4) **मनोरंजन**–सभी विषयों पर फ़ीचर मनोरंजनात्मक नहीं होते हैं, लेकिन उनमें लोक रुचि एवं स्वस्थ मनोरंजन का ध्यान रखा जाता है। गंभीर विषयों और दुःखद स्थितियों पर भी, सकारात्मक पक्षों पर भी मनोरंजन से जोड़कर प्रस्तुत किया जा सकता है।

अथवा

आलेख से तात्पर्य उस लेख से है जिसमें किसी घटना, किसी विषय (आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक) पर संक्षिप्त शब्दावली के माध्यम से लिखित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। दूसरे शब्दों में किसी भी प्रयुक्त विषय पर अपने भाव अभिव्यक्ति की लेखन शैली आलेख का रूप धारण करती है। आलेख के मुख्य अंग—भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष होते हैं। सर्वप्रथम शीर्षक के अनुकूल

भूमिका लिखी जाती है। यह बहुत लम्बी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। विषय के प्रतिपादन में विषय का वर्गीकरण, आकार, रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। तुलनात्मक चर्चा में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है। अन्त में विषय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

15. सातवें-आठवें दशक के कवि आलोक धन्वा ने बहुत छोटी अवस्था में ही गिनी-चुनी कविताओं से अपार लोकप्रियता अर्जित कर ली थी। इनका जन्म सन् 1948 में मुंगेर (बिहार) में हुआ था। सन् 1972 से लेखन आरंभ करने के बाद उनका पहला और अभी तक का एकमात्र काव्य संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' सन् 1998 में प्रकाशित हुआ। ये देश के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहे हैं। इनकी आरम्भिक कविताएँ हिन्दी के अनेक गंभीर काव्य-प्रेमियों को जुबानी याद रही हैं। इतनी व्यापक ख्याति के बावजूद भी कवि आलोक धन्वा ने कभी थोक के भाव में लेखन नहीं किया। इन्हें राहुल सम्मान, साहित्य सम्मान, भोजपुरी सम्मान तथा पहल सम्मान से पुरस्कृत किया गया है।

अथवा

लेखक जैनेन्द्र कुमार का जन्म 1905 ई. में अलीगढ़ में हुआ था। बचपन में पिता का देहान्त होने पर मामा द्वारा लालन-पालन हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा हस्तिनापुर के गुरुकुल तथा उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ परख, अनाम, स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध (उपन्यास); संग्रह वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब (कहानी-संग्रह); प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच-विचार (निबन्ध संग्रह) आदि हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा की शुरुआत की। साहित्य रचना के दौरान इन्हें पद्मविभूषण, भारत-भारती तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। इनका देहान्त सन् 1990 में हुआ था।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश कवि उमाशंकर जोशी द्वारा लिखित उनकी कविता 'छोटा मेरा खेत' से लिया गया है। इसमें स्वयं को कृषक के समान मानकर अपने भावों की खेती कर साहित्य रचना पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या–कवि स्वयं को किसान समान बताते हुए कहते हैं कि कागज का एक पन्ना मेरे पास छोटा-सा चौकोर खेत के समान है। किसान जमीन पर बीज बोता है, जबकि मैं कागज पर अपनी रचना शब्दबद्ध करता हूँ—उगाता हूँ। जिस प्रकार धरती पर फसल उगाने के लिए बीज बोया जाता है उसी प्रकार मेरे मन में भी भावों का अंधड़ आकर (भावरूपी) बीज बो जाता है। अर्थात् भावरूपी बीज हृदय रूपी खेत में बोया जाता है। जिस प्रकार धरती पर बोया गया बीज हवा, पानी, खाद आदि को पीकर पूरी तरह गल जाता है और तब उसके अंकुर, पत्ते और पुष्प निकल आते हैं, उसी प्रकार मेरे मन में उठे हुए भाव कल्पना रूपी खाद-पानी को पीकर उस भाव को अहंमुक्त कर देते हैं तथा सर्व-साधारण हिताय का विषय बना देते हैं। तब शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं, उनके साथ भाव रूपी पत्ते और पुष्प पल्लवित-विकसित हो जाते हैं। नये पत्ते-पुष्पों के भार से झुके हुए पौधे की तरह मेरी भावाभिव्यक्ति भी झुक जाती है, अर्थात् सर्वजन के लिए समर्पित हो जाती है।

YouTube channel study point 99

विशेष–(1) कवि ने कल्पना द्वारा काव्य-रचना-कर्म को स्पष्ट किया है।

(2) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार तथा प्रतीकात्मकता की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

(3) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित काव्य संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने संसार एवं अपने हृदय के सम्बन्ध तथा संसार की निष्ठुरता को व्यक्त किया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि मेरे रोदन में भी मेरा प्रेम-भाव छलकता है। मैं अपने गीतों में प्रेम के आँसू बहाता हूँ। मेरी वाणी यद्यपि कोमल और शीतल है, फिर भी उसमें प्रेम की तीव्र ऊष्मा एवं वेदना का ताप है। जिस प्रेम पर राजाओं के विशाल महल न्यौछावर होते हैं, उस पर मैं अपने प्रेम के खण्डहर न्यौछावर कर सकता हूँ। प्रेम की निराशा के कारण मेरा जीवन एक खण्डहर जैसा है, फिर भी मैं उस खण्डहर रूपी प्रेम को अपने जीवन का अहम भाग मान साथ लिये फिरता हूँ। कवि इसमें अपने प्रेम की पीड़ा को स्वयं साथ रखने की बात कह रहे हैं।

कवि कहता है कि जब मैं रोया और मेरे हृदय का दुःख करुण शब्दों में व्यक्त हुआ, तो इसे लोग गाना (गीत) कहने लगते हैं। जब मैं प्रेम के आवेश से भावना के उन्माद से अपने भावों को व्यक्त करता हूँ—तब संसार के लोग उसे छन्द कहने लगते हैं। वास्तव में तो मैं कवि नहीं हूँ, अपितु प्रेम-दीवाना हूँ।

विशेष–(1) कवि अपनी संवेदनशील भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं। सांसारिक लेन-देन से उनकी हृदय की पीड़ा को कोई मतलब नहीं है। वे अपने दुःख में भी प्रसन्न हैं।

(2) कोमलकान्त शब्दावली, विरोधाभासी उपमान तथा अलंकारों का प्रयोग निहित है।

(3) इसमें उमर खय्याम की रुबाइयों जैसी मस्ती है।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन' से लिया गया है। लेखक ने इसमें मन खाली होने की स्थिति में खरीदारी अधिक होती है, ऐसी स्थिति पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या–लेखक कहते हैं कि बाजार की चकाचौंध व सजावट में एक किस्म का जादू छिपा होता है। वह जादू आँख के रास्ते दिलो-दिमाग में चढ़ जाता है। वह रूप का, उसके आकर्षण का जादू है। जिस प्रकार चुंबक लोहे को अपनी तरफ खींचता है उसी प्रकार बाजार का जादू ग्राहक को अपनी ओर खींचता है। लेकिन इस जादू की मर्यादा है, सम्मान है। वह दो स्थितियों में काम करता है। अगर ग्राहक की जेब भरी हुई है और उसका मन खाली है; खाली से तात्पर्य उसके मन में कोई इच्छा नहीं है, क्या लेना है क्या नहीं लेना है! वह बस बिना उद्देश्य बाजार घूमने निकला है। ऐसी स्थिति में बाजार का प्रभाव उस पर बहुत अधिक होता है और वह बिना जरूरत, बिना सोचे-समझे अपनी जेब हल्की करने में लगा रहता है। अगर जेब खाली है और मन भी खाली है तो भी बाजार का जादू व्यक्ति पर कुछ असर डालता है। मन का खाली होना ही बाजार के लुभावने निमन्त्रण को व्यक्ति तक पहुँचाता है और इस पर अगर

जेब में कुछ पैसे हों तो फिर मन किसी की भी बात नहीं मानता। अर्थात् बाजार के जादू के प्रभाव में बहुत-कुछ बिना जरूरत, निरर्थक खरीदारी कर ही लेता है।

विशेष–(1) लेखक ने "मन को खाली होना" कथन पर यथोचित प्रकाश डाला है।

(2) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है। भाषा सरल, सहज व व्यंजनापूर्ण है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'शिरीष के फूल' निबन्ध से लिया गया है। लेखक इसमें जीवन के सत्य का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या–लेखक बता रहे हैं कि मृत्यु के देवता सनातन हैं, वह, काल, यमराज जैसे किसी से अपना कोई बच्चा रहे हैं। जो भी कमजोर व दुर्बल होते हैं, जड़ता और किस्मत को रुकी होती है वे झड़ जाते हैं, या मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। जिनमें जड़ता और किस्मत हैं, जिजीविषा या जीने की इच्छा से पूर्ण हैं, समय की चाल को समझते हैं वे टिक जाते हैं। जीवन-इच्छा और मृत्यु-शक्ति का निरन्तर युद्ध चलता रहता है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ हैं वहीं टिके रहेंगे तो कालदेवता की आँखों से बच जाएँगे। लेकिन वे लोग मूर्खतापूर्ण हैं। जीवन जीने की कला हिलते-डुलते, स्थान बदलते में है। कोई भी नष्ट होने से अर्थात् चोट पर पड़ती है लेकिन अगर आगे की तरफ मुँह करके बढ़ते रहते रहें, कर्म करते रहें तो कोड़े की मार से बचने की संभावना बनी रहती है। जहाँ एक ही जगह जम गये कि मृत्यु ने पकड़ लिया। चलना, गतिशील रहना, परिवर्तन स्वीकारना, संसार का, जीवन का सत्य है, इससे मुँह छिपाना मृत्यु समान है।

विशेष–(1) लेखक ने परिवर्तन के शाश्वत नियम की सुन्दर व्याख्या की है।

(2) भाषा सहज प्रवाहमय एवं हिन्दी-संस्कृत युक्त है।

18. **प्रेषक**–

विशिष्ट शासन सचिव,
स्वायत्त शासन विभाग,
राजस्थान सरकार,
शासन सचिवालय, जयपुर।

प्रेषिति–

श्रीमान् सम्भागायुक्त,
अजमेर।

पत्र संख्या : 403/2/20XX जयपुर, 15 मई, 20XX

प्रिय सम्भागायुक्त जी,

कृपया मेरे अर्द्ध-सरकारी पत्र संख्या 202/2/सं. 20XX, दिनांक 4 अप्रैल, 20XX पर ध्यान दीजिए, जिसमें राज्य सरकार द्वारा अजमेर सम्भाग के सभी जिलों में पेयजल की उचित आपूर्ति के लिए आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया था। गर्मी का मौसम आने से पूर्व सरकार इस समस्या का समाधान करना चाहती है, परन्तु जब तक प्रत्येक जिले के लिए पेयजल आपूर्ति की योजना, व्यय-भार एवं अन्य विवरण उपलब्ध नहीं हो जाये, तब तक सरकारी प्रयास रुके रहेंगे। अतः आप अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। इसके लिए अलग-अलग

YouTube channel RK study point 99

बिन्दुओं का सांख्यिकीय विवरण तथा अनुमानित व्यय आदि की रूपरेखा भेजनी नितान्त अपेक्षित है।

भवदीय,
(हस्ताक्षर..........)
शिवपाल सिंह राजावत
विशिष्ट शासन सचिव।

अथवा

राजस्थान सरकार
कार्यालय निदेशक,
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा
अभियान, जयपुर।

क्रमांक-473 दिनांक : 14/8/20XX

निविदा सूचना

राजस्थान के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कम्प्यूटर एवं अन्य उपकरण सप्लाई करने हेतु पंजीकृत कम्पनियों से दिनांक 25 सितम्बर, 20XX तक निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं। निविदा प्रपत्र विभाग की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है। प्राप्त निविदाएँ दिनांक 26 सितम्बर, 20XX को प्रातः 10 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जायेंगी। विवरण इस प्रकार है—

क्र.सं.	कार्य विवरण	अनुमानित लागत (करोड़ में)	धरोहर राशि (लाख में)	अवधि
1.	कम्प्यूटर मय प्रिंटर, सी.पी.यू. व अन्य सामग्री	43.00	21.5	3 माह
2.	फोटो स्कैनर मशीन	6.00	3.00	1 माह
3.	लैपटॉप	1.00	0.50	1 माह

(हस्ताक्षर)
निदेशक
आयुक्त

19. **आत्मनिर्भर भारत**

संकेत विन्दु– 1. प्रस्तावना 2. आत्मनिर्भर भारत 3. आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तम्भ 4. आत्मनिर्भरता के उपाय एवं लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–शास्त्रों में कहा गया है कि **'सर्वं परवशंदुःखम्' 'सर्वमात्मवशं सुखम्'** अर्थात् सब तरह से दूसरों पर निर्भर रहना ही 'दुःख' है एवं सब प्रकार से आत्मनिर्भर होना ही सुख है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव कोरोना वैश्विक महामारी के समय स्पष्ट रूप से सभी को हुआ है। इस महामारी के कारण देश की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ है। देश को समृद्ध व सुखी बनाने के लिए तथा कोरोना महामारी का मुकाबला करने के लिए भारत के प्रधानमन्त्री ने 12 मई, 2020 को 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान शुरू करने की घोषणा की।

2. आत्मनिर्भर भारत–भारत के प्रधानमन्त्री ने कोरोना महामारी से पहले और बाद की दुनिया का उल्लेख करते हुए कहा कि 21वीं सदी को भारत की सदी बनाने के सपने को पूरा करने के लिए यह सुनिश्चित करते हुए आगे बढ़ना है कि देश आत्मनिर्भर हो जाए। आज भूमण्डलीकृत दुनिया में आत्मनिर्भरता के मायने बदल गए हैं। जब भारत आत्मनिर्भरता की बात करता है तो वह आत्मकेन्द्रित व्यवस्था की वकालत नहीं करता है। भारत की संस्कृति सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानती है और भारत की प्रगति में हमेशा विश्व की प्रगति समाहित रही है। अतः आत्मनिर्भर भारत का तात्पर्य स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ-साथ विदेशी निवेश को भी बढ़ावा देना है, जिससे यहीं रोजगार के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध हो सकें एवं भारत की आर्थिक समृद्धि के साथ ही विश्व का भी कल्याण हो सके।

3. आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तम्भ–प्रधानमन्त्री महोदय के अनुसार आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तम्भ इस प्रकार हैं—1. अर्थव्यवस्था, जो वृद्धिशील परिवर्तन नहीं, बल्कि लम्बी छलांग सुनिश्चित करती है। 2. बुनियादी ढाँचा, जिसे भारत की पहचान बन जाना चाहिए। 3. प्रणाली (सिस्टम), जो 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्थाओं पर आधारित हो। 4. उत्साहशील आबादी, जो आत्मनिर्भर भारत के लिए हमारी ऊर्जा का स्रोत है, तथा 5. माँग, जिसके तहत हमारी माँग एवं आपूर्ति शृंखला (सप्लाई चेन) की ताकत का उपयोग पूरी क्षमता से किया जाना चाहिए।

4. आत्मनिर्भरता के उपाय एवं लाभ–आत्मनिर्भरता के लिए भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर फोकस करते हुए कुटीर उद्योग, एमएसएमई, मजदूरों, मध्यम वर्ग तथा उद्योगों सहित विभिन्न वर्गों की जरूरतों को पूरा करना आवश्यक है। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए लॉकडाउन के साथ-साथ आर्थिक सहायता के रूप में भारत सरकार ने विभिन्न चरणों में लगभग बीस लाख करोड़ रुपयों के एक विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की है, जो विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता और गुणवत्ता बढ़ाने, गरीबों, मजदूरों, प्रवासियों इत्यादि को सशक्त बनाने में सहायक होगा। आत्मनिर्भरता भारत को वैश्विक आपूर्ति शृंखला में कड़ी प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगी। इसके लिए लोकल (स्थानीय या विदेशी) उत्पादों का गर्व से प्रचार करने और इन लोकल उत्पादों को वैश्विक बनाने में मदद करने की आवश्यकता है। इन उपायों को करने से भारत न केवल आर्थिक दृष्टि से सशक्त होगा, अपितु विश्व में विकासशील देशों में अग्रणी बन सकेगा।

5. उपसंहार–वर्तमान संकट ने सम्पूर्ण विश्व को आत्मनिर्भरता के महत्त्व को पूर्णतया समझा दिया है। आत्मनिर्भरता ही सभी तरह के संकटों का सामना करने का सशक्त हथियार है, जिसके बल से हम आर्थिक संकट क्या युद्ध को भी जीत सकते हैं। अतः विश्व में भारत की महत्ता एवं सम्पन्नता को बनाये रखने के लिए आत्मनिर्भर भारत की अति आवश्यकता है।

मॉडल पेपर 4

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(अ)	(अ)	(ब)	(स)	(अ)	(अ)	(द)	(अ)	(द)	(अ)	(ब)	(अ)

YouTube channel RK study point 99

2. (i) व्यंजना (ii) [illegible] (iii) [illegible] (iv) अतिशयोक्ति (v) [illegible] (vi) यमक।

3. (i) भारतीय साहित्य की एकता का आशय यहाँ की विभिन्न भाषाओं के साहित्य की एकता एवं उनमें प्रचलित समान प्रवृत्तियों से है।
(ii) 'ग्रन्थों' का पर्यायवाची शब्द 'साहित्य' प्रयुक्त हुआ है।
(iii) मराठी साहित्य में भक्ति और [illegible] की अभिव्यक्ति को [illegible] है।
(iv) [illegible] युगानुयुग एकता का होना भारतीय साहित्य की विशेषता है।
(v) गद्यांश में भारतीय साहित्य की एकता की चर्चा की गई है।
(vi) शीर्षक– 'भारतीय साहित्य की एकता'।

4. (i) [illegible] सदा उपकार करता रहता है। [illegible] सज्जन भी अपने कर्तव्य-पालन में तत्पर रहता है।
(ii) [illegible]
(iii) इसमें कवि ने यह सन्देश दिया है कि प्रकृति निरन्तर अपने कर्तव्य पालन में तत्पर रहती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने कर्तव्य-पालन में सदैव तत्पर रहना चाहिए।
(iv) इस संसार में सबके अपने नियम हैं। समुद्र, वायु, बादल, सूर्य तथा चन्द्रमा के साथ ही [illegible] का सुन्दर वर्णन की है।
(v) इसका आशय यह है कि प्रत्येक जड़-चेतन वस्तु का अपना कर्म निश्चित है। वह अपने कर्तव्य पालन में हमेशा तत्पर रहता है।
(vi) शीर्षक– 'कर्तव्य का महत्व'

खण्ड-ब

5. सम्पादक का दायित्व है—पाठकों अथवा दर्शकों तक सूचना पहुँचाना, उन्हें जागरूक और शिक्षित करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना है। भूमिका के अनुसार सम्पादक तीन तरह के होते हैं—(1) पूर्णकालिक सम्पादक, (2) अंशकालिक सम्पादक (3) फ्रीलांस सम्पादक।

6. इस कविता में कवि ने करुणा और सहानुभूति जगाने के उद्देश्य से प्रसारित मीडिया के कार्यक्रमों में निहित क्रूरता [illegible] को व्यक्त किया है। मीडिया माध्यम की ऐसी व्यावसायिकता एवं संवेदनहीनता पर आक्षेप किया गया है कि वे निजी स्वार्थों के कारण अपंग एवं सामाजिक [illegible] के प्रदर्शन कर स्वार्थों को सिद्ध करते हैं।

7. लेखक बताता है कि [illegible] आवश्यकता से अधिक सब कुछ खरीदते हैं, [illegible] बाजार के [illegible] ऐसे बाजार में कपट, लूट-खसोट और असमान व्यवहार बढ़ता है। लेखक ने ऐसे बाजार को मानवता के लिए विडम्बना बताया है।

8. सिंधु सभ्यता के मिले अवशेषों में राजमहल, मंदिर एवं समाधि स्थल आदि नहीं मिले हैं, सामाजिक कलाकृतियाँ ही उपलब्ध हुई हैं जिनसे उसमें समाज को

कला की महत्ता दिखाई देती है। इससे स्पष्ट होता है कि सिंधु सभ्यता राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित ही थी।

9. यशोधर बाबू का अपने बच्चों [illegible] छोटे-छोटे बात में [illegible] पसन्द नहीं करते हैं। उनके [illegible] के पोषक एवं यशोधर बाबू भारतीय संस्कृति के पोषक थे।

खण्ड-स

10. 'बादल राग' कविता सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की क्रान्तिकारी भावों से पूरित कविता है। इसमें कवि ने बादलों को क्रान्ति का प्रतीक माना है। कवि ने शोषित वर्ग के हित में बादलों का आह्वान किया है। क्रान्ति के प्रतीक बादलों की गर्जन सुनकर पूँजीपति [illegible] भय से देखता है। अतः समाज में [illegible] क्रान्ति की आवश्यकता है। शोषकों के प्रति [illegible] की अभिव्यक्ति का [illegible] पर जोर दिया है।

अथवा

बात और भाषा का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। मानव द्वारा मन में उत्पन्न विचारों और भावों को भाषा या शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जाता है। व्यक्ति जैसा सोचता एवं अनुभव करता है, वह उसे उसी रूप में सरलता से कह देता है। परन्तु कभी-कभी व्यक्ति अपनी बात को चमत्कारपूर्ण ढंग से, अलंकार [illegible] के द्वारा तथा [illegible] का प्रयत्न करता है तब वह भाषा के फेर में पड़ जाता है और ऐसे शब्द प्रयुक्त करने लगता है, जो कठिन हों, भावानुकूल न हों तथा क्लिष्ट भी हों। इस तरह के चक्कर में पड़कर सीधी-सादी बात भी टेढ़ी हो जाती है जिससे उसकी सरल-सहज अभिव्यक्ति तथा सम्प्रेषण बाधित होती है। ऐसे भाषा कठिन शब्द-चमत्कार बनकर रह जाती है। [illegible]

11. लेखक ने गाँधीजी और शिरीष को एक समान [illegible] में जीने वाला [illegible] व्यक्तित्व कहा है। शिरीष भयंकर लू में भी सरस [illegible] बना रहता है। गाँधीजी चारों ओर [illegible] अग्नि [illegible] और लूट-खसोट के बीच आत्मबल के आधार पर स्थिर, अहिंसक और उदार बने रहे। इस समानता के कारण लेखक ने गाँधीजी और शिरीष दोनों को एक समान बताया है।

लेखक ने शिरीष को अवधूत इसलिए माना है, क्योंकि वह संन्यासी या [illegible] साधक की तरह होता है। शिरीष [illegible] भी [illegible] सब सहन करता है। इसलिए उसे अवधूत के समान बताया गया है।

अथवा

अनेक त्रुटियों के बाद भी भक्तिन उन्हें [illegible] नहीं होने देती थी। लेखिका भी उसकी त्रुटियों की ओर [illegible] ध्यान नहीं देती थी। लेखिका यह मानती कि भक्तिन में [illegible] है। वह [illegible] नहीं कर सकती। वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये [illegible] में छिपाकर रख लेती। लेखिका को [illegible] रखने के लिए वह बात को इधर-उधर घुमा लेती। इसे आप झूठ कह सकते हैं। [illegible] झूठ और चोरी से [illegible] महत्त्व [illegible] सभी बातों और कामों को अपनी सुविधानुसार ढाल लेती और [illegible] शास्त्रीय बातों की व्याख्या अपने अनुसार ही करती। इसी कारण लेखिका ने भक्तिन को [illegible] होगा।

12. यशोधर बाबू की पत्नी भी ग्रामीण परिवेश की थी और कम शिक्षित थी। फिर भी उनकी पत्नी उनकी अपेक्षा महानगर के जीवन से अर्थात् आधुनिकता से पूर्ण प्रभावित थी। वे आधुनिक रंग-ढंग से रहना चाहती थी। वे अपनी बेटी के कहे अनुसार नए ढंग के कपड़े पहनना चाहती थी। उन्होंने होंठों पर लाली, बालों पर खिज़ाब लगाना तथा ऊँची ऐडी की चप्पल पहनना, सिर पर पल्लू न रखना प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रकार वह ग्रामीण परिवेश को भूलकर शहरी जीवन की ओर आकृष्ट हो गयी थी।

अथवा

'जूझ' आत्मकथात्मक अंश में छोटी आयु में बालक आनन्द विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करता है। उसके मन में संघर्ष करने की इच्छा इतनी बलवती है कि वह अपने लक्ष्य को पाने के लिए असंभव से प्रयत्न भी कर डालता है। वह अपने पिता द्वारा पढ़ाई छुड़ाए जाने पर आगे पढ़ाई करने की इच्छा व्यक्त करता है। वह अपनी माँ के साथ दत्ताजी राव के घर जाता है। अपने मन की बात अपनी माँ से कहलवाकर पाठशाला जाने की बात पर उनसे आज्ञा प्राप्त कर लेता है। पाठशाला में पहुँचने पर उसे घोर निराशा तथा अपमान का सामना करना पड़ता है। जल्दी ही वह अपने परिश्रम के कारण शिक्षक का चहेता छात्र ही नहीं बल्कि कवि बन जाता है।

13. मुअनजो-दड़ो की खुदाई से मिली चीजों को वहाँ के अजायबघर में रखा गया है। वहाँ पर प्रदर्शित चीजों में औजार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं है। मुअनजो-दड़ो क्या, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिन्धु सभ्यता में हथियार उस तरह कहीं नहीं मिले हैं, जैसे किसी राजतन्त्र में होते हैं। इस बात को लेकर पुरातत्त्वविदों का कहना है कि वहाँ पर कोई राजमहल या मन्दिर नहीं हैं, राजाओं की समाधियाँ भी नहीं हैं। यदि वहाँ पर राजसत्ता का कोई केन्द्र होता अर्थात् शक्ति का शासन होता, तो ये सब चीजें वहाँ पर होतीं। वहाँ पर नरेश के सिर का जो मुकुट मिला है, वह भी एकदम छोटा-सा है। इससे यह अर्थ निकलता है कि सिन्धु सभ्यता में अनुशासन जरूर था, परन्तु ताकत के बल पर नहीं था, अर्थात् वहाँ राजसत्ता का कोई केन्द्र नहीं था। सभी नागरिक स्वयं अनुशासित थे और नगर-योजना, साफ-सफाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता थी।

अथवा

मराठी के प्रसिद्ध कथाकार डॉ. आनन्द यादव के आत्मकथात्मक उपन्यास से संकलित अंश में एक किशोर के देखे और भोगे गए ग्रामीण जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश का अत्यन्त विश्वसनीय जीवंत चित्रण हुआ है। कहानी की मूल संवेदना निम्न मध्यमवर्गीय ग्रामीण समाज और लड़ते-जूझते किसान-मजदूरों के संघर्षमय जीवन की झाँकी प्रस्तुत कर एक किशोर की लालसा एवं अकुलाहट की मार्मिक व्यंजना करना है तथा उनसे संघर्षशील बने रहने की सत्प्रेरणा देना है।

14.

भारत में किसानों की दुरवस्था

हाथों में कुदाली-फावड़ा, दुबला-पतला, उदास, निराशाग्रस्त और खेत की मेंढ़ पर भूत-सा खड़ा—यही है किसान, जिसका साहूकार, जमींदार, अनाज के व्यापारी एवं भूमाफिये शोषण-उत्पीड़न करने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं और अवर्षण, बाढ़, फसली रोग आदि जिसके जीवन को हताशा से आक्रान्त करते हैं, तब सब ओर से निराश किसान आत्महत्या को विवश हो जाता है।

किसानों की दुरावस्था का समाधान किसी के पास नहीं है। कर्ज पर कर्ज की मार और सरकारी-गैर सरकारी स्तर पर पनप रहा भ्रष्टाचार किसान को इतना व्यथित

कर देता है कि वह आत्महत्या करना ही अन्तिम उपाय मानता है। इस तरह किसानों में आत्महत्या की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही है।

अथवा

घटते संयुक्त परिवार : बढ़ते खतरे

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो भारतीय समाज बहुत तेजी से अपनी मौलिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन ला रहा है। संयुक्त परिवार जो कभी भारतीय सामाजिक व्यवस्था की नींव हुआ करते थे, आज पूरी तरह विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुके हैं और एकल परिवार का नया दौर सब ओर दिखाई दे रहा है।

घटते संयुक्त परिवार से सामाजिक परिवेश में अनेक खतरे बढ़ रहे हैं। भोगवादी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मानवीय संवेदना एवं प्रेम-भाव घट रहा है, सहयोग-सहानुभूति, सामाजिकता एवं सह-अस्तित्व की भावना लुप्त हो रही है। पिता-पुत्र, सास-बहू, दादा-पोता आदि के सम्बन्ध कमजोर पड़ गये हैं। इस तरह स्वार्थपरता की वृद्धि एवं पारिवारिक संगठन की हानि के खतरे बढ़ गये हैं।

15. 'तीसरा सप्तक' के प्रमुख कवियों में अपना नाम दर्ज कराने वाले कवि कुँवर नारायण का जन्म 19 सितम्बर, सन् 1927 को फैजाबाद (उ.प्र.) में हुआ था। अंग्रेजी में एम.ए. करने के पश्चात् इन्होंने कई देशों की यात्राएँ कीं। भाषा और विषय की विविधता इनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं। इनकी रचनाओं में यथार्थ का खुरदरापन भी मिलता है और सहज सौंदर्य भी। 'चक्रव्यूह', 'परिवेश', 'हम तुम', 'अपने सामने', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' (काव्य-संग्रह); 'आत्मजयी' (प्रबंध काव्य); 'आकारों के आस-पास' (कहानी-संग्रह); 'आज और आज से पहले' (समीक्षा); 'मेरे साक्षात्कार' (सामान्य) आदि। व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, प्रेमचंद तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा कबीर सम्मान जैसे अनगिनत पुरस्कारों से सम्मानित कवि का जीवन सदैव सृजन-कर्म में लगा रहा। सन् 2017 में इनका निधन हुआ।

अथवा

धर्मवीर भारती—धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद नगर में सन् 1926 ई. में हुआ। वहीं से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये स्वावलम्वी बने। इन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्ति स्वातन्त्र्य, मानवीय संकट तथा रोमानी चेतना को अभिव्यक्ति दी है। इन्हें पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य-जगत् के कई अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। भारतीजी का निधन सन् 1997 ई. में हुआ।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—'कनुप्रिया', 'सात गीत-वर्ष', 'ठंडा लोहा' काव्य-संग्रह; 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'गुनाहों का देवता' उपन्यास; 'अंधा युग' गीतिनाट्य; 'मुर्दों का गाँव', 'चाँद और टूटे हुए लोग', 'बन्द गली का आखिरी मकान' कहानी-संग्रह; 'ठेले पर हिमालय', 'कहनी-अनकहनी', 'पश्यन्ती', 'मानव मूल्य और साहित्य' निबन्ध-संग्रह।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**—प्रस्तुत काव्यांश कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' की कविता 'पतंग' से लिया गया है। बच्चों का कोमल व लचीला होना तथा पतंग उड़ाते समय किसी बात का होश न रखना, का कवि ने वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि कहते हैं कि बच्चे जन्म के साथ ही अर्थात् जब वे जन्म लेते हैं तभी से उनका शरीर कोमल रुई के समान हल्का होता है। उनकी कोमलता का

स्पर्श करने के लिए स्वयं पृथ्वी भी उनके व्याकुल पैरों के पास आती है। जब वे बेसुध होकर आस-पास की स्थिति को जाने बिना दौड़ते हैं, तब उनके पैरों के स्पर्श से कठोर छतें भी कोमल बन जाती हैं। उनके भागते पैरों की आवाज से प्रतीत होता है कि चारों दिशाएँ मृदंग की भाँति मधुर संगीत निकाल रही हों। वे पतंग उड़ाते हुए झूले की भाँति पेंग भरते हुए, आगे-पीछे होते हुए दौड़ते हैं। उस समय बच्चों का शरीर पेड़ की डालियों की तरह लचीलापन लिये हुए रहता है। झुकना, मुड़ना, दौड़ना, कूदना सारी क्रियाएँ वे शरीर के लचीलेपन के कारण ही कर पाते हैं। कवि बताते हैं कि पतंग उड़ाते समय बच्चे छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं, जहाँ अगर ध्यान न दिया जाये तो गिरने जैसी दुर्घटना का डर बना रहता है। यहाँ उन्हें कोई बचाने के लिए तेजी से प्रस्तुत नहीं हो सकता है। केवल गिरने के भय से उत्पन्न हुआ उत्साह ही रोमांच बन कर उन्हें बचाता है।

विशेष–(1) कवि ने बच्चों की चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।

(2) मानवीकरण, अनुप्रास, उपमा अलंकारों का प्रयोग तथा खड़ी बोली युक्त मिश्रित शब्दावली है।

(3) बिम्बों का सहज प्रयोग द्रष्टव्य है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि, शायर 'फिराक गोरखपुरी' की रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत 'रुबाइयाँ' से लिया गया है। इसमें कवि ने भाई-बहन के प्रेम को प्रदर्शित करता मीठा बंधन यानि रक्षाबंधन का वर्णन किया है।

भावार्थ–फिराक गोरखपुरी कहते हैं कि आज रक्षा-बन्धन का पवित्र दिन है। जिसकी सुबह आनन्द और मिठास से भरी होती है क्योंकि यह दिन भाई-बहनों के मीठे बन्धन का दिन होता है। आकाश में काले-काले बादलों की घटा छायी हुई है। इन बादलों में बिजली रह-रह कर चमक रही है। इसी बिजली की तरह राखी के रेशमी धागे भी चमक रहे हैं। बहन प्रसन्नता एवं उमंग से अपने भाई की कलाई में उस चमकती राखी को बाँधती है।

विशेष–(1) कवि ने रक्षावंधन का स्वाभाविक चित्रण किया है।

(2) उर्दू-हिन्दी मिश्रित भाषा का प्रयोग है। रुबाई छंद का प्रयोग है तथा पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार की प्रस्तुति है।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत गद्यांश धर्मवीर भारती द्वारा लिखित संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' से लिया गया है। इस प्रसंग में लेखक ने मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति पर चोट करते हुए देश में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या–लेखक को अपनी जीजी की बात आज भी उसी सन्दर्भ में याद है।
पचास से ज्यादा साल बीत जाने पर भी वे बातें मन पर जैसे छाप जमाये हुए हैं। कभी-कभी
तो विभिन्न सन्दर्भों में वे बातें मन को भी कचोट जाती हैं। वे कहते हैं कि हम अपने देश
के लिए क्या करते हैं? हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी माँगें हैं, जरूरतें हैं पर त्याग का कहीं कोई
नामो-निशान नहीं है। अपना हित, अपना स्वार्थ सभी के लिए केवल उद्देश्य रह गया है।
देश में चल रहे भ्रष्टाचार पर हम सब मिलकर बातें करते हैं। बढ़-चढ़ कर उन बातों में
हिस्सा लेते हैं। पर हमने कभी स्वयं को परखने की कोशिश नहीं की कि क्या हम भी उसी
स्वार्थ, उसी भ्रष्टाचार की श्रेणी में तो नहीं आ रहे हैं? कहने का आशय है कि अपने स्तर पर
अपने आपको परखने की जरूरत है कि हम भी कहीं जाने-अनजाने भ्रष्टाचार को बढ़ावा तो
नहीं दे रहे हैं। लेखक कहते हैं कि काले बादल खूब आते हैं, खूब बरसते भी हैं लेकिन

फिर भी गगरी खाली और बैल प्यासा रह जाता है। आशय है कि सरकारी नीतियाँ गरीबों की
जरूरतों के लिए खूब बनती हैं, क्रियान्वित भी होती हैं लेकिन उनका लाभ उन्हें नहीं मिल
पाता है। स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त लोग उन लाभों को जनता तक पहुँचने ही नहीं देते हैं।

विशेष–(1) लेखक ने देश में फैली भ्रष्टाचार की नीति एवं अराजकता के
विषय में चिन्तन व्यक्त किया है। वे दुःखी हैं इस तरह की स्वार्थी नीतियों से।

(2) भाषा सरल-सुबोध तथा आक्षेपपूर्ण है। 'चटखारे लेना' जैसी कहावतों का
प्रयोग हुआ है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण लेखक फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित कहानी
'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। इसमें मलेरिया और हैजे की चपेट में आए
गाँव के भयानक वातावरण का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–लेखक बताते हैं कि पूरे गाँव में हैजा और मलेरिया फैला हुआ था।
गाँव के गाँव खाली होने लगे थे। प्रतिदिन दो-तीन लाशें प्रत्येक घरों से निकलती थीं।
ऐसे में अँधेरी रात में अन्य जीवित परिवारजन आँसू बहाते रहते थे। चारों तरफ खामोशी
फैली हुई थी। प्रत्येक घर से निकलने वाला रुदन और आहें उस खामोशी में ही दबी जा
रही थीं। आकाश में चारों तरफ तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं कोई प्रकाश नजर नहीं
आता था। सभी दुःखी और गमगीन हालत में चुपचाप अँधेरे में ही बैठे रहते थे। ऐसी स्थिति
को देखकर आकाश का कोई तारा टूटकर अपनी संवेदना व्यक्त करने पृथ्वी पर जाना भी
चाहता था तो दूरी के कारण उसकी स्वयं की चमक और शक्ति सब रास्ते में ही खत्म हो
जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता को, उसकी संवेदनशीलता को देखकर तथा पृथ्वी
तक न पहुँच पाने की असफलता को देखकर मजाक बनाते थे तथा उसका उपहास उड़ाते थे।

विशेष–(1) बीमारी की भयावहता का करुण चित्र प्रकट हुआ है।

(2) सीधी-सरल भाषा का प्रयोग है।

18. **राजस्थान सरकार**

शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर

पत्र संख्या 7/100/20XX दिनांक 12 मार्च, 20XX

रविकुमार
शासन सचिव
राजस्थान, जयपुर।

प्रिय श्री संस्था प्रधानजी,

राजस्थान के सरकारी विद्यालय शिक्षा के आधारभूत केन्द्र हैं। इनमें शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी अत्यधिक मात्रा में अध्ययन करते हैं। अतः विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए विषयाध्यापकों की नियुक्ति, रिक्त पदों पर समायोजन द्वारा शिक्षण, प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन, समयबद्ध कार्य-योजना एवं शैक्षणिक कैलेण्डर अनुसार समस्त गतिविधियाँ संचालित करना, पिछड़े विद्यार्थियों पर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए। इससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित होगी।

आशा है, आप इस विषय पर विचार-विमर्श करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर बल देंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
रविकुमार

YouTube channel RK Study point 99

प्रेषिति
क, ख, ग
समस्त संस्था प्रधान,
जयपुर

अथवा
विज्ञप्ति–(आम अपील)
नगरपालिका, 'क ख ग'

क्रमांक-324
दिनांक 3 मार्च, 20XX

नगरपालिका, 'क ख ग' क्षेत्र के समस्त नागरिकों से अपील की जाती है कि वर्तमान में नगर में घूमने वाले आवारा पशुओं की रोकथाम जरूरी है। नगरपालिका क्षेत्र के कुछ लोग गायों एवं भैंसों को खुले में छोड़ देते हैं, इनके साथ साँड और घोड़े भी घूमते रहते हैं। इनके कारण जगह-जगह गोबर फैल जाता है, गन्दगी बढ़ती है तथा नागरिकों को आने-जाने में तकलीफ होती है। यातायात पर भी इसका बुरा असर पड़ता है।

अतएव सभी नागरिक बन्धुओं से ऐसे आवारा पशुओं की रोकथाम हेतु सहयोग की अपेक्षा की जाती है। नागरिकों को चाहिए कि वे अपने पालतू पशुओं को खुले में न छोड़ें और दूसरों को भी ऐसा न करने को कहें। निकट भविष्य में नगरपालिका ऐसे आवारा पशुओं को पकड़वाने की व्यवस्था करने जा रही है, इसके लिए पशु-गृह का निर्माण चल रहा है। पुनः सभी नागरिकों से एतदर्थ सहयोग की अपील की जाती है।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
प्रशासक

19. **कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम**

संकेत बिन्दु–1. कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर कदम 2. कैशलेस अर्थव्यवस्था के लाभ 3. कैशलेस अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ 4. उपसंहार।

1. कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर कदम–भारतीय अर्थव्यवस्था में 'कैशलेस' शब्द उस समय अचानक पूरे देश में चर्चा में आ गया जब 8 नवम्बर 2016 को भारत सरकार ने 500 रुपये व 1000 रुपये के नोटों की वैधता को निरंस्त करने की घोषणा की। अचानक हुए नोटबन्दी से अर्थव्यवस्था की लगभग 86 प्रतिशत मुद्रा अवैध घोषित हो गई जिससे नकदी का संकट उत्पन्न होना स्वाभाविक था। ऐसे में कैशलेस अर्थव्यवस्था की अवधारणा एक महत्त्वपूर्ण विकल्प बनकर सामने आयी।

2. कैशलेस व्यवस्था क्या है–कैशलेस अर्थव्यवस्था का तात्पर्य लेन-देन हेतु नकद के स्थान पर उसके विकल्प 'डिजिटल मनी' अर्थात् डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, पेटीएम या अन्य माध्यमों का प्रयोग करने से है।

3. कैशलेस अर्थव्यवस्था के लाभ–कैशलेस अर्थव्यवस्था बनाने के कई लाभ हैं जिसका अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ये लाभ निम्न हैं–

(1) कैशलेस से सभी लेन-देनों में पारदर्शिता आती है।

(2) इससे अर्थव्यवस्था में काले धन पर प्रभावी नियन्त्रण सम्भव है क्योंकि इससे आर्थिक लेन-देनों का ब्यौरा पता चल जाता है।

(3) इससे नकद लेकर चलने से जुड़ी असुविधाओं से मुक्ति मिलती है।

(4) इससे अर्थव्यवस्था में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

(5) कैशलेस व्यवस्था से उद्योग एवं व्यापार को बढ़ावा मिलता है।

4. कैशलेस अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ–कैशलेस अर्थव्यवस्था के अनेक लाभ हैं, किन्तु भारत जैसे विकासशील देश में अर्थव्यवस्था को कैशलेस करना अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य है। यहाँ प्रमुख चुनौतियाँ निम्न हैं–

(1) हमारे देश में जनसंख्या का एक बड़ा भाग बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ा हुआ नहीं है, यह एक बड़ी चुनौती है।

(2) भारत की एक-चौथाई जनसंख्या निरक्षर है अतः यहाँ कैशलेस अर्थव्यवस्था की बात करना एक तरीके से बेमानी है।

(3) गाँवों में अभी तक आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि ही उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ कैशलेस के विषय में सोचना भी अर्थहीन प्रतीत होता है।

(4) भारत डिजिटल सुरक्षा के मामले में अभी भी काफी पीछे है। अतः लोग कैशलेस लेन-देन को लेकर आशंकित रहते हैं।

(5) देश में कई जगहों पर इन्टरनेट सुविधा नहीं है या स्पीड बहुत धीमी है।

5. उपसंहार–भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ अभी तक आधारभूत सुविधाएँ भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं, अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है तथा लगभग एक-चौथाई जनसंख्या निर्धनता रेखा से नीचे है वहाँ कैशलेस अर्थव्यवस्था की कल्पना करना इतनी जल्दी सम्भव नहीं। हमें पहले आधार बनाना होगा तथा फिर लोगों को इसके लिए तैयार करना होगा।

मॉडल पेपर 5

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(स)	(द)	(द)	(अ)	(अ)	(अ)	(ब)	(अ)	(द)	(स)	(ब)	(ब)

2. (i) परिवीक्षा (ii) शब्दालंकार (iii) अभिधा (iv) लक्षणा (v) मौखिक (vi) अभिव्यक्ति।

3. (i) भारत में प्राचीन काल में द्रविड़ और आर्य संस्कृति का समन्वय हुआ, फिर मुस्लिम और अंग्रेज संस्कृतियों से भारतीय संस्कृति ने आदान-प्रदान किया।
(ii) 'मुश्किल' के स्थान पर गद्यांश में 'जटिल' पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त हुआ है।
(iii) भारतीय संस्कृति में समन्वयशीलता अपेक्षित है किन्तु समन्वय में अपना आपा न खो बैठना चाहिए, इस बात का ध्यान रखना चाहिए।
(iv) भारत में विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्पर्क में आने से भारतीय संस्कृति की समस्या जटिल हो गयी।
(v) पुराने जमाने में द्रविड़ और आर्य-संस्कृति में समन्वय उत्तम रीति से था।
(vi) **शीर्षक–**'भारतीय संस्कृति का महत्त्व' या 'भारतीय संस्कृति का समन्वय'।

4. (i) जिस प्रकार अस्ताचल के बाद उदयाचल पर आभा फैलती है, उसी प्रकार जीवन में निराशा के बाद आशा का संचार करो, तभी जीवन मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

youtube channel RK study point 99

(ii) नींद में सुन्दर सुखमय सपने देखना तथा चिन्ता से उत्पन्न दुःख को कवि ने वास्तविक सुख-दुःख नहीं माना है।

(iii) 'फूल' का आशय सुन्दर सुखमय स्थिति तथा 'शूल' का आशय अतीव कष्टदायक या बाधक स्थिति है।

(iv) इसमें कवि ने उन लोगों पर आक्षेप किया है जो जीवन की कठोर वास्तविकताओं से बेखबर हैं और कोरी कल्पनाओं और सपनों की दुनिया में खोये रहते हैं।

(v) गहरी नींद में सोने का अर्थ है, जीवन की कठोर वास्तविकताओं से बेखबर होना।

(vi) कवि लोगों को इसलिए जगाना चाहता है ताकि मनुष्यों में गतिशीलता आ सके और वे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकें।

खण्ड-ब

5. 'समाचार लेखन' के समय समाचार के मुखड़े (इन्ट्रो) यानी पहले पैराग्राफ या शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं क्या, कौन, कब और कहाँ? इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों कैसे और क्यों का जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है।

6. कवि बादल को सामाजिक क्रान्ति का प्रतीक बताते हुए कहता है कि बादल आकाश में बार-बार गिरकर भी ऊँचाइयों का स्पर्श करते हैं। उनमें गर्जन-तर्जन तथा ऊपर उठकर वर्षा करने की होड़ लगी रहती है। वे क्रान्ति लाने के लिए तैयार रहते हैं।

7. बाबा साहेब आम्बेडकर ने बताया कि मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती है—(1) शारीरिक वंश-परम्परा, (2) सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात् सामाजिक परम्परा के रूप में माता-पिता की कल्याण-कामना, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञानार्जन आदि सभी उपलब्धियाँ तथा (3) मनुष्य के अपने प्रयत्न।

8. यशोधर बाबू धार्मिक व कर्मकाण्डी नहीं थे फिर भी उन्होंने इस संबंध में अपने मर्यादा पुरुष किशनदा द्वारा स्थापित मानक हमेशा अपने सामने रखे। इसलिए जैसे-जैसे उम्र ढल रही है वैसे-वैसे वे भी किशनदा की तरह रोज मंदिर जाने लगे, संध्या पूजन करने लगे और गीता प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का प्रयत्न करने लगे।

9. लेखक और माँ दत्ताजी राव देसाई के घर पिता की शिकायत लेकर गये। माँ ने दत्ताजी राव से सब कुछ कह दिया कि दिनभर आजादी से गाँव में घूमते रहें। इसलिए उन्होंने इस लड़के का पढ़ना बन्द करवाकर खेती में जोत दिया है। ऐसा सुनते ही दत्ताजी राव चिढ़ गये और बोले कि आने दे उसे मेरे पास, मैं सुनाता हूँ उसे खरी-खोटी। उसे तो मैं देख लूँगा।

खण्ड-स

10. तितलियाँ उड़ती हैं और फूल खिलते हैं। इसी प्रकार कवि भी कविता-रचना में कल्पनाओं-भावनाओं की उड़ान भरता है। उसकी काल्पनिक उड़ान से कविता फूलों की तरह खिलती एवं विकसित होती है। अतः 'उड़ने' और 'खिलने' से कविता का मनोगत उल्लास से अनुभूतिमय सम्बन्ध है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए उड़ने से तात्पर्य यह है कि परिश्रम करना है, यदि हम परिश्रम करेंगे तो फूलों की तरह खिलेंगे और हमें अपना लक्ष्य प्राप्त होगा।

अथवा

कवि उमाशंकर जोशी छोटे चौकोर खेत को कागज का पन्ना कहते हैं। कवि का कार्य भी एक किसान के कार्य के समान ही होता है। कविता रचना करना, खेती की तरह ही श्रम साध्य कार्य है। कागज के पन्ने और खेत के आकार में भी समानता है जैसे बुआई, अंकुरण और पौधों के पनपने तथा फल फूल देने में है। भाव यह है कि कविता भी शब्दों में भाव के बीजों द्वारा अंकुरित होती है। कल्पना के सहारे विकसित होती है। जिस प्रकार अपनी खेती की उन्नति को देख किसान हर्षित होता है उसी प्रकार कवि भी चौकोर पन्ने पर लिखी रचना के भाव-संदेश को देखकर प्रसन्न होता है।

11. हम लेखक के इस मत से सहमत हैं। बाजार की शक्तियाँ अर्थात् माँग अधिक और आपूर्ति कम होने से व्यापारी मूल्य-वृद्धि कर देते हैं। इस तरह माँग अधिक होने से दुकानदार शोषण और लूट पर उतर आते हैं। उदाहरण के लिए बाजार में चीनी, प्याज एवं दालों के दाम आसमान छू रहे हैं, फिर भी कम मिल रहे हैं। इसका मूल कारण लोगों की आवश्यकता या माँग की अधिकता है, जो शोषण का ही रूप है।

अथवा

आम्बेडकर का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास का पूरा अधिकार है। हमें ऐसे व्यक्तियों के साथ यथासम्भव समान व्यवहार करना चाहिए। समाज के सभी सदस्यों को आरम्भ से ही समान अवसर तथा समान व्यवहार उपलब्ध कराये जाने चाहिए। समता यद्यपि काल्पनिक वस्तु है, फिर भी सभी परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए यही मार्ग उचित है और व्यावहारिक भी है।

12. हमारे विचार में पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था और लेखक के पिता का रवैया अनुचित था। क्योंकि पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में दत्ताजी राव का रवैया भी सही था। इसी कारण उन्होंने लेखक के पिता को समझाया, पाठशाला न भेजने की बात पर धमकाया और बच्चे को कल से ही पढ़ाई के लिए भेजने का निर्देश दिया था। लेखक के पिता का रवैया गँवई-गँवार जैसा था। वह स्वयं तो मस्त रहता था और खेती के काम में हाथ नहीं लगाता था, जबकि सारा काम बेटे से करवाता था। उसी ने उसे पढ़ने से रोका था। वह कहता था कि "तू बालिस्टर नहीं होने वाला है।" पुत्र को खेती में लगाने और उसकी पढ़ाई रोकने में उसका रवैया सर्वथा अनुचित था।

अथवा

सिंधु घाटी की सभ्यता के संबंध में कुछ विद्वानों का मानना है कि वह मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता ही थी जबकि कुछ का भ्रम था कि यहाँ अनाज नहीं उपजाया जाता था, उसका आयात ही होता था। यह सोच का ही अन्तर था। इनके उपकरण खेती-बाड़ी में प्रयोग किए जाते थे। कुछ भी हो, विद्वानों का मानना है कि यहाँ ज्वार, बाजरा और रागी की उपज होती थी। लोग खजूर, खरबूजे और अँगूर उगाते थे। झाड़ियों से बेर जमा करते थे। इसके अलावा यहाँ के लोग पशु भी पालते थे और दूध का सही उपयोग करते थे।

13. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के नायक यशोधर बाबू एक ऐसे संस्कारी व्यक्ति हैं, जो परंपराओं से चिपके रहते हैं। परन्तु उनके पुत्र-पुत्री एवं पत्नी भी नई पीढ़ी के संस्कारों को अपना कर आधुनिक बन जाते हैं। उन्हें अपने से ही मतलब रह जाता है, रिश्तेदारों आदि से नहीं। परन्तु यशोधर बाबू किशनदा के आदर्शों पर चलकर परंपराओं को निभाने की चेष्टा करते हैं। इस कारण उनकी परिवारजनों से टकराहट होती है फिर भी वे सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास करते रहते हैं। अतः उक्त कथन पूर्णतया सत्य है।

youtube channel study point 99

अथवा

मुअनजो-दड़ो में मिले तालाब को ही महाकुंड नाम दिया गया है। यह कुंड वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। इसको पवित्र रखने के लिए उसके तल में पक्की ईंटों का जमाव किया गया था। दीवारों पर भी पक्की ईंटों की चिनाई की गयी थी। ईंटों के बीच में चूने तथा चिरोड़ी के गारे का प्रयोग किया गया था, कुंड की बगल की दीवार के साथ एक दूसरी दीवार खड़ी की गई थी। जिसमें सफ़ेद डामर का प्रयोग किया गया था। कुंड को भरने के लिए जो कुआँ था, वह दोहरे घेरे वाला था तथा इसके पानी को बाहर निकालने के लिए भी पक्की नालियाँ थीं जो पत्थरों से ढकी हुई थीं।

14. **मोबाइल केन्द्रित जीवन**

आधुनिक युग में मोबाइल या सेलफोन संचार-सुविधा का विशिष्ट साधन बन गया है। अब उच्च वर्ग के लोगों से लेकर रिक्शे-टेम्पों वाले, ट्रक-बस-कार वाले, सामान्य वर्ग की महिलाएँ, छात्र एवं कामगर आदि सभी मोबाइल का उपयोग जीवन के अभिन्न अंग की तरह करने लगे हैं। चाहे शिक्षा-क्षेत्र हो, खेलकूदों के समाचार जानने हों, मनचाहे गाने सुनने हों एवं फोटो खींचना व सन्देश भेजना हो, सब काम मोबाइल से सध जाते हैं। अब इन्टरनेट, ई-मेल, शापिंग, बैंकिंग आदि अनेक कार्य मोबाइल से हो जाते हैं। इस तरह वर्तमान में सारी जीवनचर्या मोबाइल केन्द्रित हो गई है। मोबाइल का आविष्कार हमें सशक्त बनाने के उद्देश्य से किया गया था लेकिन इसकी लत कई गम्भीर समस्याओं का कारण बनती है जैसे सिरदर्द, आँखों की रोशनी कमजोर होना, नींद न आना, सामाजिक अलगाव, तनाव, रिश्तों में दूरियाँ, वित्तीय समस्याएँ आदि।

अथवा

अन्तरिक्ष पर भारत का दबदबा

अन्तरिक्ष अनुसन्धान के क्षेत्र में भारत का दबदबा निरन्तर बढ़ रहा है। कुछ दिनों पूर्व पीएसएलवीसी-16 के द्वारा एक साथ सात उपग्रहों को अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित कर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत का अन्तरिक्ष प्रक्षेपण यान केवल भरोसेमन्द ही नहीं, बल्कि किफायती भी है। इस बार प्रक्षेपित किये गये उपग्रह 'रिसोर्टसैट-2' के साथ ही लगभग आठ हजार करोड़ के वैश्विक प्रक्षेपण बाजार में भारत की विश्वसनीयता तथा धमक भी बढ़ी है। पीएसएलवी प्रक्षेपण यान के मामले में भारत ने जहाँ विशेषज्ञता हासिल कर ली है, वहीं इससे उत्साहित होकर 'इसरो' अमेरिकी अन्तरिक्ष एजेंसी 'नासा' के सहयोग से 'मिशनमून' पर विचार कर रहा है जो सफल भी हो रहा है। इससे भी अन्तरिक्ष जगत् में भारत की अनवरत बढ़त के संकेत मिलने लगे हैं।

15. रघुवीर सहाय समकालीन हिन्दी कविता के संवेदनशील 'नागर' चेहरा हैं। इनका जन्म सन् 1929 में लखनऊ (उ.प्र.) में हुआ। वहीं से उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया। 'दैनिक नवजीवन' (लखनऊ) से 1949 में पत्रकारिता प्रारंभ की। सन् 1951 में दिल्ली चले गए। यहाँ 'प्रतीक' के सहायक सम्पादक, आकाशवाणी के समाचार विभाग में उपसम्पादक का दायित्व निभाया। अज्ञेय द्वारा सम्पादित दूसरा सप्तक (1951) में, महत्त्वपूर्ण काव्य संकलन 'सीढ़ियों पर धूप में', 'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो'। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित सहाय जी का निधन सन् 1990 में दिल्ली में हुआ। पेशे से सिर्फ पत्रकार ही नहीं, सिद्धकथाकार और कवि भी थे। बातचीत की शैली में उन्होंने लिखा और बखूबी लिखा।

अथवा

हिन्दी साहित्य में फणीश्वरनाथ 'रेणु' आंचलिक उपन्यासकार, कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका जन्म 4 मार्च, 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना में हुआ था। इनका जीवन उतार-चढ़ावों एवं संघर्षों से भरा हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएँ 'मैला आँचल', 'परती-परिकथा', 'दीर्घतपा', 'जुलूस', 'कितने चौराहे' (उपन्यास); 'दुमरी', 'अग्निखोर', 'गाँव की मरुक' (कहानी संग्रह); 'ऋण जल-धन जल', 'वनतुलसी की गंध' (संस्मरण); नेपाली क्रांतिकथा (रिपोर्ताज) आदि हैं। साहित्य के अलावा विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक आन्दोलनों में भी उन्होंने सक्रिय भागीदारी की। 11 अप्रैल, 1977 को पटना में इनका निधन हुआ था।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**–प्रस्तुत पद्यांश भक्त कवि तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'लंका-कांड' के 'लक्ष्मणमूर्च्छा और राम का विलाप' से अवतरित किया गया है। इसमें हनुमान द्वारा लाई गई संजीवनी बूटी से लक्ष्मण के सचेष्ट होने के प्रभाव का वर्णन करते हुए कहा गया है कि—

व्याख्या–मेघनाथ के शक्ति बाण से लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं। हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने में देर हो जाती है। इसलिए राम अत्यन्त विलाप कर रहे थे। राम के विलाप का स्वर सुन बाहर बैठे हुए वानरों का समूह अत्यन्त व्याकुल होता है। उसी समय संजीवनी बूटी लेकर हनुमान का आगमन हुआ। तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे करुण रस में अचानक वीर रस का संचार हो गया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि हनुमान के आने से शोक का वातावरण खुशी में बदल गया। श्रीराम ने प्रसन्नता से हनुमान को अपने गले लगा लिया। प्रभु श्रीराम परम ज्ञानी होकर भी हनुमान के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हुए। वैद्य सुषेण ने संजीवनी बूटी द्वारा लक्ष्मण का उपचार किया। परिणामस्वरूप लक्ष्मण प्रसन्नता से उठकर होश में आ गये जिससे सभी भालू व वानर प्रसन्न हुए। प्रभु श्रीराम ने प्रिय भ्राता लक्ष्मण को अपने हृदय से लगा लिया। तत्पश्चात् हनुमान ने सुषेण वैद्य को जिस विधि से जहाँ से लेकर आये थे, वहाँ यथास्थान पहुँचाया।

विशेष–(1) इसमें तुलसीदास ने श्रीराम की व्याकुलता, खुशी एवं कृतज्ञता का सजीवता से चित्रण किया है।

(2) इसमें करुण रस, वीर रस, सोरठा, चौपाई छन्द, अनुप्रास एवं उदाहरण अलंकार की प्रधानता है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' की कविता 'पतंग' से लिया गया है। इसमें कवि ने पतंग उड़ाते समय बच्चों के सामने आती छतों की खतरनाक स्थिति को बताया है।

व्याख्या–कवि बताता है कि पतंग उड़ाते समय बच्चों का ध्यान पतंग की डोर, उसकी ऊँचाई और उड़ान पर ही रहता है। जिस प्रकार डोर के सहारे पतंग की ऊँचाई निर्भर रहती है, उसी प्रकार उसी धड़कती पतंग की ऊँचाई उन बच्चों को भी संभाल लेती है। उन्हें देख कर लगता है कि वे भी अपने रंध्रों के सहारे पतंग के साथ-साथ उड़ रहे हैं।

कवि कहते हैं कि आकाश में अपनी उड़ती पतंगों को देखकर बच्चे अत्यधिक उत्साही हैं, मानो अपने रंध्रों के सहारे वे भी उड़ रहे हों। कभी-कभार वे छतों के

youtube channel pk study point 99

खतरनाक किनारों से गिर भी जाते हैं। परंतु अपने लचीले शरीर के कारण बच भी जाते हैं। बचने के कारण उनके मन का बचा-खुचा भय भी समाप्त हो जाता है। फिर वे भयरहित होकर निडरता के साथ चमकते सूर्य के सामने फिर से आते हैं। उनकी गति और उत्साह और भी तेज हो जाता है। ऐसा लगता है मानो पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई बच्चों के भागते तेज कदमों के समीप स्वयं ही आ रही हो।

विशेष–(1) बच्चे खतरों को झेल कर साहसी बनते हैं तथा दुगुने मनोवेग से पुनः अपना कार्य शुरू कर देते हैं, इस भाव को प्रस्तुत किया गया है।

(2) मानवीकरण, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग तथा मुक्त छन्द की प्रस्तुति है। भाषा में लाक्षणिकता व दृश्य बिम्ब का प्रयोग है।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत अवतरण लेखक फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित कहानी 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। बीमारी का भय और ढोलक की आवाज का वर्णन इसमें व्यक्त किया गया है।

व्याख्या–लेखक बताते हैं कि हैजे और मलेरिया बीमारियों ने गाँव के चारों तरफ मृत्यु का भय व आतंक फैला रखा था। रात्रि होते ही सब डर कर अपने घरों में छिप जाते थे कि सुबह तक मृत्यु न जाने किस-किस के घर आ जाये। रात के इस भय को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही अपनी तेज आवाज में चुनौती देती रहती थी। पहलवान सुबह से शाम तक जिस भी विचार से ढोलक बजाता हो, लेकिन उस ढोलक की उत्तेजना भरी आवाज आने से हुए रोगी या मरणासन्न की स्थिति में पहुँचे हुए लोगों में दवा, उपचार व भोजन की चेतना समान संजीवनी शक्ति ही उनमें भरती थी। ढोलक की थाप से सभी बूढ़े-बच्चे-जवानों की आँखों में दंगल का अखाड़े का उत्साह भरा माहौल दिखाई देने लगता। चेतना-शून्य शरीर की नसों में बिजली की-सी तेजी दौड़ने लगती थी। कहने का आशय है कि पहलवान की ढोलक उस दृष्टिविहीन गाँव के लोगों में साहस, उत्साह व चेतना का संचार करती थी।

विशेष–(1) पहलवान अपना उत्साह, चेतना व साहस वृत्ति का प्रसार ढोलक की तेज थाप के माध्यम से करता था।

(2) भाषा सरल-सहज व बोधगम्य है। संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश लेखक धर्मवीर भारती द्वारा लिखित संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' से लिया गया है। इसमें लेखक ने पानी की बर्बादी पर आक्षेप किया है।

व्याख्या–लेखक धार्मिक मान्यताओं के नाम पर समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि कितना नुकसान होता है इस तरह के अन्धविश्वासों से। जब बच्चे इन्द्र सेना का नाम ले घर-घर में घूम कर स्वयं पर पानी डलवाते हैं इस मान्यता के साथ कि ऐसा करने से इन्द्र देवता प्रसन्न होकर अच्छी वर्षा करेंगे, तब लेखक का मन दुःखी हो उठता है। पानी की भयंकर कमी के बावजूद लोग अपने पास बचाकर रखा पानी भी अन्धविश्वासों की भेंट चढ़ा देते हैं। लेखक इस बात पर नाराज होकर कहते हैं कि कैसे इसे इन्द्र की सेना कहता है? अगर वे सच में इन्द्र की सेना होते और इन्द्र महाराज से पानी दिलवा सकते तो, क्यों नहीं स्वयं के लिए पानी माँग लेते? क्यों घर-घर घूमकर लोगों के घरों का पानी बर्बाद करवाते हैं। यह सब दिखावा है। मान्यता के नाम पर पाखण्ड है, अन्धविश्वास है। लेखक मानते हैं कि भारतीय इन्हीं अन्धविश्वासों और पाखण्डों के कारण अंग्रेजों से पीछे रह गये और उनके गुलाम

बन गए। उनके अनुसार भारतीयों की बुद्धि पर तर्क की जगह अन्धविश्वासों ने कब्जा कर रखा है जो उनके पिछड़ने का एक मुख्य कारण है।

विशेष–(1) लेखक ने अन्धविश्वासों व पाखण्डों पर व्यंग्य करते हुए भारतीयों के पिछड़ने का कारण बताया है।

(2) भाषा सरल-सहज व बोधगम्य है।

18.

राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड,
जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर

पत्रांक : 21/5/रा.खा.बो./अ/98/20XX दिनांक : 8 जुलाई, 20XX

रोशन चौधरी
अध्यक्ष

विषय : खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्डों के अध्यक्षों की बैठक।

श्री राजभरजी,

हमारे कार्यालय द्वारा आपके बोर्ड को 12 जून, 20XX को इस आशय का पत्र भेजा गया था कि आगामी माह में स्वतंत्रता दिवस के बाद उत्तरी क्षेत्र के खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्डों के अध्यक्षों की एक बैठक आयोजित की जायेगी। इस सम्बन्ध में अन्य बोर्ड-अध्यक्षों के पत्रोत्तर आ गये हैं, परन्तु आपका पत्रोत्तर नहीं मिला। अतएव यथाशीघ्र पत्र भेजकर सूचित करें, ताकि बैठक की तिथि निश्चित की जा सके।

सधन्यवाद!

भवदीय,
(हस्ताक्षर......)
रोशन चौधरी

सेवा में,
श्री राजकुमार राजभर
अध्यक्ष,
उत्तर प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड,
सरोजिनी नगर, लखनऊ।

अथवा

विज्ञप्ति
(पंजीकरण हेतु)
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान,
अजमेर।

प. 6(4) मा.शि.बो. 20XX दिनांक 25-06-20XX

राजस्थान प्रदेश के समस्त पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि बोर्ड द्वारा जो पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, उनका विक्रय करने के लिए पुस्तक-विक्रेताओं को पंजीकरण कराना आवश्यक है। यह पंजीकरण 25 जून, 20XX तक निर्धारित प्रपत्र में करना चाहिए। इस सम्बन्ध में पंजीकरण प्रपत्र एवं अन्य शर्तों आदि का विवरण बोर्ड कार्यालय से निर्धारित शुल्क देकर अथवा बोर्ड की वेबसाइट पर प्राप्त किया जा सकता है।

(हस्ताक्षर)
अनुभाग अधिकारी
कृते-सचिव

youtube channel RK study point 99

19. मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. खाद्य-पदार्थों में मिलावट : एक समस्या 3. मिलावटी माल पर नियन्त्रण 4. मिलावटी कारोबार का दुष्प्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–वर्तमान काल में धनार्जन की होड़ एवं नैतिकता का पतन–इन दोनों कारणों से मिलावटी माल बनाने-बेचने का कारोबार असीमित बढ़ रहा है। खाद्य-पदार्थों में मिलावट के नये-नये तरीके अपनाये जा रहे हैं और इससे जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। यद्यपि मिलावट करना और ऐसे माल की आपूर्ति-विक्रय करना कानूनी दृष्टि से अपराध है, समाज की नैतिकता एवं जीवन-मूल्यों का पतन है, फिर भी चोरी-छिपे यह कुकृत्य खूब चल रहा है।

2. खाद्य-पदार्थों में मिलावट : एक समस्या–खाद्य पदार्थों में मिलावट करना अब आम बात हो गई है। दूध, पनीर, मावा, घी, तेल आदि में मिलावट या नकली माल बनाने का धन्धा जगह-जगह चोरी-छिपे चल रहा है। दाल, चावल, गेहूँ में पत्थर-कंकड़ मिलाये जाते हैं। पिसी हुई मिर्च, हल्दी, धनिया तथा मसालों में खूब मिलावट की जाती है। चाय की पत्तियाँ, बेसन, तरल पेय-पदार्थों तथा डिब्बा-बन्द रसदार चीजों और मिठाइयों में कितनी मिलावट हो रही है, इसका पता नहीं चल पाता है। परन्तु अब बड़ी नामी कम्पनियों की दवाइयों में तथा अन्य उत्पादों में भी मिलावट होने की शिकायतें आ रही हैं। इस तरह मिलावटखोरी का धन्धा एक समस्या बन गया है।

3. मिलावटी माल पर नियन्त्रण–सरकार ने खाद्य-पदार्थों तथा अन्य सभी चीजों में मिलावट करना कानूनी अपराध घोषित कर रखा है। इसके नियन्त्रण के लिए भी प्रभावी व्यवस्था कर रखी है। खाद्य-पदार्थों में मिलावट रोकने के लिए खाद्य-निरीक्षक, स्वास्थ्य निरीक्षक तथा अन्य बड़े प्रशासनिक अधिकारियों को पूर्ण अधिकार दे रखे हैं। ये सभी अधिकारी प्राय: तीज-त्योहारों पर जाँच-पड़ताल करते हैं, छापे मारते हैं तथा मिलावटी खाद्य-पदार्थों के नमूने लेकर प्रयोगशाला में भेजते हैं अथवा न्यायालय में मुकदमा या चालान कर देते हैं। किन्तु इसमें भी लालफीताशाही और भ्रष्टाचार व्याप्त है। फलस्वरूप इस मिलावटी कारोबार पर कठोरता से और पूरी तरह नियन्त्रण नहीं हो रहा है।

4. मिलावटी कारोबार का दुष्प्रभाव–मिलावटी खाद्य-पदार्थों को प्रयोगशालाओं में जाँचने-परखने पर जो तथ्य सामने आये हैं, वे रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। नकली घी, नकली पनीर व मावा में यूरिया-शैम्पो आदि मिलाया जाता है। नकली शहद, पिसे हुए मसाले, मिर्च आदि में रंग देने के लिए हानिकारक केमिकल मिलाये जाते हैं। फलों को पकाने के लिए रंगा, नौसादर जैसे खतरनाक पदार्थ अपनाये जाते हैं। खाद्य-पदार्थों एवं मिठाइयों को चमकदार बनाने के लिए खतरनाक केमिकलों का प्रयोग किया जाता है। इस तरह मिलावटी कारोबार से जनता का स्वास्थ्य भी बिगड़ रहा है, धन-हानि भी हो रही है और नैतिक आदर्शों का पतन भी हो रहा है।

5. उपसंहार–मिलावटी चीजों का कारोबार जघन्य अपराध है। खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वाले समाज के दुश्मन हैं। तुच्छ स्वार्थ की खातिर ऐसे अपराधी कामों में प्रवृत्त लोगों को कठोर-से-कठोर सजा मिलनी चाहिए। साथ ही भारतीय समाज को भी नैतिक-मूल्यों का पालन करना चाहिए। मिलावटखोरी पर नियन्त्रण रखना स्वस्थ परम्परा के लिए जरूरी है।

मॉडल पेपर 6

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(स)	(स)	(अ)	(अ)	(ब)	(ब)	(द)	(स)	(स)	(अ)	(अ)	(ब)

2. (i) लक्षणा (ii) भाषा (iii) वक्रोक्ति (iv) विरोधाभास (v) Audio-visual (vi) कदाचार।

3. (i) राष्ट्रीयता से प्राय: राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं प्रेम रखने की भावना का आशय लिया जाता है।
(ii) 'देशभाव' का पर्यायवाची 'राष्ट्रीयता' प्रयुक्त हुआ है।
(iii) एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार राष्ट्रीयता मन की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सर्वोपरि कर्त्तव्यनिष्ठा राष्ट्र के प्रति अनुभव की जाती है।
(iv) जातीय जीवन, उसकी संस्कृति तथा भूमिगत सीमाबद्ध परिवेश ये सब राष्ट्रीयता के उपकरण हैं।
(v) राष्ट्रीय साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त साहित्य लिया जा सकता है जो किसी देश की जातीय विशेषताओं का परिचायक है।
(vi) **शीर्षक**–'राष्ट्रीयता का महत्त्व'।

4. (i) आधुनिक काल में मानव ने विज्ञान द्वारा नये-नये आविष्कार कर भौतिकता की ओर जा रहा है, जिससे वह अपने ही विनाश का सामान तैयार कर रहा है।
(ii) आधुनिक मानव को यह बात ज्ञात नहीं है कि जीवन का उद्देश्य मानवता का कल्याण करना है।
(iii) वर्तमान काल में अतिशय भौतिकवादी प्रवृत्ति के कारण, सुख-भोग के नये-नये साधनों के आविष्कार के कारण मानव-सभ्यता का पतन हो रहा है।
(iv) 'प्रच्छन्नता' का आशय है–गोपनीय या रहस्यमय। धरती पर आँधी-तूफान या विनाश या खुशहाली आदि का रहस्य विज्ञान ने जान लिया है।
(v) मनुष्य ने समुद्र से आकाश तक सब जगह विज्ञान से नये-नये आविष्कार करके सबको भयभीत कर दिया।
(vi) विज्ञान के द्वारा नयी-नयी खोज करते हुए मनुष्य को अपना लक्ष्य, उद्देश्य अर्थात् मानवता का कल्याण करना ही ज्ञात नहीं है तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ है।

खण्ड-ब

5. जनसंचार माध्यम के निम्नलिखित लाभ हैं—
- धर्म से लेकर सेहत तक की जानकारी मिल रही है।
- इससे मानव जीवन सरल, समर्थ व सक्रिय हुआ है।
- सरकारी कामकाज पर निगरानी बढ़ी है।
- सूचनाओं व जानकारियों के कारण लोकतान्त्रिक प्रक्रिया को मजबूती मिली है।

youtube channel RK study point 99

6. इसका आशय यह है कि यौवन में प्रिय के बिछुड़ जाने के बाद की उसकी मधुर यादों का खूबसूरत चित्रण किया गया है। वह अपने प्रेमिका रूप में कोमल भावनाओं और यादों को लिये फिरता है। अर्थात् अपने प्रियतम के यादों के स्पर्श को लिये घूमते हैं।

7. इस सम्बन्ध में बौद्धों के विचार थे कि जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, उसे सबसे पहले दान देना पड़ता है—त्याग करना पड़ता है। बिना त्याग के दान नहीं होता है। जो चीज बहुत कम है, उसका त्याग करने से ही लोक-कल्याण होता है। इससे स्वार्थ भावना कम होती है और परोपकार भावना बढ़ती है।

8. अन्ना [illegible] की कविता जिसकी पहली पंक्ति इस प्रकार है "[illegible] पतली पैंसे गाया [illegible]" को मास्टर की चाल से अपना लेखक ने अपनी कक्षा में बैठकर गाई जो मास्टरजी की अपेक्षा ज्यादा ही अभिनय के साथ गायी गई। लेखक का यह गायन मास्टरजी को अच्छा लगा इसलिए अन्य कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाने के सम्बन्ध में भी उससे गवाकर लेखक को सम्मान दिलाया।

9. खुदाई में मिली नर्तकी की मूर्ति के संबंध में उन्होंने कहा था कि दुनिया में इसकी जोड़ की दूसरी चीज शायद ही होगी, यह बहुत ही बेजोड़ कलाकृति वाली मूर्ति है। खुदाई में मिली नर्तकी की मूर्ति अब दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है। वहाँ वह सुरक्षित है।

खण्ड-स

10. प्रस्तुत कविता में प्रातःकालीन धुँधले-नीले आकाश को राख से लीपा हुआ चौका बताया गया है। फिर उसे लाल केसर से धुली हुई बहुत काली सिल और स्लेट पर लाल खड़िया चाक के समान बताया गया है। लीपा हुआ चौका अर्थात् रसोई, काली सिल अर्थात् मिर्च-मसाला पीसने का सिलबट्टा तथा स्लेट आदि उपमान गाँव के परिवेश से लिये गये हैं। शहरों में इस तरह की चीजें नहीं दिखाई देती हैं। "किसी की गौर झिलमिल देह" का उपमान भी ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित है। इस तरह इस कविता में गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र उपस्थित किया गया है।

अथवा

कवि ने बताया है कि टेलीविजन (मीडिया) के लोग स्वयं को बहुत ताकतवर समझते हैं। इस कविता में एक दुर्बल अपाहिज व्यक्ति है। वह विवश है और उसे दूरदर्शन के कार्यक्रम का हिस्सा बनना पड़ता है। दूरदर्शन द्वारा सामाजिक कार्यक्रम के नाम पर लोगों के दुःख-दर्द बेचने का काम होता है। उन्हें अपाहिज के दुःख-दर्द और मान-सम्मान की कोई परवाह नहीं होती है। उन्हें अपने कार्यक्रम की लोकप्रियता हेतु उसे पेश करना है जिससे उन्हें कमाई हो सके। इस प्रकार कविता ने मीडिया का व्यावसायिक रूप प्रस्तुत किया है।

11. पहली कन्या के बाद जब भक्तिन ने दो पुत्रियों को जन्म दिया, तो सब पुत्र जन्म देने वाली [illegible] के कारण वह उपेक्षा और घृणा का शिकार बनी। भक्तिन की सास तीन पुत्रों की माँ थी, उसने भी भक्तिन की उपेक्षा की। भक्तिन अपनी विद्रोहिणी तथा स्वाभिमानी की तरह चुप बैठ नहीं कर सकी। विचारणीय बात यह है कि भक्तिन को घृणा और उपेक्षा परिवार की नारियों से ही मिली, अपने पति से नहीं। तीन कन्याएँ पैदा करने पर भी पति ने उसके प्रति प्रेम में कमी नहीं आने दी। इस

घटना से यह धारणा स्पष्ट हो जाती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है और वही एक-दूसरे की उपेक्षा करती हैं, आपस में ईर्ष्या-द्वेष रखती हैं।

अथवा

सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए समाज में बहुविध प्रकार के हित एवं कल्याणकारी कार्यों में सबका भाग होना चाहिए तथा सभी को निस्संकोच उन हितों की रक्षा के प्रति सजग और सतर्क होना चाहिए। सभी के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव होना चाहिए। विश्वास और आस्था की अखण्ड नींव होनी चाहिए। समता, भ्रातृत्व एवं स्वतंत्रता तीनों तत्वों के अनुसार सम्पूर्ण लोकतंत्र की नींव होनी चाहिए। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की पद्धति नहीं है अपितु लोकतंत्र सामूहिक दिनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।

12. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में मुख्य रूप से पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के सम्बन्धों का चित्रण किया गया है। यशोधर बाबू प्राचीन मान्यताओं के समर्थक हैं, परम्पराओं से जुड़े हुए हैं, जबकि उनके बच्चे अर्थात् नए बच्चे पश्चिमी संस्कृति को अपनाए हुए हैं। इसलिए आधुनिक परिवेश में पीढ़ियों का द्वन्द्व बढ़ने लगा है। पुरानी पीढ़ी हाशिये पर बैठी लाचार नजर आने लगी है। यही कहानी का मूल संदेश है। लेखक नई पीढ़ी को संदेश देना चाहता है कि वह अपने पूर्वजों को तिलांजलि न दे तथा नई चुनौतियों के अनुसार ढलना सीखे।

अथवा

'जूझ' आत्मकथात्मक उपन्यास का जितना अंश पाठ्य रूप में संकलित है वह पूरी तरह शिक्षाप्रद और संदेशप्रद है। इसके माध्यम से लेखक ने पाठकों को संघर्ष करने की सीख दी है। मनुष्य के जीवन की परिस्थितियाँ चाहे जितनी विकट हों, चाहे भीषण संकट हों, बाधाएँ हों, उनसे घबराना नहीं चाहिए। उसे आत्मविश्वास, धैर्य, हिम्मत और संघर्ष के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए। पढ़ाई छूट जाने के बाद भी लेखक के मन में पढ़ने की तीव्र लालसा है, क्योंकि आगे पढ़कर ही नौकरी प्राप्त की जा सकती है और जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

13. मुअनजो-दड़ो के समीप बहती हुई सिन्धु नदी, नगर में स्थित कुएँ, महाकुण्ड, स्नानागार तथा पानी-निकासी की बेजोड़ व्यवस्था को देखकर लेखक ने सिन्धु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' कहा है। हम लेखक के कथन से सहमत हैं। इसके कारण निम्न हैं—

(1) संसार की सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ, यह सर्वमान्य प्रमाण है। मुअनजो-दड़ो के समीप भी सिन्धु नदी बहती थी।

(2) मुअनजो-दड़ो में पानी निकासी के लिए पक्की ईंटों की नालियाँ बनी हुई थीं, जो कि उस समय की जल-व्यवस्था की परिचायक थीं।

(3) वहाँ पर पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ थे। एक महाकुण्ड था।

(4) महाकुण्ड के पास कुछ स्नानागार बने थे। वहाँ के खण्डहरों में बने स्नानागार स्पष्ट दिखाई देते थे, जो कि प्रायः सभी छोटे-बड़े घरों में बने हुए थे।

(5) नगर के मकानों की बनावट ऊँचे टीलों पर थी, जो कि बाहर के पानी के अन्दर को रोकने के लिए की गई थी।

इन विशेषताओं को देखकर हम कह सकते हैं कि सिन्धु घाटी सभ्यता जल-संस्कृति का श्रेष्ठ प्रमाण है।

अथवा

'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू ठेठ ग्रामीण परिवेश से मैट्रिक पास करके दिल्ली महानगर में किशनदा के पास आये। उनके पास नौकरी करते हुए उन्होंने भारतीय संस्कृति की परम्पराओं का परित्याग नहीं किया। किन्तु उनकी पत्नी ग्रामीण परिवेश की एवं कम शिक्षित थी, फिर भी पत्नी महानगर में आकर आधुनिकता से पूर्ण प्रभावित थी। उसने बेटी के कहे अनुसार नये ढंग से पोषाक धारण करना व मेकअप करना प्रारम्भ कर दिया था, किन्तु यशोधर बाबू ने अपने संस्कार नहीं छोड़े। इसलिए यही कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू की पत्नी उनकी अपेक्षा अधिक प्रगतिशील है।

14. **खाद्य पदार्थों में मिलावट : एक चुनौती**

यह युग अर्थ-प्रधान है, धनार्जन की होड़ में, अधिक से अधिक मुनाफा कमाने अथवा रातोंरात धन्नासेठ बनने की होड़ से लोगों में इतना लालच बढ़ गया है कि वे खाद्य-पदार्थों में मिलावट के नये-नये तरीके अपना रहे हैं और नैतिकता एवं मानवता से गिरकर आम जनता के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। घी, तेल, दूध, पनीर, पिसे हुए मिर्च-मसाले, हल्दी आदि में खुलेआम मिलावट कर रहे हैं। बेसन, चाय पत्तियाँ, डिब्बाबन्द रसदार पदार्थ आदि में मिलावट इतनी बढ़ गयी है कि अब शुद्धता की परख करना चुनौती बन गई है। स्वास्थ्यरक्षक कीमती दवाओं में तथा बड़ी नामी कम्पनियों के उत्पादों में भी मिलावट मिल रही है। इस तरह खाद्य-पदार्थों में मिलावट को रोक पाना और इस क्षेत्र में फैल रहे भ्रष्टाचार को रोक पाना कठिन हो रहा है। इस विकट चुनौती का सामना कैसे हो, यह विचारणीय है।

अथवा

फीचर क्या है—इस सम्बन्ध में कुछ विद्वान् 'मनोरंजक ढंग से लिखे गये प्रासंगिक लेख' को फीचर मानते हैं तथा कुछ इसे 'विविध क्षेत्र की हलचलों का शब्द-चित्र' बतलाते हैं। वस्तुत: फीचर सामाजिक घटनाओं के पूर्वापर सम्बन्धों एवं सम्भावनाओं की रोचक व्याख्या या कलात्मक प्रस्तुतीकरण होता है।

फीचर एवं समाचार में पर्याप्त अन्तर होता है। इनमें तीन अन्तर ये हैं—(1) फीचर-लेखन और समाचार-लेखन की शैली भिन्न होती है। (2) फीचर-लेखन में निजी दृष्टिकोण रहता है जबकि समाचार-लेखन में वस्तुनिष्ठता रहती है। (3) फीचर अतीत-वर्तमान की किसी घटना पर लिखा जाता है जबकि समाचार समकालीन या तात्कालिक घटना पर आश्रित होता है। फीचर लेखन का विषय कुछ भी हो सकता है, परन्तु समाचार-लेखन में विषय नियत रहता है।

15. शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक हिन्दी कविता के प्रगतिशील कवि हैं। ये हिन्दी और उर्दू के विद्वान हैं। इनका जन्म 13 जनवरी, सन् 1911 को देहरादून (उत्तराखंड) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून से तथा उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हुई। उकील बन्धुओं से चित्रकारी में प्रशिक्षण प्राप्त किया। कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ मैं नहीं (काव्य-संग्रह), दोआब (निबंध संग्रह), प्लाट का मोर्चा (कहानी संग्रह) आदि रचनाएँ हैं। सन् 1977 में 'चुका भी हूँ मैं नहीं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा कवि विचारों के स्तर पर प्रगतिशील और शिल्प के स्तर पर प्रयोगधर्मी कवि सम्मान प्राप्त हुआ। शमशेर की पहचान एक बिम्बधर्मी कवि के रूप में है। उनकी मूल चिंता माध्यम का उपयोग करते हुए भी बंधन से परे जाने की है। सन् 1993 में निधन हुआ।

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के एक गाँव छपरा में 1907 में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त कर शान्ति निकेतन में हिन्दी भवन के निदेशक रहे। अनेक स्थानों पर हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। ये कई भाषाओं के ज्ञाता थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ अशोक के फूल, कुटज, विचार-प्रवाह, आलोकपर्व (निबंध-संग्रह); बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा (उपन्यास); हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य की भूमिका (आलोचना-ग्रंथ) इत्यादि हैं। इनकी सांस्कृतिक दृष्टि प्रभावशाली एवं मूल चेतना विराट मानवतावाद है। इन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' प्राप्त हुआ। साहित्य रचना करते हुए इनका निधन 1979 दिल्ली में हुआ।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**—प्रस्तुत काव्यांश कवि कुँवर नारायण द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'इन दिनों' की कविता 'कविता के बहाने' से लिया गया है। इसमें कवि कविता की यात्रा पर प्रकाश डाल रहे हैं जो चिड़िया से लेकर फूलों तक है।

व्याख्या—कवि बताते हैं कि कविता भी खिलती है अपने भाव-सौन्दर्य को लेकर, जिस प्रकार फूल अपने रूप-रंग व खुशबू को लेकर खिलते हैं। फूलों का खिलना, उसका वातावरण को सुगन्धित करना, फिर तय समय पर मुरझा जाना, फूलों की प्रकृति व अवस्था को बताता है। लेकिन कविता फूलों की तरह खिलती तो है पर उसकी तरह मुरझाती नहीं है। कविता अपने भावों के कारण, संदेश व प्रेरणा के कारण तथा अस्तित्व के कारण सदैव खिली रहती है और अपनी विशेषताओं की सुगन्ध फैलाती रहती है। फूल कविता के खिलने का अर्थ नहीं जानता है। फूल से कविता में रंग-भाव आदि आते हैं लेकिन दोनों का खिलना अलग-अलग है।

विशेष—(1) कविता व फूल की तुलना प्रस्तुत की गई है।

(2) शांत रस व मुक्त छन्द का प्रयोग है। सरल-सहज खड़ी बोली में अनुप्रास अलंकार हैं।

अथवा

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश भक्त कवि तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तर-कांड' से लिया गया है। इसमें कवि ने वर्तमान की यथार्थ परिस्थितियों का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या—कवि तुलसीदास कहते हैं कि मुझे कोई चाहे घर से त्यागा हुआ कहे, चाहे साधु-संन्यासी कहे, राजपूत कहे, चाहे जुलाहा कहे। किसी की बात का कोई असर मुझ पर नहीं पड़ता है क्योंकि किसी की भी बेटी के साथ मुझे अपने बेटे की शादी नहीं करनी है। न ही मुझे किसी की जाति बिगाड़ने का कोई शौक है। तुलसीदास तो सिर्फ राम का सेवक है, उनके सिवा उसे किसी से भी कोई मतलब

YouTube channel RK study point 99

नहीं रखना है। जिसकी जैसी रुचि या पसन्द, वह उसके अनुसार जो इच्छा वो कहे या करे। तुलसीदास कहते हैं मैं माँग कर खा सकता हूँ, मस्जिद में सो सकता हूँ, मुझे न तो किसी से कुछ लेना है और न ही किसी को कुछ देना है। कहने का भाव है कि समाज की किसी भी प्रवृत्ति से तुलसीदास को कोई फर्क नहीं पड़ता है, वे राम भक्त हैं और उनकी भक्ति में ही अपना जीवन लगा देंगे।

विशेष–(1) कवि समाज की व्यंग्य प्रवृत्ति से क्षुब्ध है तथा दास्य-भक्ति से पूर्ण अपनी राम-भक्ति को स्पष्ट करते हैं।

(2) ब्रजभाषा का प्रयोग, सवैया छंद तथा अनुप्रास अलंकार की छ्य प्रस्तुत है।

(3) 'लेना एक न देना दो' लोकोक्ति का प्रयोग हुआ है।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत अवतरण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'शिरीष का फूल' निबन्ध से लिया गया है। इसमें लेखक ने शिरीष के विषय में बताया है।

व्याख्या–लेखक ने बताया है कि शिरीष एक अद्‌भुत साधु-संन्यासी की तरह है। दुःख हो या सुख, न किसी से कुछ लेना और न किसी को कुछ देना, जैसा व्यवहार रखता है। इसी भाँति अवधूतों का व्यवहार होता है। वे हर कठिन परिस्थिति में जीवन जीते हैं। सभी इच्छाओं-आशाओं से परे, हर दुःख से, सुख से अलग निर्लिप्त जीवन जीते हैं। वैसे ही शिरीष भी चाहे धरती-आसमान भयंकर गर्मी में जल रहे हों ये महाशय न जाने कहाँ से अपना प्राणतत्त्व रस खींचते रहते हैं। अपने ही आनन्द में आठों प्रहर मग्न रहते हैं। लेखक ने बताया कि एक वनस्पतिशास्त्री ने बताया कि शिरीष उस श्रेणी का पेड़ है जो जीने के लिए वायुमंडल से अपना रस खींचता है। अन्य पौधे जमीन से खींचते हैं वह सूखी तो स्वयं भी सूख जाते हैं। लेकिन वायुमंडल की नमी को खींचने वाला शिरीष तभी तो भयंकर लू के थपेड़ों में भी कोमल पंखुड़ियों वाले फूल और उसमें स्थित सुकुमार पराग (केसर) को जिन्दा रख पाता है। यही विशेषता उसके भयंकर परिस्थितियों में जीने का आधार-तत्त्व है।

विशेष–(1) लेखक ने शिरीष के जीने की कला के विषय में विस्तार से बताया है।

(2) भाषा सरल-सहज व प्रवाहमयी है। मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन' से लिया गया है। लेखक ने इसमें बाजार के जादू के असर से बचने का उपाय बताया है।

व्याख्या–लेखक बताते हैं कि बाजार का जादू ग्राहक को आकर्षण में बाँध कर खरीदारी करवाता है। इस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा और सरल उपाय यह है कि बाजार जाना हो तो मन को खाली मत रखो। आशय है कि बाजार उसी स्थिति में जाओ जब सच में आपको कुछ जरूरत का सामान खरीदना हो। अगर आपको बिना जरूरत, बिना उद्देश्य जाना पड़े तो आप जाओ ही मत। कहते हैं कि अगर गर्मियों के दिनों में भरी दोपहर में लू में निकलना पड़े तो पानी पीकर जाना चाहिए अगर आपके भीतर पानी होगा तो लू आप पर कोई असर नहीं कर पायेगी। उसी प्रकार अगर आपका मन लक्ष्य से, उद्देश्य से भरा होगा तो बाजार का जादू फैला का फैला रह जाएगा, वह आपको कोई घाव, जख्म नहीं देगा अर्थात् आपकी निरर्थक

खरीदारी नहीं करवाएगा बल्कि उस समय बाजार का जादू, उसकी सुन्दरता दिखाएगा। जो आपको खुशी ही देगी। उस समय बाजार भी आपका उपकार मानेगा, क्योंकि उस समय आप भी बाजार को उसके होने का सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली उपयोगिता है कि वह सबको उसकी आवश्यकता के समय काम आए। फिजूलखर्ची की होड़ में सभी सामान खरीद कर रख लेते हैं और जरूरत पड़ने पर सामान की कमी बहुत सारी समस्याएँ उत्पन्न कर देती है।

विशेष–(1) लेखक ने उद्देश्य एवं जरूरतानुसार खरीदारी करने पर बल दिया है।

(2) भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा सरलता व सहजता युक्त है।

18. **राजस्थान सरकार**

अविनाश तंवर,
सचिव।

शिक्षा विभाग
शासन सचिवालय, जयपुर
दिनांक 17 अगस्त, 20XX
अ. शा. प. क्र.–169 (ग) 741

प्रिय श्री हरगोविन्दजी,

आपको विदित है कि राजस्थान के लगभग 80% विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत हैं। जिनकी आर्थिक स्थिति मध्यम एवं अथवा निम्न. स्तर की है। इन विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की नियमित जाँच हेतु विभाग द्वारा नियमित रूप से शिविर लगाए जाते हैं। आप से आग्रह है कि जिला चिकित्सा अधिकारियों को अपनी विशिष्ट सेवाएँ इन शिविरों में देने हेतु पाबन्द करें, ताकि ग्रामीण जीवन एवं भावी नागरिकों का स्वास्थ्य उन्नत हो सके।

आशा है, आपका सहयोग प्राप्त होगा।

धन्यवाद।

श्री हरगोविन्द सोढ़ी
आयुक्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,
राजस्थान, जयपुर।

भवदीय
हस्ताक्षर.......
अविनाश तंवर

अथवा

विज्ञप्ति

राजस्थान सरकार

कार्यालय आयुक्त

जन स्वास्थ्य एवं अभियान्त्रिकी विभाग,

जयपुर।

क्रमांक–414　　　　दिनांक 15 मार्च, 20XX

प्रदेश में ग्रीष्मकालीन अवधि में पेयजल से सम्बन्धित किसी प्रकार की समस्या होने पर टोल फ्री नं. 1800-2345-121 पर अवगत करायें। विभाग द्वारा तत्काल टैंकर से जल-वितरण की व्यवस्था की जाएगी। आपात स्थिति में सम्बन्धित उपखण्ड अधिकारी को अवगत करायें।

(अ, ब, स)
आयुक्त

youtube channel pk study point 99

19. इन्टरनेट क्रान्ति : वरदान और अभिशाप

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. इण्टरनेट 3. इण्टरनेट की रचना एवं कार्यविधि 4. उपयोग एवं दुरुपयोग 5. उपसंहार

1. प्रस्तावना–वर्तमान वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर के आविष्कार के साथ टेलीफोन, मोबाइल, टेलीविजन, टैलेक्स, ई-मेल, ई-कॉमर्स, फैक्स, इन्टरनेट आदि संचार-साधनों का विस्तार हुआ है। जन-संचार-साधनों का असीमित विस्तार होने से जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार हुआ है, वहाँ संचार-सुविधाओं में आश्चर्यजनक क्रान्ति आने से सूचना आदान-प्रदान अत्यन्त सहज हो गया है।

2. इण्टरनेट–संचार नेटवर्क कुछ कम्प्यूटरों का समूह होता है, जिन्हें आपस में सूचनाओं तथा संसाधनों के सुगम आदान-प्रदान के लिए जोड़ा जाता है। इसी प्रकार से पूरे विश्व में फैले हुए अलग-अलग नेटवर्कों को आपस में जोड़ दिया जाता है जिसे हम 'इण्टरनेट' के नाम से जानते हैं। अत: इण्टरनेट कई नेटवर्कों का एक नेटवर्क या अन्तरजाल है। अत: इण्टरनेट संसार में व्याप्त सूचना-भण्डारों को आपस में सम्बद्ध किए जाने तथा उन्हें किसी भी स्थान पर उपलब्ध कराये जाने का आधुनिक वैज्ञानिक संचार-माध्यम है।

3. इण्टरनेट की रचना एवं कार्यविधि–हालांकि इण्टरनेट विश्वभर में फैला एक नेटवर्क है, फिर भी कई कारणों से यह एक छोटे शहर की अनुभूति देता है। इसमें भी वही सेवाएँ होती हैं जो किसी शहर में मिलती हैं। यदि आपको अपनी 'मेल' प्रेषित या प्राप्त करनी है तो इस कार्य को करने के लिए इण्टरनेट में 'इलेक्ट्रोनिक पोस्ट-ऑफिस' होते हैं। इसमें 'ऑनलाइन लाइब्रेरी' मिल जाती है जिसमें हजारों-लाखों पुस्तकों को सुविधानुसार पढ़ा जा सकता है। इण्टरनेट में शामिल होने के लिए अपनी वेबसाइट स्थापित करनी पड़ती है। फिर रुचि के अनुसार सम्बन्धित वेबसाइट से सम्बन्ध स्थापित करके जानकारी प्राप्त होती है।

4. उपयोग एवं दुरुपयोग–'इण्टरनेट' आज की संचार-सेवाओं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इंटरनेट सार्थक समाज में शिक्षा, संगठन और भागीदारी की दिशा में एक बहुत ही सकारात्मक कदम है। घर बैठे बटन दबाते ही वांछित सूचनाओं का आदान-प्रदान बड़ी सरलता से किया जा सकता है। इसके द्वारा उन सभी विषयों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है जिन्हें व्यक्ति के द्वारा केवल सोचा जा सकता है। अध्यापक, विद्यार्थी, डॉक्टर, व्यापारी तथा अन्य शिक्षित समुदाय अपने विचारों एवं समस्याओं के हल हेतु आदान-प्रदान तेजी से लम्बी दूरियों के बीच कर सकता है। अत: इण्टरनेट हमारे लिए आज की व्यस्तता भरी जिन्दगी के लिए अति उपयोगी है, परन्तु कुछ शरारती तत्त्व इस नेटवर्क में वायरस प्रवेश कराने का प्रयास कर महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का दुरुपयोग करने में नहीं चूकते हैं। इण्टरनेट ने अपराध जगत् में 'साइबर' अपराधी की एक नयी फौज खड़ी कर दी है। अब इस अपराध को रोकने के लिए कानून बनाया गया है।

5. उपसंहार–विज्ञान के इस युग में इंटरनेट यदि ज्ञान का सागर है, तो इसमें 'कूड़े-कचरे' की भी कमी नहीं। यदि इसका इस्तेमाल करना आ जाए, तो इस सागर से ज्ञान व प्रगति के मोती हासिल होंगे और यदि गलत इस्तेमाल किया जाए, तो कूड़े-कचरे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिलेगा। सार यह है कि इण्टरनेट हमारे लिए उपयोगी है और सभी इसका सदुपयोग कर लाभान्वित हों।

मॉडल पेपर 7

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(ब)	(ब)	(ब)	(ब)	(अ)	(द)	(अ)	(अ)	(अ)	(द)	(ब)	(स)

2. (i) परिषद् (ii) श्लेष (iii) लक्षणा (iv) व्यंजना में (v) बोली या उपभाषा (vi) ब्रेल लिपि।

3. (i) समाज के लिए अर्थकरी विद्या अधिक उपयोगी रहती है, क्योंकि यह समाज को आजीविका चलाने की सुविधाएँ देती है।
   (ii) 'व्यष्टि' का विलोम 'समष्टि' प्रयुक्त किया गया है।
   (iii) विद्या वह ज्ञातव्य विषय है, जो हम आपको सिखाना चाहते हैं। यह दो प्रकार की होती है—(1) अर्थकरी (2) परमार्थकरी।
   (iv) परमार्थकरी विद्या में मनुष्य मानवीय मूल्यों से युक्त होता है। इसमें मनुष्य की बुद्धि, हृदय बनते हैं और इनका परिष्कार होता है।
   (v) शिक्षा वास्तव में ज्ञान सम्प्रेषण की विधि को कहा गया है।
   (vi) **शीर्षक**–'विद्या का महत्त्व'।

4. (i) भारतवर्ष संसार के सभी देशों में अति प्राचीन और मानव-सभ्यता में अग्रणी माना जाता है। इसी कारण कविता में इसे वृद्ध कहा गया है।
   (ii) संसार में दैविक एवं भौतिक जितनी भी सम्पदाएँ हैं, भूगर्भ से निलकने वाली जितनी भी बहुमूल्य धातुएँ हैं, वे सब भारत-भूमि में मिलती हैं। इसी से इसे भव-भूतियों का भण्डार कहा गया है।
   (iii) ऋषि-मुनि रूप में रहने वाले आर्यों से भारतीयों का उद्भव हुआ और वे 'आर्य' कहलाये।
   (iv) भारत-भूमि प्राचीन काल से ही सुख वैभव से सम्पन्न धरती का गौरव एवं पुण्यशाली रही है। यह सब तरह से सुख-शान्तिमय और कला-कौशल से सम्पन्न देश है।
   (v) इस पंक्ति में भारत की महिमा का गुणगान किया गया है।
   (vi) इस काव्यांश का उचित शीर्षक है—'भारत की श्रेष्ठता'।

खण्ड-ब

5. श्रोताओं या पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से टी.वी. सबसे सशक्त माध्यम है, क्योंकि टी.वी. पर समाचार सुनाई देने के अलावा दिखाई भी देते हैं। इससे साक्षर और निरक्षर दोनों ही तरह के दर्शक लाभान्वित होते हैं। सचित्र प्रसारण से समाचार अधिक तथ्यपरक और प्रामाणिक बन जाते हैं। कम समय में अधिक समाचार दिखाए जा सकते हैं।

6. फिराक गोरखपुरी ने दीपावली का दृश्य-बिम्ब इस प्रकार चित्रित किया है—शाम का समय, लिपा-पुता एवं स्वच्छ घर-आँगन, माँ अपने बच्चों के लिए जगमगाते

चीनी के खिलौने सजाती है और प्रसन्नता से दीपक जलाती है तथा बच्चों की खिलखिलाहट से पूरा घर-आँगन जगमगा जाता है। राखी के लच्छों में रंग-बिरंगी सुन्दरता और बिजली की चमक का सहज आकर्षण रहता है। राखी के धागों में भाई-बहिन का अटूट स्नेह-सम्बन्ध बना रहता है।

7. भयंकर गर्मी, लू एवं तपन से जब सारे पेड़-पौधे झुलसने लगते हैं, सभी पेड़ पुष्परहित हो जाते हैं, तब भी शिरीष का वृक्ष हरा-भरा और पुष्पों से लदा रहता है। यह वायुमण्डल से रस ग्रहण करता है। इस तरह यह विपरीत दशा में भी संघर्षशीलता एवं जिजीविषा रखता है।

8. मुअनजो-दड़ो की सभ्यता के अन्तर्गत वहाँ पर हथियार नहीं मिले हैं। इससे ऐसा ज्ञात होता है कि वहाँ राजतंत्र व्यवस्था नहीं थी जिसके पास अनुशासन रखने के लिए सेना होती है। वहाँ की अनुशासन व्यवस्था समाज के आपसी समझाइश पर ही आधारित थी। समाज द्वारा ही अनुशासन बनाये रखा जाता था।

9. यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं। उनके बच्चे आधुनिक रंग-ढंग और प्रगति के दीवाने हैं। पूरी कहानी इसी द्वन्द्व पर आधारित है। यशोधर बाबू किशनदा के अनुसार भारतीय संस्कृति का पालन करते हैं किन्तु परिवारजन एवं अधीनस्थ कर्मचारी पाश्चात्य संस्कृति के पोषक हैं इसलिए पूरी कहानी में द्वन्द्व चलता रहता है।

खण्ड-स

10. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में बच्चनजी ने दोनों ही प्रकार की स्थितियों को व्यक्त किया है। एक तरफ प्रिय आलम्बन तथा अपनों के मध्य रहने का सुकून, शिथिल कदमों को और तेज कर देता है। वह ढलते दिन को देखकर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता है कि उसकी मंजिल दूर नहीं है। वहीं दूसरी स्थिति एकाकी जीवन व्यतीत करने वालों के साथ की है। शाम के समय उनके मन में विचार उठता है कि उनके इंतजार में व्याकुल होने वाला कोई नहीं है अत: वह किसके लिए तेजी से घर जाने की कोशिश करे। यह विचार लौटते कदमों को और शिथिल बना देता है तथा उनके हृदय को और भी व्यथित व पीड़ा से भर देता है।

अथवा

जब पतंगें उड़ती हैं, तो बच्चों का मन भी उनके साथ उड़ने लगता है। उनमें गतिशीलता आ जाती है और उमंग-उत्साह से भरकर वे छतों की दीवारों पर खतरनाक होने पर भी चढ़ जाते हैं। उनके शरीर में पतंगों के समान हल्कापन आ जाता है। इसी कारण कहा गया है कि पतंगों के साथ बच्चे भी उड़ते हैं।

11. ढोलक की आवाज से रात का सन्नाटा और भय कम होता था। गाँव में महामारी से पीड़ित अधमरे से लोगों की नसों में एक उत्तेजना-सी फैल जाती थी। बच्चे-बूढ़े-जवान सबकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य और उत्साह नाचने लगता था। यद्यपि मरने वाले रोगी मौत से बच नहीं पाते थे लेकिन उनके मन में जीते-जी मौत का भय सताना बंद कर देता था। इस आधार पर वे आराम से मर सकते थे। इस प्रकार ढोलक की थाप उनके जीवन के कष्ट को कम करने में सहायक होकर संजीवनी भरती थी।

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के माध्यम से यह शिक्षा दी है कि जीवन में जितना भी संघर्ष और कोलाहल हो, जितनी भी विषम और कठिन परिस्थितियाँ हों, मनुष्य को विचलित न होकर अपने अस्तित्व की रक्षा करनी चाहिए, जीने की शक्ति बनाये रखनी चाहिए। शिरीष भीषण गर्मी, लू, आँधी आदि विषम परिस्थितियों में भी सरस बना रहता है, खिला रहता है। अत: हमें भी संघर्ष के साथ जिजीविषा रखकर अजेय बने रहना चाहिए।

12. लेखक और उसकी माँ ने दत्ताजी राव से मिलकर और सारी बातें कर कहा कि "हमने यहाँ आकर ये सभी बातें कही हैं, यह मत कह देना। नहीं तो हम दोनों की खैर नहीं है।" इसी प्रकार लेखक की माँ ने अपने पति से झूठ कहा कि "साग-भाजी देने देसाई सरकार के यहाँ गई थी तो उन्होंने कहा कि..........जरा इधर भेज देना।" इस प्रकार झूठ का सहारा लेकर लेखक के पिता को दत्ताजी राव के पास भेजा गया। यदि वे दोनों झूठ का सहारा नहीं लेते, तो लेखक की पढ़ाई का निर्णय नहीं होता। दत्ताजी राव के पास जाने से पिता नाराज होकर लेखक की पिटाई कर देता। तब लेखक को जन्म भर खेती के काम में जुटे रहना पड़ता और दादा मस्ती में इधर-उधर घूमता रहता। इस तरह झूठ न कहने से लेखक के जीवन पर बुरा असर पड़ता।

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' शब्द का अर्थ है हमारे आधार का समाप्त हो जाना। किसी भी साहित्यिक रचना का शीर्षक उसकी विषयवस्तु, पात्रों के चरित्र चित्रण एवं देशकाल वातावरण के आधार पर रखा जाता है। इस यात्रावृत रिपोर्ताज का शीर्षक भी विषयवस्तु के आधार पर रखा गया है। इसमें सिन्धु सभ्यता के दो महानगर मुअनजो-दड़ो एवं हड़प्पा के बारे में बताया गया है जिनकी खोज भारतवासियों ने की थी जो हमारे ही गाँव हैं, किन्तु स्वतंत्रता पश्चात् बँटवारे में पाकिस्तान के हिस्से में चले गये हैं जो हमारे लिए अतीत हो गये। इसलिए इस यात्रा वृतान्त का शीर्षक 'अतीत में दवे पाँव' रखा गया है, जो सार्थक है।

13. यह सत्य है कि यशोधर बाबू अपने ही घर में लाचार, बेचारे और असहाय हो चुके हैं। उनके बच्चों ने आधुनिकता के दबाव में आकर उन्हें लगभग नकार दिया है। वे न तो उनका सम्मान करते हैं, न उनसे कोई सलाह लेते हैं और न वे उनका किसी प्रकार का सहयोग करते हैं। वे उनकी हर आदत और हर चीज की उपेक्षा करते हैं। बच्चों का मन रखने के कारण उन्हें साइकिल छोड़नी पड़ती है। उनमें अब इतनी हिम्मत नहीं रही कि वे बच्चों से किसी बात को मनवा सकें। इस कारण वे अपने ही घर में अकेले और असहाय पड़ चुके हैं।

अथवा

'जूझ' पाठ के लेखक आनन्द का सम्पूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा जिसने एक योद्धा की तरह संघर्ष किया। बाल्यकाल में उसके पिता ने खेती के काम करवाने के उद्देश्य से उसकी पढ़ाई छुड़वा दी, फिर भी वह निराश नहीं हुआ। पढ़ाई के प्रति लगन के कारण माँ व दत्ताजी राव की सहायता से पुन: पाठशाला में प्रवेश पाने का संघर्ष किया। वहाँ पर भी साथियों ने उसे परेशान किया। फिर भी एकाग्रता एवं धैर्य

से संघर्ष करते हुए सभी अध्यापकों का चहेता बन गया। खेती-कार्य के साथ विद्याध्ययन एवं साहित्य सर्जन का कार्य संघर्ष से करते हुए कवि बन गया।

14. आलेख लेखन के समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) शीर्षक चयन।

(2) आलेख का कोई प्रारूप/Format नहीं होता, छोटे-छोटे पैराग्राफ में लिखा जाता है।

(3) विषय को तत्कालीन घटित घटना से जोड़ना।

(4) विषय से सम्बन्धित तथ्य, आँकड़े, उदाहरण या कोटेशन का प्रयोग करें।

(5) विषय से जुड़े क्यों और कैसे सवालों पर तर्कसहित अपने विचार प्रस्तुत करें।

(6) भ्रामक एवं संदिग्ध जानकारी न दें।

(7) आलेख का समाप्ति वाला अंश रोचक एवं निष्कर्ष परक होना चाहिए।

अथवा

अच्छे फ़ीचर की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न होती हैं—

(1) फ़ीचर का आरम्भ रोचक होना चाहिए न कि नीरस, उबाऊ, क्लिष्ट और व्यर्थ की अलंकृत शब्दावली से भरा।

(2) हृदय पक्ष से जुड़ा होने के कारण इसमें भाषागत सौन्दर्य और लालित्य का विशेष स्थान है।

(3) फ़ीचर में अनावश्यक विस्तार से बचा जाना चाहिए। गागर में सागर भरना फ़ीचर की अपनी कलात्मकता होती है।

(4) काव्य का सा आनन्द देने वाले फ़ीचर श्रेष्ठ फ़ीचर हो सकते हैं।

(5) फ़ीचर में प्रयुक्त कल्पनाएँ सटीक और सारगर्भित हों।

(6) अपने विषय के सभी संबंधित पहलुओं को छूता चलता है। लेकिन विषयों का सन्तुलित वर्णन आवश्यक है।

15. कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1899 में बंगाल राज्य के मेदिनीपुर ग्राम में हुआ था। इन्होंने स्कूली शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं की लेकिन स्वाध्याय से अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। कविता को नया स्वर देने वाले निराला छायावाद के कवि हैं। इनके द्वारा लिखे गए अनामिका, परिमल, गीतिका, बेला, नए पत्ते, अणिमा, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता (काव्य-संग्रह); चतुरी चमार, प्रभावती बिल्लेसुर बकरिहा, काले कारनामे (गद्य) आदि हैं। समन्वय, मतवाला पत्रिका का सम्पादन भी इन्होंने किया। मुक्त छंद की रचना करने वाले कवि काव्य विषय और युग की सीमाओं का भी अतिक्रमण करते हैं। साहित्य सेवा करते हुए सन् 1961 में इलाहाबाद में इनका देहान्त हुआ।

अथवा

मानव मुक्ति के पुरोधा बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रेल, सन् 1891 को मध्यप्रदेश में हुआ। प्राथमिक शिक्षा के बाद बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन पर, उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने हेतु विदेश गए। 'द कास्ट्स इन इंडिया', 'देयर मैकेनिज्म', 'बुद्धा एंड हिज धम्मा', 'द राइज एंड फॉल', 'द हिन्दू वीमैन', 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट्स', 'बुद्धिज्म एंड कम्यूनिकेशन' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। मूक नायक, बहिष्कृत भारत, जनता (पत्रिका सम्पादन)। भारतीय संविधान के निर्माताओं में से एक आम्बेडकर आधुनिक भारतीय चिंतन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अधिकारी हैं। जातिवादी उत्पीड़न के कारण हिन्दू समाज से मोहभंग होने के बाद बुद्ध के समतावादी दर्शन से प्रभावित होकर वे बौद्ध मतानुयायी बन गए।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'अनामिका' के छठे भाग 'बादल राग' से लिया गया है। इसमें कवि ने पूँजीपतियों में क्रांति का भय तथा निर्धन-गरीबों में हर्ष की लहर को वर्णित किया है।

व्याख्या–कवि पूँजीपतियों के बड़े-बड़े भवनों को देखकर कहते हैं कि ये ऊँचे भवन अपनी ऊँचाई द्वारा गरीब व निर्धन लोगों को भयभीत करते हैं। इन भवनों की ऊँचाइयाँ ही उनमें डर भर देती हैं। इन्होंने गरीबों के शोषण से ही ऊँचे भवन निर्मित किये हैं। वर्षा से जो जल-प्लावन (बाढ़) आता है उससे सबसे पहले कीचड़ ही बहता है। छोटे-से कमल के फूल तो उस जल को स्पर्श कर और भी आनन्दित होते हैं। कहने का भाव है कि कीचड़ पूँजीपतियों का पर्याय है तथा कमल गरीबों के समान है। गरीबों के बच्चे अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में जीने वाले सुकुमार होते हैं। जिन पर प्रकृति का कोई असर नहीं होता बल्कि प्रकृति के विभिन्न रूप को देखकर भी वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। गरीब रोग-व्याधि, दुःख-पीड़ा सभी में समान स्थिति में रहता है जबकि पूँजीपति ही सदैव अपने शोषण से उत्पन्न क्रांति के कारण भयभीत रहते हैं।

विशेष–(1) जल-प्लावन में कमल खिलता है अर्थात् कष्टों में भी सामान्य वर्ग प्रसन्न रहता है जैसी विशेषोक्ति प्रस्तुत है।

(2) शब्द लघु आकार लिए, तत्सम प्रधान खड़ी बोली है। बिम्बों तथा अलंकारों का प्रयोग है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि कुँवर नारायण द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'कोई दूसरा नहीं' की कविता 'बात सीधी थी पर' से लिया गया है। कवि ने इसमें उन कवियों पर व्यंग्य किया है कि वाह-वाही पाने के चक्कर में लोग भाषा के सीधे-सरल रूप को छोड़ पांडित्य दिखाने में फँस जाते हैं।

व्याख्या–कवि कहता है कि भाषा के चक्कर में फँसी सीधी बात को धैर्यपूर्वक सुलझाने की कोशिश करने पर वह और अधिक उलझ गई। जिस प्रकार पेंच ठीक से न लगे, तो उसे खोलकर बार-बार कसने से उसकी चूड़ियाँ मर जाती हैं, उसी प्रकार बेवजह भाषा का पेंच कसने से बात सहज और स्पष्ट होने के स्थान पर और भी क्लिष्ट व अर्थहीन हो जाती है। कवि कह रहे हैं कि इस तरह भाषा को सुलझाने के चक्कर में इसके उलझने को काव्य-चमत्कार समझ लोग वाह-वाह करने लगेंगे, जो कि मेरी उलझन को ज्यादा बढ़ाने वाली बात है। साथ ही उन लोगों पर व्यंग्य है जो तमाशा देखने वालों की तरह अर्थ समझे बिना अनर्थ पर भी अपनी वाह-वाही की प्रतिक्रिया देने लगते हैं।

विशेष–(1) कवि ने व्यंग्य करते हुए बताया है कि भाषा की जटिलता लोगों की वाह-वाही का कारण बनती है जो कि सही नहीं है।

YouTube Channel RK Study Point99

(2) उर्दू-मिश्रित शब्दों का प्रयोग है। पेंच, करतब, बेतरह, तमाशबीन आदि शब्द प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर रहे हैं।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत अवतरण डॉ. भीमराव आम्बेडकर द्वारा लिखित 'श्रम विभाजन और जातिप्रथा' लेख से लिया गया है। इसमें लेखक ने जातिप्रथा और श्रम विभाजन को एक ही मानते हुए विचार व्यक्त किये हैं।

व्याख्या–डॉ. आम्बेडकर कहते हैं कि हमारे देश में यह अत्यन्त ही अजीब व खेदपूर्ण बात है कि आधुनिक युग में भी जातिवाद को बढ़ावा देने वालों की कोई कमी नहीं है। आधुनिक युग में जहाँ व्यक्ति शिक्षित है, तर्कपूर्ण ज्ञान है, वहाँ जाति को लेकर आज भी व्यक्ति अज्ञानी की तरह व्यवहार रखता है। जातिप्रथा को बढ़ावा देने वाले पोषक अपनी इस बात का कई आधारों या तर्कों पर इसका समर्थन करते हैं। इसका एक महत्त्वपूर्ण आधार यह है कि आज का आधुनिक समाज कार्यकुशलता के आधार पर श्रम विभाजन अर्थात् कार्यों का बँटवारा करता है और इसे समाज के लिए आवश्यक मानता है। लेखक कहते हैं कि चूँकि जाति-प्रथा का मूल आधार भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इस बात में कोई असंगत बात नजर नहीं आती या गलत नहीं है। लेकिन दूसरी तरह से विचार करें तो इस तर्क को यही बात जातियों के लिए खेदपूर्ण विरोध प्रस्तुत करती है क्योंकि जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिये हुए है। आशय यह है कि वंशानुगत आधार पर ही श्रम-विभाजन है और उसी आधार पर श्रमिक विभाजन स्वतः हो जाता है।

विशेष–(1) लेखक ने जातिप्रथा का दूसरा रूप श्रमविभाजन तथा श्रमिक विभाजन बताया है। क्योंकि जातिगत आधार पर ही श्रम और श्रमिक बँधे हुए हैं।

(2) भाषा का रूप सीधा-सहज व व्याख्यात्मक शैली है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'भक्तिन' संस्मरण से लिया गया है। इसमें भक्तिन के चारित्रिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या–लेखिका बताती है कि भक्तिन को अच्छी कहना थोड़ा मुश्किल है।
क्योंकि अनेक मानवीय अवगुण उसमें भरे हुए थे। वह सत्यवादी हरिश्चन्द्र नहीं बन
सकती थी अर्थात् वह सब सत्य कहे, हम ऐसा नहीं मान सकते थे। अर्थात् उसकी
बातों में झूठ ही अधिक होता था। वह उन युधिष्ठिर की तरह भी व्यवहार नहीं करती
थी जिन्होंने कहा कि 'नर है या हाथी, मैं नहीं जानता'। कहने का आशय झूठ बोलने
पर भी उसको स्वीकार करने की कला उसे नहीं आती थी। लेखिका बताती थी कि
उनके इधर-उधर रखे पैसे भी न जाने कहाँ से गायब होकर भंडार घर के किस मटके
में जाकर छुप जाते थे, उन्हें पता ही नहीं चल पाता था। यह रहस्य केवल भक्तिन ही
जानती थी कि रुपये-पैसे कहाँ गायब हो रहे थे। अगर कोई इस विषय में कुछ कहने
की कोशिश भी करता तो वह लड़ने के लिए चुनौती दे देती जो कि किसी के भी वश
में नहीं था कि उससे आगे से होकर लड़ाई करे।

विशेष–(1) लेखिका ने भक्तिन के झूठ बोलने, चोरी करने व लड़ाई करने जैसे अवगुणों के बारे में बताया है।

(2) तत्सम व देशज शब्दों की बहुलता है।

(3) 'नरो वा कुंजरो वा' महाभारत की प्रसिद्ध उक्ति को लिया गया है।

18. राजस्थान सरकार

विजय जैन
शासन सचिव

शिक्षा विभाग
शासन सचिवालय, जयपुर।
दिनांक–2 जुलाई, 20XX
क्र. शा. स. क्र.–1142 (शि.)/मा./20-21

प्रिय वर्माजी,

राजस्थान के सरकारी माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षा के आधारभूत केन्द्र हैं। ग्रामीण क्षेत्र के अधिकतर विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। अतः शैक्षणिक वातावरण निरन्तर बनाये रखने के लिए विद्यालयों को [illegible] समयपालन और अनुशासन, समयबद्ध कार्य योजना एवं शैक्षणिक कैलेण्डर अनुसार समस्त गतिविधियाँ संचालित की जानी चाहिए। इससे उच्च शैक्षणिक वातावरण निर्मित होगा।

आशा है, आप अपनी श्रेष्ठ भूमिका से इस पुनीत कार्य में सफल होंगे।

भवदीय

हस्ताक्षर ________

विजय जैन

प्रेषिति
श्री संजय वर्मा
आयुक्त मा. शि. राजस्थान,
बीकानेर।

अथवा

ज्ञापन

पत्रांक–185/23/वा.–20XX दिनांक 26.8.20XX

श्रीमान् पुलिस अधीक्षक महोदय,
यातायात पुलिस,
जालौर।

विषय–विद्यार्थियों के लिए लर्निंग लाइसेन्स कैम्प लगवाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि इस वर्ष हमारे विद्यालय में आसपास के क्षेत्रों से अनेक छात्रों ने उच्च कक्षाओं में प्रवेश लिया है। ये सभी वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग लाइसेन्स बनवाने के इच्छुक हैं। परन्तु मुख्य परिवहन कार्यालय दूर होने से अभी लाइसेन्स नहीं बनवा पा रहे हैं। यदि इस सम्बन्ध में हमारे विद्यालय परिसर में ही एक कैम्प लगाकर यह कार्य किया जाये तो सभी को सुविधा होगी।

अतः आपसे प्रार्थना है कि परिवहन विभाग को निर्देश देकर हमारे विद्यालय में प्रशिक्षु चालक अनुज्ञप्ति-पत्र हेतु शिविर लगवाने की कृपा करें। इसके लिए संस्था की ओर से पूर्ण सहयोग दिया जायेगा। हम आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद!

YouTube channel RK study point 99

भवदीय,
हस्ताक्षर ....
प्रधानाचार्य
राज. उच्च मा. विद्यालय,
भीनमाल।

19. **सूचना-क्रान्ति के युग में भारत**

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. भारत में सूचना-प्रौद्योगिकी 3. सूचना-प्रौद्योगिकी का विकास 4. सूचना-प्रौद्योगिकी से लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–आधुनिक युग में कम्प्यूटर क्रान्ति के कारण सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रगति हुई है। अब पूरे विश्व में आर्थिक दृष्टि से विकसित समाज ऐसे सूचना आदान-प्रदान करने वाले समाज का सदस्य बनता जा रहा है, जिससे वह कम्प्यूटर के बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता है। इस तरह वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी का हर क्षेत्र में उपयोग हो रहा है।

2. भारत में सूचना-प्रौद्योगिकी–हमारे देश में सन् 1984 में कम्प्यूटर नीति की घोषणा से कम्प्यूटर क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। सर्वप्रथम दिल्ली में राष्ट्रीय सूचना केन्द्र स्थापित किया गया। इसी प्रकार रेल-डाक विभागों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, विविध शिक्षण-संस्थाओं एवं तकनीकी संस्थानों में दूर-संचार उपग्रह सेवा के द्वारा सूचना-तन्त्र का विकास किया गया। इसके साथ ही शिक्षण-संस्थाओं में कम्प्यूटर-शिक्षा को ज्ञान-गंगा चैनल द्वारा अनिवार्य रूप से प्रारम्भ किया गया। इन सब प्रयासों से आज भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का तीव्रगति से प्रसार हो रहा है।

3. सूचना-प्रौद्योगिकी का विकास–सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले तीन दशक में जो क्रान्ति आयी, उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा है। अब सूचना प्रौद्योगिकी दैनिक कार्य-प्रणाली से लेकर चिकित्सा-स्वास्थ्य, कृषि, बैंकिंग, बीमा के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन का आधार बनती जा रही है। अब रोजगार समाचार, परीक्षा परिणाम, रेल-टिकट आरक्षण आदि के साथ किसी डिपार्टमेण्टल स्टोर से खरीददारी करना आसान हो गया है। जिनके पास अपना मोबाइल, टेलीफोन, कम्प्यूटर या प्रिन्टर आदि नहीं हैं, वे इण्टरनेट साइबर कैफे पर जाकर बहुत ही कम खर्च पर सारी जानकारी हासिल कर सकते हैं।

4. सूचना-प्रौद्योगिकी से लाभ–सूचना प्रौद्योगिकी के आविष्कार से अनेक लाभ हैं। सबसे अधिक लाभ शिक्षा-क्षेत्र में हुआ है। शिक्षा-क्षेत्र में इस पद्धति को साइबर शिक्षा या ऑनलाइन एजूकेशन कहा जाता है। इसमें हर तरह से शिक्षा ग्रहण की जा सकती है। सूचना आदान-प्रदान के क्षेत्र में सर्वाधिक लाभ समाचार-पत्रों को हुआ है। नवीन वैज्ञानिक अनुसन्धानों, नवीनतम यन्त्रों एवं बड़े औद्योगिक परिसरों के संचालन एवं विकास में सूचना-प्रौद्योगिकी का विशेष महत्त्व दिखाई दे रहा है। इससे विशालतम दूर-संचार नेटवर्क स्थापित करने से हमारे देश को अत्यधिक लाभ हो रहा है।

5. उपसंहार–संक्षेप में कहा जा सकता है कि कम्प्यूटर के आविष्कार से सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति आयी है। भारत सहित पूरे विश्व में सूचना-प्रौद्योगिकी को इस तरह अपनाया जा रहा है, जिससे सम्पूर्ण विश्व छोटा पड़ता जा रहा है। इस तरह दूर-संचार के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हो रही है।

मॉडल पेपर 8

खण्ड-अ

1.

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
(स)	(स)	(स)	(द)	(स)	(अ)	(स)	(स)	(स)	(स)	(स)	(स)

2. (i) व्यंजना (ii) 14 सितम्बर, 1949 (iii) निश्चय न (iv) भ्रान्तिमान (v) Ceasefire (vi) परिसंहार (प्रशासन)।

3. (i) समय ऐसी सम्पत्ति है जिसका सदुपयोग करने से मूर्ख, निर्धन एवं कमजोर व्यक्ति को भी विद्या, धन, आत्म-बल और आनन्द मिलता है।
(ii) 'काल' का पर्यायवाची शब्द 'समय' प्रयुक्त हुआ है।
(iii) मनुष्य जब समय का सदुपयोग नहीं करता तब आजीवन खिन्न रहता है।
(iv) समय का दुरुपयोग करने से मनुष्य शारीरिक सुख और आत्मिक आनन्द प्राप्त करने से वंचित हो जाएगा।
(v) समयरूपी सम्पत्ति प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर की ओर से मिली है।
(vi) **शीर्षक**–'समय का सदुपयोग'।

4. (i) कवि के कथन का यह तात्पर्य है कि मानव मरणशील है, उसकी मृत्यु निश्चित है। जब एक-न-एक दिन उसे मरना ही है तो उसे मृत्यु से नहीं डरना चाहिए।
(ii) पशु को केवल अपने पेट की चिन्ता रहती है। इसी प्रकार केवल स्वार्थ की चिन्ता करना और अपना ही काम साधना पशु-प्रवृत्ति बतायी गई है।
(iii) जो व्यक्ति उदारता से सभी का भला करता है, अपनत्व तथा मानवता का आचरण करता है, सृष्टि में उसी की कीर्ति का प्रसार होता है।
(iv) इसका मूल भाव यह है कि मानव को सभी से आत्मीयता एवं प्रेम-भाव रखकर उदारता, दया, क्षमा, सहानुभूति एवं परोपकार में संलग्न रहना चाहिए।
(v) कवि के अनुसार जो परोपकार से युक्त होकर मानव का कल्याण करे वही मनुष्यता है।
(vi) उचित शीर्षक-'मनुष्यता'।

खण्ड-ब

5. प्रिंट मीडिया की कमी है कि यह अनपढ़ लोगों के लिए अनुपयोगी है एवं गलतियों व अशुद्धि के लिए अगले अंक तक इन्तजार करना पड़ता है एवं रेडियो माध्यम में भाषा वर्तनी की अशुद्धता एवं लम्बे वाक्यों व जटिल संख्याओं का प्रयोग करना प्रमुख कमी के अन्तर्गत आता है।

6. कवि ने रचना-कर्म, कविता अथवा काव्य को 'रस का अक्षय पात्र' बताया है। अक्षय पात्र से आशय कभी न खाली होने वाला कविता या काव्य से रस और भाव का आस्वाद सदा-सर्वदा होता रहता है। रचना-कर्म की ये विशेषताएँ होती हैं कि

youtube channel kk study point 99

उनकी स्थिति कालजयी होती है तथा शताब्दियों तक पाठक उनसे रस, भाव, प्रेरणा एवं सन्देश ग्रहण करते रहते हैं।

7. द्विवेदीजी ने यह वाक्य महात्मा गाँधी के लिए कहा है। जिस प्रकार शिरीष के फूल भयंकर लू और गर्मी में भी खिलते रहते हैं, आत्मबल से वे विपरीत स्थितियों का सामना करते हैं, इसी प्रकार गाँधीजी अनासक्त रहकर, सुख दुःख आदि से निश्चिन्त रहकर आत्मबल से सदैव संघर्ष करते रहे और अपने लक्ष्य में सफल रहे।

8. मनोहर श्याम जोशी द्वारा लिखित कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में मानव की इस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है कि वर्तमान परिवेश में लोग आधुनिकता के माया-मोह जाल में फँस कर पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते जा रहे हैं जिस कारण से हमारे मानवीय मूल्यों का निरन्तर पतन होता जा रहा है, मानव की इसी प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया गया है।

9. मराठी मास्टर सौंदलगेकर स्वयं कविता करते थे। लेखक उनके घर जाता रहता था। वे कवियों के चरित्र और उनके संस्मरण लेखक को बताया करते थे। इस कारण ये कवि लोग लेखक को 'आदमी' ही लगने लगे थे। इसलिए लेखक को यह विश्वास हुआ कि कवि भी अपने जैसा ही एक हाड़-माँस का, क्रोध-लोभ का मनुष्य ही होता है।

खण्ड-स

10. इस कविता में सुंदर बिम्बों के माध्यम से बच्चों की बाल-सुलभ चेष्टाओं का प्रभावी चित्रण हुआ है। काव्य में बिम्ब वह मानसिक चित्र है जो कल्पना द्वारा अनुभूत किया जाता है। यह इन्द्रियों पर आधारित होता है जिनकी सहायता से हम काव्य के मूर्त रूप की अनुभूति करते हैं। 'पतंग' कविता में बिंबों की रंगीन दुनिया चारों तरफ व्याप्त है। यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ शरद् ऋतु का चमकीला इशारा है, दिशाओं में मृदंग बजते हैं। पतंग डोर के सहारे तथा बच्चे अपने रंध्रों के सहारे उड़ रहे हैं। बच्चों के भागते कदम डाल के लचीले वेग के समान हैं। इस तरह दृश्य, चाक्षुष, स्थिर, गतिशील और श्रव्य बिम्ब प्रस्तुत हुए हैं।

अथवा

'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन के साथ ही संसार की स्वार्थहीनता को व्यक्त करते हुए कहा है कि लोग सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहे हैं। फिर भी अपने जीवन से प्रेम करते हैं। अतः आशा-निराशा दोनों परिस्थितियों में सन्तुष्ट रहें। वे शीतल वाणी द्वारा भी अपना आक्रोश व्यक्त करते हैं। इसलिए मधुर वाणी से सभी को सन्तुष्ट किया जा सकता है अर्थात् अपना बनाया जा सकता है। कवि सभी परिस्थितियों में मनुष्य को सामंजस्य का सन्देश देते हैं। वे संसार को कठिनाइयों में भी झूमने या खुशियाँ मनाने की प्रेरणा देते हैं।

11. लेखिका के पास रहने वाली 'भक्तिन' कारागार के नाम से ही बेहोश हो जाती थी। लेकिन जब उसे पता चला कि लेखिका को कारागार जाना पड़ सकता है तो उनके साथ जाने के लिए उसने अपने डर को पीछे छोड़ दिया। वह लेखिका से पूछती कि क्या सामान बाँध लें जो जेल में काम आएगा। जहाँ मालिक वहाँ नौकर, अगर नहीं होता है ऐसा तो कोई माई आज तक लाट से लड़ी या नहीं, पर भक्तिन का काम लाट से लड़े बिना चल ही नहीं सकता है। लेखिका उसके इसी व्यवहार

और बातों के लिए उसे प्रतिद्वन्द्वी कहती है। फिर भी दोनों को साथ रहना है, जिसके लिए कल्पना करना भी बहुत मुश्किल है।

अथवा

लेखक ने लोकगीत, लोकोक्ति, लोक-संस्कृति, लोकभाषा के आधार पर इस कहानी की रचना की है। किसी भी प्रदेश या अंचल में प्रचलित संस्कृति, भाषा, वेशभूषा से सम्बन्धित रचना आँचलिक कहलाती है। इनकी भाषा अंचल विशेष से प्रभावित है। इन्होंने आम-बोलचाल की भाषा को अपनाया है। गाँव वालों की आपसी बातचीत में मिश्रित शब्दावली का प्रयोग है। लेखक ने भाषा में चित्रात्मकता का प्रयोग अधिक किया है। विशेषणों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। भाषा की सार्थकता को बोली के सामंजस्य से पुष्ट किया है।

12. यशोधर बाबू के बच्चे परिश्रमी और प्रतिभाशाली हैं किन्तु उनका व्यवहार आपत्तिजनक है। उनके मन में अपने पिता, रिश्तेदारी, समाज आदि के प्रति नकारात्मकता समाई हुई है। वे पिता को यह बताना भी उचित नहीं समझते कि वे उनकी सिल्वर वैडिंग मनाने जा रहे हैं। वह अपना वेतन भी पिता के हाथों में नहीं सौंपता बल्कि वह पिता से यह भी कहता है कि वे कोई अच्छा सा नौकर रख लें जिसका वेतन वह खुद दे देगा। बच्चों के इस प्रकार के व्यवहार से पिता के मन में विक्षोभ ही उत्पन्न होता है।

अथवा

'मुअनजो-दड़ो' में सबसे ऊँचे टीले पर बड़ा बौद्ध स्तूप है। मगर यह मुअनजो-दड़ो की सभ्यता के बिखरने के बाद जीर्ण-शीर्ण टीले पर बना हुआ है। यह स्तूप कोई पच्चीस फुट ऊँचे चबूतरे पर स्थापित है। छब्बीस सदी पहले बनी ईंटों के दम पर स्तूप को आकार दिया गया। इस चबूतरे पर भिक्षुओं के कमरे भी थे। इसके आस-पास खुदाई करने पर पता चला कि यह बौद्ध स्तूप भारत का सबसे पुराना लैंड स्केप है। इस भाग को पुरातत्त्व के विद्वान 'गढ़' कहते हैं। यह सिन्धु घाटी सभ्यता की वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है।

13. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में पीढ़ियों का अन्तराल, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव तथा मानवीय मूल्यों का ह्रास स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसमें बेटे-बेटी और साले द्वारा यशोधर बाबू के पुराने विचारों की अनदेखी की जाती है। यह पीढ़ियों के अन्तराल का स्पष्ट प्रमाण है।

यशोधरजी अपनी पीढ़ी के आदर्शों एवं मूल्यों से बहुत ज्यादा जुड़े हैं। ऑफिस के कर्मचारियों के साथ उनके सम्बन्ध भी इसी मानसिकता के साथ बने हैं। 'समहाउ इम्प्रॉपर' वाक्यांश से कहानीकार ने इस पीढ़ी अन्तराल को प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त किया है।

अथवा

वसंत पाटिल लेखक से मित्रता होने के बाद लेखक ने भी पूरा ध्यान पढ़ाई में लगा दिया। इस कारण लेखक को गणित अच्छी तरह से समझ में आने लगी थी। परिणामस्वरूप लेखक भी उसके समान एकाग्रता रखकर पढ़ाई में मन लगाने लगा। गणित के शिक्षक उसके द्वारा सही उत्तर देने से प्रसन्न होकर 'आनन्दा' नाम से पुकारने

YouTube channel RK Study point 99

लगे थे। इस प्रकार वसंत पाटिल से दोस्ती होने के उपरान्त ही लेखक की पढ़ाई में रुचि का जागरण हुआ और आत्मविश्वास भी बढ़ने लगा।

14. रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बुनियादी शिक्षा एवं बहुउद्देश्यीय शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया गया। शिल्प-कला के कुछ गिने-चुने प्रशिक्षण संस्थान अवश्य खोले गये, परन्तु उनसे युवावर्ग को उचित रोजगार उपलब्ध नहीं हो सके। वर्तमान में जिस तरह बेरोजगारी बढ़ रही है, पढ़े-लिखे युवा इधर-उधर भटक रहे हैं, इसे देखकर स्पष्ट हो जाता है कि देश में व्यावसायिक एवं रोजगारोन्मुखी शिक्षा की परम आवश्यकता है। इसके लिए माध्यमिक कक्षाओं से ही ऐसे पाठ्यक्रमों एवं व्यावसायिक शिक्षा को अपनाया जाना चाहिए। भले ही इस समय अनेक तकनीकी संस्थान चल रहे हैं, परन्तु उनमें प्रशिक्षण शुल्क अत्यधिक है तथा रोजगार के साधनों की कमी है। अतः आज ऐसी शिक्षा की जरूरत है, जो युवावर्ग को स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर सके।

अथवा

जंक फूड की बढ़ती घुसपैठ

वर्तमान भौतिकतावादी यान्त्रिक जीवन में अनेक कुप्रचलन बढ़ रहे हैं। जंक-फूड भी ऐसा ही गलत चलन है। जंक अर्थात् अनुपयोगी वस्तु, स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद, उसे ही भोज्य पदार्थ रूप में अपनाना कहाँ तक ठीक है! परन्तु डिब्बाबन्द तैयार भोज्य-पदार्थों, रसदार चीजों के साथ ही पिज्जा-बर्गर आदि नये मिलावटी उत्पादों का बाजार निरन्तर फैल रहा है। बाजारों में तरह-तरह के पैक्ड खाद्य-पदार्थों की खपत निरन्तर बढ़ रही है। इस तरह जंक फूड की बढ़ती घुसपैठ से आम जनता, विशेषकर युवा पीढ़ी के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। जंक फूड से लोगों में मोटापे की समस्या बढ़ती जा रही है। घर की तरह बाहर का भोजन साफ-स्वच्छ नहीं होता है। वह गली-सड़ी सब्जियों से बनाया जाता है और उसे खाकर हम बीमार पड़ जाते हैं। इसमें कोलेस्ट्रोल की मात्रा बहुत ही ज्यादा होती है जिससे हृदय से जुड़े रोग हो जाते हैं।

15. गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ। बचपन में ही माता-पिता के वियोग के कारण असह्य दुःख सहन करना पड़ा। गुरु नरहरिदास की कृपा एवं शिक्षा से राम-भक्ति का मार्ग प्रदीप्त हुआ। पत्नी रत्नावली की फटकार से संसार त्याग कर विरक्त भाव से रामभक्ति में लीन हो गए। विरक्तता जीवन जीते हुए काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थों का भ्रमण किया। सन् 1623 में काशी में इनका निधन हुआ। 'रामचरित मानस', 'कवितावली', 'रामललानहछू', 'गीतावली', 'दोहावली', 'विनय-पत्रिका', 'रामाज्ञा-प्रश्न', 'कृष्ण-गीतावली', 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल', 'हनुमान बाहुक' और 'वैराग्य संदीपनी' इनकी काव्य-कृतियाँ हैं। 'रामचरित मानस' कालजयी कृति तथा भारतीय संस्कृति का आधार-स्तम्भ ग्रंथ है।

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के एक गाँव छपरा में 1907 में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त

कर शान्ति निकेतन में हिन्दी भवन के निदेशक रहे। अनेक स्थानों पर हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। ये कई भाषाओं के ज्ञाता थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ अशोक के फूल, कुटज, विचार-प्रवाह, आलोकपर्व (निबंध-संग्रह); बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा (उपन्यास); हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य की भूमिका (आलोचना-ग्रंथ) इत्यादि हैं। इनकी सांस्कृतिक दृष्टि प्रभावशाली एवं मूल चेतना विराट मानवतावाद है। इन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' प्राप्त हुआ। साहित्य रचना करते हुए इनका निधन 1979 दिल्ली में हुआ।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'लोग भूल गए हैं' की कविता 'कैमरे में बन्द अपाहिज' से लिया गया है। कवि ने इसमें शारीरिक चुनौती को झेलते व्यक्ति से टेलीविजन-कैमरे के सामने किस तरह के सवाल पूछे जाते हैं, का वर्णन किया है।

व्याख्या–कवि इसमें मीडिया से जुड़े लोगों की मानसिकता पर प्रकाश डालते हुए बताते हैं कि ये लोग स्वयं को समर्थ अर्थात् सब कुछ करने योग्य तथा शक्तिशाली समझते हैं। दूरदर्शन पर अपने कार्यक्रम सामाजिक उद्देश्य से जुड़ा है, इसे लोकप्रिय बनाने के लिए दूरदर्शन के एक बंद कमरे में एक अपाहिज और दुर्बल व्यक्ति को लेकर आयेंगे। दूरदर्शन पर उसकी विकलांगता एवं मजबूरी दिखाने के लिए उससे कई प्रकार के प्रश्न पूछेंगे कि क्या आप अपंग हैं, अपाहिज हैं? तो आप अपाहिज क्यों हैं? आपकी विकलांगता आपको दु:ख-पीड़ा देती है? क्या और कैसे देती है? इस तरह के बेतुके प्रश्न, जो कि मानवीयता की हँसी उड़ाते प्रतीत होते हैं, लेकिन सिर्फ अपने कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने हेतु अपंग व्यक्ति से उसकी अपंगता पर अनेक सवाल कर अपने दिमाग की अपंगता को सिद्ध करते हैं।

विशेष–(1) कवि ने मीडिया की मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया है।
(2) काव्यांश में नाटकीयता है। भाषा सहज-सरल एवं व्यंजना-शब्द शक्ति का प्रयोग है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'अनामिका' की कविता 'बादल राग' के छठे खण्ड से प्रकाशित है। कवि यहाँ बादल का आह्वान क्रांति के रूप में कर रहे हैं। बादल नव जीवन, नव-क्रांति के प्रतीक हैं।

व्याख्या–कवि निराला बादलों को क्रांति के प्रतीक बताते हुए नवजीवन का आह्वान कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हे क्रांतिकारी बादल, तुम वायु रूपी सागर के वक्षस्थल पर, विचरण करने वाले, कभी स्थिर न रहने वाले सुखों पर दु:ख की छाया बनकर मंडराने वाले परिवर्तनकारी बादल हो। निर्दयी विनाशकारी माया के समान जो इच्छाएँ इस संसार में पूरी तरह से प्लावित (फैली) हैं। तेरी युद्ध की नौका मनुष्यों की (उन्हीं) इच्छाओं और आकांक्षाओं से भरी हुई है। तेरे बादलों की गर्जन से पृथ्वी के हृदय में नवजीवन की आशा लिए हुए, अपना सिर ऊँचा कर जागृत अवस्था के सुप्त अंकुर तेरे इन क्रांति लाने वाले बादलों की ओर ताक रहे हैं। कवि का भाव है कि किसान, मजदूर की आकांक्षाएँ बादलों को नव-निर्माण के रूप में पुकार रही हैं। बादल

YouTube channel ak study point 99

जनता के लिए परिवर्तन युग प्रवर्तक के रूप में हैं। उनका बरसना, गरजना नवजीवन की सृष्टि करना है।

विशेष–(1) कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक बताया है। संसार के दुःखी व निराश हृदय को बादलों की मूसलाधार वर्षा शान्ति-सुख प्रदान करती है।

(2) शब्द-बिम्बों का प्रयोग, तत्सम प्रधान ओजस्वी शब्दावली, लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग हुआ है।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत अवतरण डॉ. भीमराव आम्बेडकर द्वारा लिखित 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' लेख से लिया गया है। इसमें लेखक ने जाति प्रथा और व्यक्ति-स्वातन्त्र्य के मध्य अन्तर स्पष्ट किया है।

व्याख्या–डॉ. आम्बेडकर कहते हैं कि जाति-प्रथा को पालने वाले, उसको बढ़ावा देने वाले जीवन, शारीरिक सुरक्षा तथा सम्पत्ति के अधिकार को तो स्वीकार कर लेंगे। लेकिन मनुष्य के लक्षण अर्थात् जातिगत कार्य करने की इच्छा एवं प्रभावशाली प्रयोग करने की अनुमति जाति से बाहर की स्वतंत्रता को स्वीकार करने के लिए जल्दी से तैयार नहीं होंगे। क्योंकि जातिप्रभुत्व सम्पन्न लोग इस बात को भली भाँति जानते हैं कि इस प्रकार की स्वतंत्रता देने का अर्थ होगा व्यवसाय या पेशा चुनने की स्वतंत्रता और जहाँ यह स्वतंत्रता दे दी गई वहाँ 'दासता' का अस्तित्व में खतरे में होगा। इसलिए दासता को पकड़कर रखने के लिए प्रभुत्व सम्पन्न या उच्च जाति के लोग या जाति-प्रथा निर्णायकगण ऐसी प्रयोगशीलता कभी नहीं करना चाहेंगे।

विशेष–(1) लेखक ने अपने सटीक तर्कों द्वारा तथाकथित जाति-प्रथा पोषकों पर व्यंग्य किया है।

(2) व्यंग्य शैली, व्यंजना से पूर्ण भाषा, प्रवाहमयी एवं व्याख्यात्मक है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'भक्तिन' संस्मरण से लिया गया है। इसमें लेखिका 'भक्तिन' के जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाल रही है।

व्याख्या–लेखिका ने बताया कि 'भक्तिन' ने तीन पुत्रियों को जन्म दिया जिससे भक्तिन की सास और जिठानियाँ बहुत चिढ़ती थीं। लेकिन लेखिका या किसी अन्य की दृष्टि में भी सजा देने के नियम में ऐसा कहीं नहीं था कि खोटे सिक्के पैदा करने वाली अर्थात् बेटियों को जन्म देने वाली भक्तिन को पति से अलग किया जाये। सभी के द्वारा भक्तिन के प्रति की गई चुगली का परिणाम पति का उस पर और अधिक प्रेम प्रदर्शन होता। जहाँ उसकी जिठानियाँ बात-बात पर अपने पतियों से मार खाती थीं वहीं भक्तिन को उसके पति ने मारने के नाम पर एक उँगली भी नहीं छुआई थी। क्योंकि वह बड़े बाप की स्वाभिमानी बेटी के स्वभाव को अच्छे से जानता था। भक्तिन परिश्रमी, तेजस्विनी व रोम-रोम से पति को चाहने वाली पत्नी को वह बहुत चाहता था इसीलिए वह पत्नी व बेटियों के साथ माँ एवं भाइयों से अलग होकर रहने लगा था।

विशेष–(1) लेखिका ने भक्तिन के पति के प्रेम स्वभाव को व्यक्त किया है।

(2) तत्सम भाषा के साथ देशज शब्दावली की प्रचुरता है।

(3) 'अँगूठा दिखाना' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

18. पत्रांक–ग्रा. पं. 5/208/20XX दिनांक 12 जून, 20XX

प्रेषक– सचिव,
ग्राम पंचायत,
क ख ग।

सेवा में,
श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय,
जिला क ख ग,
राजस्थान।

विषय–मौसमी बीमारियों के उपचारार्थ चिकित्सकों की नियुक्ति के क्रम में।

महोदय,

प्रतिवर्ष की भाँति गर्मी का मौसम आते ही गाँव में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मौसमी बीमारियों का प्रकोप बढ़ने लगा है। इस वर्ष तो स्थिति कुछ अधिक ही बिगड़ती दिखाई दे रही है। गाँव पंचायत क्षेत्र में एक डिस्पेंसरी है, परन्तु उसमें आवश्यक दवाइयों की नितान्त कमी है और चिकित्सक भी नियुक्त नहीं है। इसलिए मौसमी बीमारियों के प्रकोप को दूर करने तथा रोगियों के उपचार करने के लिए चिकित्सकों की एक टीम गाँव में भेजने की व्यवस्था जरूरी है।

अतः इस सम्बन्ध में चिकित्सकों की टीम की शीघ्र व्यवस्था कर गाँव की जनता के हितार्थ आदेश प्रसारित करें।

भवदीय,
(हस्ताक्षर..........)
सचिव
ग्राम पंचायत, क ख ग

अथवा

अधिसूचना
राजस्थान सरकार,
स्वायत्त शासन विभाग,
शासन सचिवालय, जयपुर।

क्रमांक-196 दिनांक 11 सितम्बर, 20XX

महामहिम राज्यपाल की अनुशंसा के आधार पर राज्य सरकार आदेश क्रमांक 33/12/(द)/स्वच्छता 56, दिनांक 2/10/20XX की अनुपालना में गांधी जयन्ती पर प्रदेश के समस्त नगर निगमों, नगर परिषदों व नगरपालिकाओं द्वारा सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत स्वच्छ नगर-स्वच्छ आवास अभियान चलाया जायेगा। अभियान में जन-सहभागिता महत्त्वपूर्ण रहेगी।

हस्ताक्षर..............
क, ख, ग
उपशासन सचिव

19. **वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : प्रभाव**

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. वर्तमान शिक्षा का स्वरूप 3. वर्तमान शिक्षा प्रणाली का प्रभाव 4. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार के उपाय 5. उपसंहार।

YouTube channel RK study point 99

1. प्रस्तावना–शिक्षा सभ्य जीवन की आधारशिला है। इससे मानव की शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक क्षमता का विकास होता है। शिक्षक या गुरु द्वारा विद्यार्थी को व्यवस्थित रूप से विशेष पद्धति अपनाकर जो शिक्षा दी जाती है, उसे 'शिक्षा पद्धति' अथवा 'शिक्षा प्रणाली' कहते हैं। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य देश के नागरिकों का बौद्धिक विकास कर उनमें सांस्कृतिक एवं नैतिक आदर्शों का समावेश करना तथा उन्हें स्वावलम्बी बनाना रहता है। इसका जीवन के सर्वांगीण विकास में विशेष महत्त्व रहता है।

2. वर्तमान शिक्षा का स्वरूप–यद्यपि प्राचीनकाल में श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति के कारण भारत को 'विश्व गुरु' कहा जाता था और अन्य देशों के शिक्षार्थी यहाँ ज्ञान प्राप्त करने आते थे। परन्तु वर्तमान में हमारी शिक्षा राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप न रहकर मूल्यहीन, विचारहीन तथा आचरणहीन रह गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक कमजोरी के कारण शिक्षा क्रम में एकाएक परिवर्तन करना सरकार के लिए सम्भव न था, फिर भी शिक्षा आयोगों के सुझावों पर समय-समय पर शिक्षा में जो परिवर्तन किये गये, उनसे वर्तमान शिक्षा के स्वरूप का संख्यात्मक विकास अवश्य हुआ है।

3. वर्तमान शिक्षा प्रणाली का प्रभाव–वर्तमान शिक्षा प्रणाली अत्यधिक दूषित है, फिर भी इसमें कुछ गुण विद्यमान हैं। जैसे–

(i) इससे रूढ़ियों और ऊँच-नीच की भावना में कमी आयी है।

(ii) इस शिक्षा प्रणाली से मानसिक विकास हुआ है।

(iii) इससे वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान का प्रसार हुआ है।

(iv) इससे मानवतावादी विचारधारा बढ़ी है।

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में यद्यपि काफी परिवर्तन हो गये हैं, फिर भी यह दूषित है। इसमें दुष्प्रभाव हैं–

(i) वर्तमान शिक्षा प्रणाली व्ययसाध्य और सर्वथा अनुपयोगी है।

(ii) इससे नवयुवकों का मानसिक नैतिक स्तर गिर रहा है।

(iii) इससे कोरा किताबी ज्ञान दिया जा रहा है।

(iv) इससे फैशनपरस्ती एवं अन्धानुकरण बढ़ रहा है।

4. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार के उपाय–वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में सुधार की परम आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में ये उपाय उचित हैं–

(i) पाठ्यक्रम सन्तुलित बनाया जाये।

(ii) माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हो।

(iii) व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया जाये।

(iv) युवकों के सर्वांगीण विकास और नैतिक उत्थान पर ध्यान रखा जाये।

5. उपसंहार–लोकतन्त्रात्मक राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक को अनिवार्य रूप से शिक्षित होना चाहिए, जिससे वह सुनागरिक बनकर अपने कर्तव्यों का पालन करे और राष्ट्रीय चेतना के अनुरूप चलकर समाजोन्नयन का मार्गदर्शक बने। परन्तु यह तभी सम्भव है, जबकि यहाँ प्रचलित शिक्षा-प्रणाली जीवनोपयोगी हो और देश की आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

मॉडल पेपर 9

खण्ड-अ

	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)	(x)	(xi)	(xii)
1.	(अ)	(द)	(स)	(द)	(ब)	(ब)	(स)	(अ)	(अ)	(ब)	(अ)	(ब)

2. (i) Employer (ii) प्रयोग (iii) आधी व्यंजना (iv) व्यंजना (v) ना (vi) राष्ट्रभाषा।

3. (i) युवा पीढ़ी की आत्मा को जगाना और उनमें त्याग, बलिदान, अनुशासन, परिश्रम के साथ आत्मविश्वास की भावना का प्रसार जरूरी है।
   (ii) 'बढ़ावा' शब्द का पर्यायवाची 'विकास' शब्द प्रयुक्त हुआ है।
   (iii) राष्ट्रीय चरित्र के विकास के लिए मनुष्यों में राष्ट्रप्रेम, स्वावलम्बन और अनुशासन का होना आवश्यक है।
   (iv) आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता राष्ट्रीय चरित्र का मूल्यांकन है।
   (v) देश में जीने के लिए तथा आशा युवा पीढ़ी को अनुप्राणित किये बिना, राष्ट्रीय आत्मा को जगाये बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता।
   (vi) शीर्षक–'राष्ट्रीय चरित्र का विकास'।

4. (i) प्रस्तुत काव्यांश में देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों को सजग प्रहरी कहा गया है।
   (ii) सिपाही को केवल मातृभूमि की सीमाओं का ही नहीं, अपितु देश की स्वतन्त्रता, न्याय और शान्ति का भी रक्षक बताया गया है।
   (iii) इसका केन्द्रीय भाव यह है कि देश की रक्षा के लिए सिपाही अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं अतः उनके प्रति देशवासियों को कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।
   (iv) सीमाओं की रक्षा करने वाले सिपाही के साथ देशवासियों की ओजस्वी भावनाएँ, आत्मबल, सभी का तन-मन-धन और शुभकामनाएँ हैं।
   (v) इस काव्यांश में देश की रक्षा के लिए अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए, अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले सैनिक का चित्रण किया गया है।
   (vi) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है—'सैनिक' या 'सच्चा देशभक्त'।

खण्ड-ब

5. खोजपरक पत्रकारिता से आशय ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्य और सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश की जाती है जिन्हें दबाने-छुपाने का प्रयास किया जा रहा हो, आमतौर पर खोजी पत्रकारिता सार्वजनिक मामलों में भ्रष्टाचार मामलों पर स्टिंग ऑपरेशन करती है वह सरकारी क्रियाकलापों पर पैनी नजर रखती है।

6. इस कवित्त में तत्कालीन बेकारी-बेरोजगारी की स्थिति का चित्रण हुआ है; क्योंकि उस समय किसान खेती से, व्यापारी व्यवसाय से, भिखारी भीख और चाकर

YouTube channel RK study point 99

नौकरी न मिलने से परेशान थे। गरीबी रूपी रावण से सारा समाज व्यथित, दुःखी और पीड़ित था।

7. भक्तिन हर दशा में अपनी मालकिन की सेवा करने के लिए उसके साथ रहना चाहती थी। वह लेखिका के साथ कारागार में जाने और अन्याय के खिलाफ बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार थी। एक प्रकार से वह अपने जीवनान्त तक लेखिका का साथ निभाना चाहती थी। उसके ऐसे आचरण एवं सेवा-भाव को देखकर लेखिका ने कहा कि उसको कहने का पूरा उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

8. जब लेखक से कोई कविता बन जाती तो लेखक उसमें संशोधन हेतु शिक्षक के पास ले जाते थे। उसे देखते ही शिक्षक उन्हें शाबाशी देते थे। कविता शास्त्र पर लेखक को पूरा व्याख्यान देते हुए उसमें प्रयोग होने वाले भावों, भाषा शैली तथा रस, अलंकार, छन्द आदि का बोध कराते थे। वे उन्हें अलग-अलग प्रकार के संग्रह देते थे।

9. बड़ी बस्ती में पुरातत्त्वशास्त्री काशीनाथ दीक्षित के नाम एक हलका 'डीके-जी' कहलाता है। इसके घरों की दीवारें ऊँची और मोटी हैं। सभी घर पक्की ईंटों हैं। पहली मंजिल पर केवल प्रवेश द्वार है। खिड़कियाँ शायद दूसरी मंजिल पर रहती हों। घर छोटे-बड़े भी हैं किन्तु एक कतार में हैं। बस्ती में एक मुखिया का घर भी है। इसमें दो आँगन (चौक) और करीब बीस कमरे हैं।

खण्ड-स

10. यह कविता प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर भावबिम्बों को प्रस्तुत करने वाली कविता है। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बना कर उड़ते श्वेत बगुलों को देखता है। उस दृश्य को देख कर प्रतीत होता है मानो काजल लगे बादलों के मध्य संध्या की सफेद काया तैर रही हो। शाम का श्वेत व लाल वर्ण, जो कि सूर्य की लालिमा से युक्त होता है वह आकाश में सफेद बगुलों का साम्य करती-सी प्रतीत हो रही है। इस दृश्य से बँधी कवि की आँखें निरन्तर टकटकी लगाकर उनका पीछा कर रही हैं। अर्थात् इतना मनोरम दृश्य है जिससे आँखें हटने का नाम ही नहीं ले रही हैं।

अथवा

महाकवि तुलसीदास ने भक्ति-भावना के कारण भले ही यह कह दिया कि प्रभु श्रीराम विलाप करते समय नर-लीला कर रहे थे। परन्तु प्रिय भ्राता लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर अनिष्ट की आशंका से श्रीराम ने जो विलाप किया, उसका चित्रण तुलसी ने सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में किया क्योंकि सच्ची अनुभूति द्वारा ही मार्मिक एवं करुणाजनक चित्र प्रस्तुत हो सकता है। अतः हम इस बात से सहमत हैं।

11. जातिप्रथा के अंतर्गत व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का कोई स्थान या महत्त्व नहीं रहता है। बहुत-से लोग 'निर्धारित' कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति में हीनभावना से ग्रस्त होकर टालू काम करने तथा कम काम करने की प्रवृत्ति बनी रहती है। आज के उद्योग-धंधों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं है जितनी जातिप्रथा द्वारा जबरन थोपे गए कार्यों को करने की विवशता है। अतः जातिप्रथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि एवं आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

अथवा

बाजार का कार्य है—वस्तुओं का विक्रय करना। बाजार को अपनी वस्तुओं को बेचने को ग्राहक की जरूरत है। उसे किसी के लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र से कोई मतलब नहीं है। उसे सिर्फ क्रय-शक्ति को देखना है। इस मत से देखा जाये तो लेखक का कथन सत्य है कि बाजार का यह व्यवहार सामाजिक समता की रचना करता है। लेकिन इसमें भी क्रेता की सम दृष्टि साबित होती है, विक्रेता की नहीं। क्योंकि क्रय-शक्ति से हीन व्यक्ति स्वयं को औरों के समक्ष कमजोर व दुर्बल समझता है। हीनता की भावना उसकी गरीबी का मजाक उड़ाती-सी प्रतीत होती है।

12. एक अच्छे गुरु की विशेषता होती है कि वे छात्र की रुचि एवं प्रयास को देखकर उसे प्रोत्साहित करते हैं एवं कुछ नया करने का अवसर प्रदान करते हैं। जिस प्रकार लेखक द्वारा की गई तुकबन्दी से गुरुजी ने सराहना करते हुए और अच्छा करने की प्रेरणा दी।

'जूझ' पाठ में मास्टरजी सौंदलगेकर के साथ रहने से लेखक का न सिर्फ कविता लिखने की ओर रुझान बढ़ा बल्कि वह एक अच्छा कवि बन गया। मास्टरजी सौंदलगेकर के प्रभावी व्यक्तित्व, मार्गदर्शन, सहयोग तथा उनके पढ़ाने की अद्‌भुत शैली से प्रभावित होकर लेखक को नई दिशा मिली।

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' पाठ में लेखक बताता है कि मुअनजो-दड़ो में स्तूप से पश्चिम में गढ़ी के ठीक पीछे माधोस्वरूप वत्स ने खुदाई करवायी थी। वहाँ एक ऐसा भवन मिला है जिसकी जमीन में ईंटों के गोल गड्ढे उभरे हुए हैं। इस संबंध में पुरातत्त्ववेत्ताओं का कहना है कि इनमें रंगाई में काम आने वाले बर्तन रखे जाते होंगे। इस कारखाने में सोलह छोटे-छोटे मकान बने हुए हैं। एक कतार मुख्य सड़क पर है। ऐसा अनुमान है कि ये कारखाने के कर्मचारियों या कामगारों के घर रहे होंगे। अवश्य ही वे रंगरेजों के मकान रहे होंगे।

13. यह बात सत्य है कि यशोधर बाबू किशनदा के मानस पुत्र हैं, क्योंकि वे हर छोटी-छोटी बात में किशनदा का अनुकरण करते हैं। उनको ही अपना आदर्श मानते हैं। किशनदा की तरह ही उनका हाथ मिलाकर हँसना, प्रशंसा पाकर झेंपना, ऑफिस से चलते-चलते जूनियरों से कोई मनोरंजक बात कह कर दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करना आदि सभी बातों पर उनकी ही छाप है। इसके साथ ही उन्हें घर में धार्मिक कार्यक्रम करवाना ये सब आदतें किशनदा ने ही उनमें लगाई हैं। इन सब बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू किशनदा के मानस-पुत्र हैं।

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' अध्याय में सिंधु घाटी सभ्यता के ऐतिहासिक नगर मुअनजो-दड़ो के अवशेषों का वर्णन यात्रा-वृत्त के रूप में किया गया है। इसके बारे में धारणा है कि वह अपने दौर में घाटी की सभ्यता का केन्द्र रहा होगा। इसके संबंध में माना जाता है कि यह नगर दो सौ हैक्टेयर में फैला था और इसकी आबादी कोई पचास हजार थी। इसका उद्देश्य एक ओर सिंधु सभ्यता का महत्त्व बताना तथा ऐतिहासिक नगर सभ्यता के सुनियोजित विकास तथा प्राचीन सभ्यता का परिचय देना है तो दूसरी ओर उस समय की समाज-व्यवस्था का महत्त्व बताना भी है।

YouTube channel RK study point 99

14. तेल की धार से बढ़ती महँगाई की मार

भारत में आम आदमी पर महँगाई की जो मार पड़ रही है, उसमें पेट्रोल और डीजल के दामों में बार-बार बढ़ोतरी का प्रमुख हाथ है। तेल की धार को लेकर भारत ही नहीं, सारे विश्व में अशान्ति व्याप्त है। हमारे देश में पहले तेल की कीमतें सरकार तय करती थी, परन्तु अब तेल-कम्पनियाँ स्वयं तय करती हैं और पेट्रोलियम पदार्थों पर आयात-मूल्य के अनुसार उन्हें कीमतें बढ़ाने का अधिकार दिया गया है। पिछले साल इस नीति के कारण लगभग तीस प्रतिशत मूल्य-वृद्धि हुई है। पेट्रोल-डीजल की इस मूल्य-वृद्धि का असर आम जनता पर पड़ रहा है। इसी वजह से ट्रांसपोर्टर्स ने भाड़ा बढ़ा दिया है। प्रतिदिन वस्तुओं के दामों में इजाफा होना देशवासियों के लिए भीषण समस्या है। इस बढ़ती महँगाई की मार आम-आदमी को झेलनी ही पड़ती है। फलस्वरूप उसे महँगाई डायन खाये जा रही है। सरकार को तेल की कीमतों को घटाने के उपाय करना चाहिए ताकि महँगाई नियंत्रण में रहे।

अथवा

देश का विकास गाँवों पर निर्भर

भारत कृषि-प्रधान और गाँवों का देश है। यहाँ की सत्तर प्रतिशत आबादी गाँवों में बसती है। गाँवों के विकास के लिए लगभग ढाई लाख ग्राम पंचायतें गठित हैं, परन्तु विकास के लिए स्वीकृत धन न तो समय पर उपलब्ध होता है और न पूरा मिलता है। इससे गाँवों की योजनाएँ कभी पूरी नहीं हो पाती हैं। फलस्वरूप गाँवों से पलायन हो रहा है और शहर बढ़ रहे हैं। गाँव ही प्राथमिक उत्पादों के केन्द्र हैं तथा इन्हीं पर देश की अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। गाँवों का स्थायी विकास होने से देश का विकास हो सकता है। इसलिए गाँवों के विकास एवं कल्याण पर विशेष ध्यान रहे, इसके लिए पंचायतों एवं ग्रामीण विकास विभाग की सक्रियता नितान्त अपेक्षित है। गाँव में विकास की दृष्टि से शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए। किसानों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए सरकार अधिक से अधिक छोटे व कुटीर उद्योगों की स्थापना करे जिससे किसानों की स्थिति में कुछ सुधार हो सके।

15. गुजराती कविता के जाने-माने कवि उमाशंकर जोशी का जन्म सन् 1911 में गुजरात में हुआ था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा तथा आम जिन्दगी के अनुभव से परिचय करवाया। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए। इनकी काव्य-कृतियाँ—विश्व शांति, गंगोत्री निशिथ, प्राचीना, आतिथ्य, वसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा (एकांकी); सापनाभारा, शहीद (कहानी); श्रावणी मेणो विसामो (उपन्यास) तथा 'संस्कृति' पत्रिका का सम्पादन भी किया। साहित्य को नयी भंगिमा व स्वर देने वाले उमाशंकर का निधन सन् 1988 में हुआ।

अथवा

महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में 1907 ई. में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर के मिशन स्कूल में हुई थी। नौ वर्ष की उम्र में इनका विवाह हो गया पर इनका अध्ययन चलता रहा। 1929 में बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहती थी परन्तु महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आने के बाद समाज सेवा की ओर उन्मुख हो गईं। इनका कार्यक्षेत्र बहुमुखी रहा। इनकी रचनाएँ—नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा (काव्य संग्रह); अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण); शृंखला की कड़ियाँ, आपदा, भारतीय संस्कृति के स्वर (निबन्ध) आदि। पद्म विभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कारों से सम्मानित लेखिका की मृत्यु 1987 ई. में हुई। इनकी कविताओं में निजी वेदना व पीड़ा समाहित है। इनके गद्य में सामाजिक सरोकारों का चिंतन है।

खण्ड-द

16. **प्रसंग**—प्रस्तुत काव्यांश कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'लोग भूल गए हैं' की कविता 'कैमरे में बन्द अपाहिज' से लिया गया है। कवि ने मीडिया पर व्यंग्य किया है कि अपने कार्यक्रम को सफल एवं लोकप्रिय बनाने हेतु वे किस प्रकार अपाहिज व दर्शक दोनों को रुलाना चाहते हैं।

व्याख्या—दूरदर्शन कार्यक्रम-संचालक का यह प्रयास रहता है कि उसके बेहूदे प्रश्नों से अपाहिज रोवे और वह उससे सम्बन्धित दृश्य का प्रसारण करे। इसलिए वह अपाहिज की सूजी हुई आँखें बहुत बड़ी करके दिखाता है। इस प्रकार वह उसके दु:ख-दर्द को बहुत बड़ा करके दिखाना चाहता है। वह अपाहिज के होंठों की बेचैनी एवं लाचारी भी दिखाता है। संचालक कार्यक्रम को रोचक बनाने के प्रयास में सोचता है कि अपाहिज की बेचैनी को देखकर दर्शकों को उसकी अनुभूति हो जायेगी। इसलिए वह कोशिश करता है कि अपाहिज के दु:ख-दर्द को इस तरह दिखाये कि उससे अपाहिज के साथ दर्शक भी रोने लगें। उस समय दर्शक केवल उस अपाहिज को देखें और धैर्यपूर्वक उसके दर्द को आत्मसात् कर सकें।

विशेष—(1) कवि ने मीडिया की व्यापार-वृत्ति पर व्यंग्य किया है कि किस प्रकार वे उसकी विकलांगता एवं दर्शकों की सहानुभति को भुनाते हैं।

(2) भाषा सरल-सहज है, व्यंग्यात्मक पूर्ण भाषा एवं प्रवाहमयता है।

अथवा

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश कवि शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' से लिया गया है। सूर्योदय से पहले पल-पल बदलता प्रकृति का सुन्दर रूप वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवि सूर्योदय से पहले आकाश में पल-पल परिवर्तित होते हुए सुरम्य वातावरण का चित्रण करते हुए बताता है कि भोर का दृश्य कुछ काले और लाल रंग के मिश्रण से अतीव मनोरम लगने लगा। तब कुछ क्षणों के बाद ऐसा लगने लगा कि आकाश काली सिल हो और उसे अभी-अभी केसर से धो दिया हो अथवा काली-नीली स्लेट पर लाल रंग की खड़िया चाक मल दी हो। प्रात: जब नीले वर्ण के आकाश में सूर्य की चमकती हुई श्वेत आभा दिखाई देने लगती है, तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी सुन्दरी की गोरी देह झिलमिल कर रही हो, अर्थात् प्रात:कालीन नमी एवं मन्द हवा के कारण सूर्य की किरणें हिलती हुई नायिका के समान लगती हैं, सूर्य का श्वेत बिम्ब भी हिलता-सा प्रतीत होता है। कुछ क्षण बाद जब सूर्य उदित होता है, तब उषा काल के पल-पल बदलते रंगों का अथवा प्राकृतिक परिवेश का चमत्कारी सौन्दर्य समाप्त हो जाता है, अर्थात् सूर्योदय होते ही उषा काल का रंगीन सुरम्य वातावरण चमत्कारी जादू की तरह समाप्त हो जाता है और चारों तरफ सूर्य का तेज प्रकाश फैल जाता है।

youtube channel RK study point 99

विशेष–(1) [illegible] के दौरान [illegible] की [illegible] का सुन्दर वर्णन किया है।

(2) भाषा [illegible] सरल व सुबोध है। [illegible] अलंकार का प्रयोग हुआ है।

17. **प्रसंग**–प्रस्तुत [illegible] 'बाजार दर्शन' से लिया गया है। इसमें लेखक ने [illegible] पर व्यंग्य किया है जो [illegible] बाजार में [illegible] को बढ़ावा देते हैं और [illegible] को नष्ट करते हैं।

व्याख्या–लेखक कहते हैं कि बाजार की [illegible] [illegible] नहीं [illegible] है जो यह जानता है कि वह क्या चाहता है। [illegible] [illegible] पैसे का [illegible] है। [illegible] [illegible] पैसे की [illegible] [illegible] बाजार का [illegible] है। [illegible] बाजार में [illegible] की प्रवृत्ति [illegible] इसका परिणाम यह होता है कि [illegible] बाजार में [illegible] अर्थात् [illegible] बढ़ाते हैं। [illegible] [illegible] [illegible] है। इस प्रकार [illegible] का [illegible] है [illegible] अर्थात् [illegible] की [illegible] इससे [illegible] की संस्कृति का ह्रास होता है और इसका प्रभाव [illegible] बाजार में [illegible] पैसे की [illegible] का दिखावा की है।

विशेष–(1) लेखक ने [illegible] के [illegible] प्रयोग के [illegible] पर प्रकाश डाला है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग एवं [illegible] शैली का प्रयोग हुआ है।

अथवा

प्रसंग–प्रस्तुत [illegible] [illegible] 'शिरीष का फूल' निबन्ध से लिया गया है। इसमें लेखक ने [illegible] के [illegible] उन नेताओं पर व्यंग्य किया है जो [illegible] [illegible] नहीं [illegible] हैं।

व्याख्या–लेखक बताते हैं कि शिरीष के [illegible] [illegible] और [illegible] को देखकर बाद में आने वाले [illegible] [illegible] [illegible] शिरीष का [illegible] कोमल है, [illegible] [illegible] [illegible] फल इतने मजबूत होते हैं कि [illegible] [illegible] अपना स्थान नहीं छोड़ते। जब तक [illegible] [illegible] [illegible] नहीं कर देते हैं तब तक वे [illegible] [illegible] [illegible] अपना स्थान नहीं छोड़ते। [illegible] [illegible] [illegible] रहते हैं। [illegible] शिरीष के पुराने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लेने का नाम नहीं लेते हैं। लेखक कहते हैं कि इन शिरीष के [illegible] को देखकर उन नेताओं की याद आती है जो अपनी [illegible] [illegible] में आकर [illegible] नहीं [illegible] हैं। जब तक नए [illegible] [illegible] [illegible] नहीं हटाते हैं तब तक वे वहीं जमे रहते हैं।

विशेष–(1) लेखक ने शिरीष के पुराने [illegible] के माध्यम से पुराने नेताओं के [illegible] पर व्यंग्य किया है।

(2) भाषा [illegible] एवं [illegible] है।

18. **प्रपत्र**

क्रमांक–[illegible] 2XXX दिनांक [illegible] 2XXX

श्रीमान् [illegible]

[illegible]

विषय–[illegible] [illegible] के [illegible] के सम्बन्ध में।

महोदय,

[illegible] है कि [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपने [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया गया है। [illegible] अपने [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रस्तुत कर दिया है।

[illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] के अवसर पर [illegible] [illegible] का [illegible] की कार्यवाही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] जाये।

भवदीय,

हस्ताक्षर ....

[illegible] सिंह [illegible]

अध्यक्ष

[illegible] विकास समिति,

[illegible], [illegible]

अथवा

कार्यालय, जिला निर्वाचन अधिकारी, अजमेर

अधिसूचना

क्रमांक : [illegible]/2XXX दिनांक 20 जनवरी, 2XXX

[illegible] का [illegible] सामान्य निर्वाचन, 2XXX के [illegible] सूचित किया जाता है कि [illegible] निर्वाचन आयोग, राजस्थान के [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] में [illegible] करने हेतु दिनांक 23-24 जनवरी 2XXX को [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] करें और यदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] नाम दर्ज करावें।

अधिक जानकारी के लिए जिला निर्वाचन कार्यालय में स्थापित टोल फ्री नम्बर 1950, 1800804012 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

हस्ताक्षर..................

जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी, अजमेर

19. बेरोजगारी की समस्या : कारण और निराकरण के उपाय

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. बेरोजगारी : एक जटिल समस्या 3. बेरोजगारी के कारण 4. समस्या के समाधान के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–वर्षों तक पराधीनता का कष्ट झेलकर जब भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, तो तब अनेक समस्याएँ सामने आयीं। प्रारम्भ में शरणार्थी समस्या, औद्योगिक विकास की समस्या और रियासतों के एकीकरण की समस्या प्रधान थी। लेकिन अप्रत्याशित जनसंख्या-वृद्धि होने से बेरोजगारी की समस्या इतनी व्यापक रूप से उभरी कि इसका समाधान अभी तक नहीं हो पाया है। वर्तमान में नगरों में शिक्षितों तथा ग्रामों में अशिक्षितों की बेकारी का भयंकर रूप देखा जा सकता है।

2. बेरोजगारी : एक जटिल समस्या–बेरोजगारी की समस्या व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को भयंकर रूप से प्रभावित कर रही है। देश के नवयुवक निराश होते जा रहे हैं। सामाजिक जीवन में रहन-सहन के स्तर में गिरावट होती जा रही है, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, रिश्वतखोरी और दुराचार को प्रोत्साहन मिल रहा है, बेरोजगारी से युवा वर्ग में भयंकर असन्तोष पनप रहा है, जिससे देश में आन्दोलन की प्रवृत्तियों, अशान्ति और अराजकता का प्रसार होता जा रहा है।

3. बेरोजगारी के कारण–इस समस्या के समाधान के लिए इसके कारणों और निराकरण के उपायों पर विचार करना सार्थक सिद्ध हो सकता है। इस समस्या के मुख्यतया ये कारण हैं–जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि, गलत आरक्षण नीति, रोजगारोन्मुख शिक्षा का अभाव आदि। इसके अलावा लघु-कुटीर उद्योगों का ह्रास तथा मशीनीकरण का अत्यधिक प्रसार भी बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण है।

4. समस्या के समाधान के उपाय–बेरोजगारी की इस भयानक समस्या के समाधान हेतु उक्त कारणों का निवारण करना जरूरी है। इस दिशा में हमारा सर्वप्रथम कार्य बढ़ती हुई जनसंख्या को नियन्त्रित करना व रोकना होगा। परिवार नियोजन और विवाह की आयु सीमा में वृद्धि कर हम इस समस्या का कुछ निराकरण करने में सफल हो सकते हैं। लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करना होगा। कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी प्रयत्न करना होगा। मशीनीकरण के विकास को तीव्र गति से प्रसारित करना होगा। शिक्षा प्रणाली में भी क्रान्तिकारी परिवर्तनों के द्वारा उसे व्यवसायोन्मुखी बनाकर स्वावलम्बन तथा स्वरोजगार का प्रसार करना जरूरी है। देश में ऐसे आर्थिक कार्यक्रम लागू किये जायें, जिनमें अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध हो सकें।

5. उपसंहार–इस प्रकार इस समस्या के समाधान के लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी सभी स्तरों पर प्रयत्न किये जाने की आवश्यकता है। इस समस्या के समाधान के लिए जनता का सहयोग सबसे अधिक वांछनीय है। इसे राष्ट्रव्यापी समस्या मानकर दृढ़ संकल्प से सभी बेरोजगारी मिटाने में जुट जाएँ, तो कोई शक्ति इसमें बाधक नहीं हो सकती।

YouTube channel RK study point 09